विक्रम संवत् 2080 ■ ज्येष्ठ/आषाढ़ मास(04) ■ 01जून 2023 ■ मूल्य : 23 रु.

आर.एन.आई. पंजीयन क्र.017261/69, डाक पंजीयन क्र. म.प्र./भोपाल/297/2021-23, पृष्ठ संख्या-44, प्रकाशन दिनांक प्रत्येक माह की 10 तारीख, पोस्टिंग प्रत्येक माह की 10 एवं 15 तारीख

चैतेति

यावद् भागीरथी गंगा
यावद् देवो महेश्वरः।
यावद् वेदाः प्रवर्तन्ते
तावत्वं विजयी भव।।

प्रधानमंत्री श्री नरेन्द्र मोदी जी ने जापान के हिरोशिमा में महात्मा गांधी जी की प्रतिमा का अनावरण किया।

प्रधानमंत्री श्री नरेन्द्र मोदी जी ने वीर सावरकर जी की जयंती पर उन्हें श्रद्धांजलि अर्पित की।

प्रधानमंत्री श्री नरेन्द्र मोदी जी ने नाथद्वारा में श्रीनाथजी मंदिर में पूजा-अर्चना की।

प्रधानमंत्री श्री नरेन्द्र मोदी जी ने नए संसद भवन में सेंगोल स्थापित किया।

भाजपा अध्यक्ष श्री जे.पी. नड्डा जी ने मुंबई में वीर सावरकर जी के आवास पर उन्हें श्रद्धा सुमन अर्पित किये।

प्रधानमंत्री श्री नरेन्द्र मोदी जी ने आदीनम् के संतों से आशीर्वाद लिया।

प्रधानमंत्री श्री नरेन्द्र मोदी जी ने नए संसद भवन निर्माण में श्रमजीवियों के महान योगदान के लिए उन्हें सम्मानित किया।

भाजपा अध्यक्ष श्री जे.पी. नड्डा जी ने मुंबई के श्री सिद्धिविनायक मंदिर में पूजा-अर्चना की।

अनुक्रमणिका

संपादकीय ▶ संजय गोविन्द खोचे 04

■ देश में नवनिर्माण का नया दौर

मोदी सरकार के 9 साल 05

■ 9 साल सेवा, सुशासन और गरीब कल्याण के: पीएम मोदी

11

20

■ **आलेख :** 09
मोदी युग: राष्ट्रीय नवाचार के नौ साल...

■ **मोदी सरकार के 9 साल :** 11
आज पूरा एक रूपया गरीब के खाते में पहुंच रहा है : विष्णुदत्त शर्मा...

■ **कार्यसमिति बैठक :** 13
कार्यकर्ता जनता को भाजपा के विकास की कहानी बतायें: विष्णुदत्त शर्मा...

■ **किसान-कल्याण :** 17
किसान-कल्याण के कार्य हो रहे हैं-मुख्यमंत्री...

■ **तीर्थ-यात्रा :** 19
बुजुर्गों को अब विमान से तीर्थ-यात्रा: मुख्यमंत्री...

■ **सपनों का प्रतिबिंब :** 20
नया संसद भवन भारतवासियों की आकांक्षाओं और सपनों का प्रतिबिंब...

■ **नया संसद भवन :** 23
संस्कृति और परंपरा को आधुनिकता से जोड़ेगा नया संसद भवन - विष्णुदत्त शर्मा

■ **मोदी सरकार के 9 साल :** 24
विधि प्रकोष्ठ जनता के बीच भाजपा सरकार के पक्ष को प्रस्तुत करे - विष्णुदत्त शर्मा

■ **संगठनात्मक गतिविधियां :** 25
भाजपा विश्व पटल पर भारत को सिरमौर बनाने के लिए कार्य कर रही है...

■ **आलेख :** 26
भारत की वैश्विक भूमिका के नायक बने मोदी...

■ **कमल मित्र :** 28
एक लाख कमल मित्र बनाने का लक्ष्य...

■ **कविता : अटल बिहारी वाजपेयी** 30
अमर आग है...

■ **मन की बात :** 31
'मन की बात' ने सबको एक सूत्र में बाँधा...

■ **बढ़ते कदम :** 36
खादी नित नये रिकॉर्ड बना रही है: प्रधानमंत्री

■ **बलिदान दिवस :** 37
रानी लक्ष्मीबाई
रानी दुर्गावती
बिरसा मुंडा : वनवासियों के महानायक

■ **विचार प्रवाह :** 40
समाज और विचारधारा

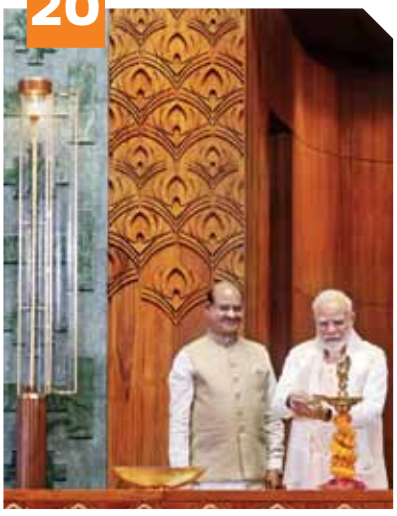

■ मुख्य व्रत-त्यौहार

1. प्रदोष व्रत 3. द. वट सावित्री, पूर्णिमा व्रत 4. स्नानदान पूर्णिमा 7. गणेश चतुर्थी व्रत 11. शीतलाष्टमी, बसोरा 14. योगिनी एकादशी व्रत 15. प्रदोष व्रत 16. शिव चतुर्दशी व्रत 17. श्राद्ध अमावस्या 18. हलहारिणी, स्नान दान अमावस 19. चन्द्रदर्शन, गुप्त नवरात्रारम्भ 20. भ. जगदीश रथयात्रा 22. विनायकी चतुर्थी व्रत 25. वैवस्वत पूजा 27. भड़ली नवमी, नवरात्रा समा. 28. आशा दशमी 29. देवशयनी/हरिशयनी ग्यारस 30. वासुदेव, वामन द्वादशी

■ मुख्य जयंती-दिवस

1. अंतर्राष्ट्रीय बाल सुरक्षा दिवस 5. अंतर्राष्ट्रीय पर्यावरण दिवस 14. अंतर्राष्ट्रीय रक्तदान दिवस 16. सिंधु सम्राट म. दाहरसिंह श. दि., संत नामदेव पुण्यतिथि 18. झाँसी रानी लक्ष्मीबाई बलि. दिवस 21. अंतर्राष्ट्रीय योग एवं संगीत दिवस 24. रानी दुर्गावती बलिदान दिवस 26. विश्व नशा निरोधक दिवस 27. मधुमेह (डायबिटीज) जागृति दि. 29. विठ्ठलवारी महोत्सव

वर्ष-55, अंक : 04, भोपाल, जून 2023

हमारे प्रेरणास्रोत

पं. दीनदयाल उपाध्याय

ध्येय बोध

ये जरूरी है कि हम हमारी राष्ट्रीय पहचान के बारे में सोचे जिसके बिना स्वतंत्रता का कोई अर्थ नहीं है।

- पं. दीनदयाल उपाध्याय

अध्यक्ष
अजय प्रताप सिंह

उपाध्यक्ष
प्रशांत हर्णे

सचिव, मुद्रक, प्रकाशक एवं सम्पादक
संजय गोविंद खोचे*

कोषाध्यक्ष
कैलाश सोनी

प्रभारी वैचारिकी
डॉ. दीपक विजयवर्गीय

सहायक सम्पादक
पं. सलिल मालवीय

व्यवस्थापक
योगेन्द्रनाथ बरतरिया
मोबा. नं. 09425303801

पं. दीनदयाल विचार प्रकाशन म.प्र. के लिये मुद्रक एवं प्रकाशक संजय गोविंद खोचे द्वारा पं. दीनदयाल परिसर, ई-2, अरेरा कालोनी, भोपाल-462016 से प्रकाशित एवं एम. पी. प्रिंटर्स, बी-220, फेस-II, गौतमबुद्ध नगर, नोएडा - 201 305 से मुद्रित.

संपादकीय पता
पं. दीनदयाल परिसर,
ई-2, अरेरा कालोनी, भोपाल- 462016
e-mail:charevetibpl@gmail.com
web site:www.charaiveti.org

मूल्य- तेईस रुपये
*समाचार चयन के लिए पी.आर.बी.एक्ट के तहत जिम्मेदार

देश में नवनिर्माण का नया दौर

2014 के बाद प्रधानमंत्री श्री नरेन्द्र मोदी जी के नेतृत्व में भाजपा की केन्द्र की सरकार ने इस कमीशनखोरी और लूट के मार्ग को जनधन खाते, आधार और मोबाइल के सहयोग से डिजिटल करके बन्द कर दिया है। उसी का परिणाम है कि आज कमीशन खोर और भ्रष्टाचारी नेपथ्य में हैं।

प्रधानमंत्री श्री नरेन्द्र मोदी जी के नेतृत्व में देश ने सुशासन के नौ गरिमामय वर्ष पूरे कर लिए हैं। यह अत्यंत गौरव का विषय है। प्रधानमंत्री श्री नरेन्द्र मोदी जी के नेतृत्व में केन्द्र में चल रही भारतीय जनता पार्टी की सरकार ने देश में नवनिर्माण का नया दौर तेजी से शुरू कर दिया है। 2014 में जब प्रधानमंत्री श्री नरेन्द्र मोदी जी के नेतृत्व में एनडीए सरकार ने शपथ ली थी तब देशवासियों के मन में नए भारत के निर्माण को लेकर अपार उत्साह था। जो आज फलीभूत होता दिख रहा है। वरना 2014 के पहले देश में अजीब सा वातावरण बना हुआ था। भ्रष्टाचार, भाई-भतीजावाद, आतंकवाद, माता बहनों के खिलाफ अपराध और भी न जाने कई सारी अनियमितताऐं चरम पर थीं। देशवासी हताशा के दौर से गुजर रहे थे, उसी समय 2014 में एक शांत हवा के झोंके के रूप में नई आशा लेकर प्रधानमंत्री श्री नरेन्द्र मोदी जी ने भारत के प्रधानमंत्री के रूप में शपथ ली। तब उन्होंने देशवासियों को आश्वस्त किया और करके दिखाया कि देश ''सबका साथ, सबका विकास'' करके बतायेंगे, और ऐसा हुआ भी ।

धीरे-धीरे विकास की गति प्रधानमंत्री श्री नरेन्द्र मोदी जी के नेतृत्व में बढ़ती चली गई और पूरा देश ''सबका साथ-सबका विकास-सबका विश्वास और सबका प्रयास'' के नारे के साथ जुट गया। जिसका परिणाम है कि प्रधानमंत्री श्री नरेन्द्र मोदी जी के नेतृत्व में भारत की साख और धाक सारे विश्व में साफ-साफ दिख रही है। प्रधानमंत्री श्री नरेन्द्र मोदी जी के नेतृत्व में विगत नौ वर्षों में कई ऐतिहासिक और गर्व से भर देने वाले कार्य हुए हैं। देश में पहली बार पीएम किसान सम्मान निधि जैसी योजना शुरू हुई। पहली बार यूरिया की कालाबाजारी रूकी। किसानों के लिए प्रधानमंत्री श्री नरेन्द्र मोदी जी के नेतृत्व में पिछले नौ वर्षों में अनेकों कार्य हुए हैं। प्रधानमंत्री श्री नरेन्द्र मोदी जी के प्रयासों से ही संयुक्त राष्ट्र संघ ने वर्ष 2023 को मोटे अनाज (श्री अन्न) का अन्तर्राष्ट्रीय वर्ष घोषित किया। निश्चित रूप से इसका फायदा भारत के किसानों को हुआ।

आज भारत में प्रधानमंत्री श्री नरेन्द्र मोदी जी के नेतृत्व में विकास के बड़े-बड़े काम लगातार बिना पैसे की कमी के हो रहे हैं। यह काम पहले भी काँग्रेस की सरकार के समय में हो सकते थे, पर तब कमीशन खोरी का राज था, काँग्रेस के पूर्व प्रधानमंत्री ने इसे सार्वजनिक रूप से स्वीकारा था कि केन्द्र से भेजी गई 100 प्रतिशत की राशि का 85 प्रतिशत भाग काँग्रेस के जमाने में कमीशन खोरी में,भ्रष्टाचार में चला जाता था। 2014 के बाद प्रधानमंत्री श्री नरेन्द्र मोदी जी के नेतृत्व में भाजपा की केन्द्र की सरकार ने इस कमीशनखोरी और लूट के मार्ग को जनधन खाते, आधार और मोबाइल के सहयोग से डिजिटल करके बन्द कर दिया है। उसी का परिणाम है कि आज कमीशन खोर और भ्रष्टाचारी नेपथ्य में हैं। कश्मीर से धारा 370 हट चुकी है। श्री राम मंदिर के निर्माण का कार्य जोर-शोर से हो रहा है। उम्मीद है कि आगामी जनवरी से देशवासी अपने आराध्य भगवान श्री राम लला के दर्शन अयोध्या में भव्य मंदिर मे करना शुरू कर देंगे।

28 मई 2023 को आजादी के अमृत महोत्सव में देश को नए संसद भवन का उपहार मिला। प्रधानमंत्री श्री नरेन्द्र मोदी जी के नेतृत्व में यह ऐतिहासिक कार्य सम्पन्न हुआ। इस ऐतिहासिक अवसर पर संसद के नए भवन में पवित्र सेंगोल की स्थापना हुई। महान चोल साम्राज्य में सेंगोल को सेवापथ का,कर्तव्य पथ का, राष्ट्र पथ का प्रतीक माना जाता था। हमारी संसद राष्ट्र की धरोहर है। संसद लोकतंत्र का जीवंत प्रतीक है। संसद के उद्घाटन के समय जिस तरीके की राजनीति विपक्ष के कुछ दलों ने की उसकी जितनी निन्दा की जाये वो कम है। देश की जनता के मन में भारत के प्रधानमंत्री श्री नरेन्द्र मोदी जी का कद आज निश्चित रूप से समकालीन विपक्ष के नेताओं से बहुत ज्यादा बड़ा है। जिससे विपक्षी नेताओं में बौखलाहट है। पर यह ठीक नहीं है कि विपक्षी अपनी निराशा संवैधानिक कार्यों में दिखाऐं। विपक्ष को समझना चाहिए कि वे प्रधानमंत्री श्री नरेन्द्र मोदी जी का विरोध करते करते देश का विरोध न करें। जीवंत लोकतंत्र के लिए यह आवश्यक है।

प्रधानमंत्री श्री नरेन्द्र मोदी जी के नेतृत्व में बना यह संसद भवन भारत की सांस्कृतिक विरासत को भी दर्शाता है। आज का भारत प्राचीनकाल की गौरवशाली धारा को फिर अपनी तरफ मोड़ रहा है। संसद का नया भवन इसका सशक्त उदाहरण है। नए संसद भवन का वास्तु और कला अद्भुत है। नए संसद भवन में भारत की संस्कृति और संविधान के स्वर मिले हुए हैं। मध्य प्रदेश अपने नेतृत्व के मार्गदर्शन में आगामी विधानसभा चुनाव में एक नया जीत का इतिहास रचने जा रहा है। कार्य समिति की बैठक में आगामी चुनाव को लेकर रणनीतियां तैयार की गयीं। भारतीय जनता पार्टी का नेतृत्व देश व प्रदेश में आदर्श है। मध्य प्रदेश विकास का मॉडल बन गया है। मुख्यमंत्री श्री शिवराज सिंह चौहान जी के नेतृत्व में लाड़ली लक्ष्मी योजना ने देश-प्रदेश में इतिहास रचा है।

मध्य प्रदेश में सिंचाई की सुविधा अब 45 लाख हेक्टेयर क्षेत्र में हो चुकी है। किसानों के लिए ई-मंडी जैसी आधुनिक सुविधाऐं उपलब्ध हैं। मध्य प्रदेश में विकास के कार्यों में तीव्र गति है। मुख्यमंत्री श्री शिवराज सिंह चौहान जी के नेतृत्व में लाड़ली बहना योजना का मध्य प्रदेश में चारों तरफ स्वागत हो रहा है। लाड़ली बहना योजना महिला सशक्तिकरण का वह मंत्र है जो मध्य प्रदेश की बहनों को आगे बढ़ने में योगदान देगा। इसी तरह से सीखो और कमाओ योजना युवाओं को रोजगार के क्षेत्र में आत्मनिर्भर बनाऐगी। विकास और जन कल्याण के काम करने में मध्य प्रदेश में भारतीय जनता पार्टी ही सबसे सशक्त राजनैतिक दल है। भारतीय जनता पार्टी अपने संगठन और कार्यकर्ताओं के अथक परिश्रम पर विश्वास रखती है। यही वो आधार है जो आगामी चुनाव में भारतीय जनता पार्टी को पुनः भारी बहुमत से विजय दिलायेगा। ▪

(संजय गोविन्द खोचे)
सम्पादक

9 साल सेवा, सुशासन और गरीब कल्याण के: पीएम मोदी

देश ने 2014 में सबका साथ-सबका विकास के नए संकल्प का आह्वान किया था। 2014 से पहले देश में क्या स्थिति थी? पूरे देश में जनता भ्रष्टाचार के विरुद्ध सड़क पर उतरी हुई थी।

बड़े-बड़े शहरों में आए दिन आतंकी हमले होते थे। कांग्रेस सरकार सीमा पर सड़कें बनाने से भी डरती थी। महिलाओं के विरुद्ध अपराध चरम पर थे। प्रधानमंत्री के ऊपर सुपरपावर थी, कांग्रेस सरकार रिमोट कंट्रोल से चला करती थी। निर्णय होते नहीं थे, नीतियां चौपट थीं।

मुझे तीर्थराज पुष्कर जाने का सौभाग्य मिला है। हमारे शास्त्रों में ब्रह्मा जी को सृष्टि का रचयिता कहा गया है। ब्रह्मा जी के आशीर्वाद से आज भारत में नव-निर्माण का दौर चल रहा है। केंद्र में भाजपा के नेतृत्व वाली NDA सरकार के 9 साल भी पूरे हो गए हैं। भाजपा सरकार के 9 साल देशवासियों की सेवा के रहे हैं। भाजपा सरकार के 9 साल, सुशासन के रहे हैं। भाजपा सरकार के 9 साल, गरीब कल्याण के लिए समर्पित रहे हैं।

देश ने 2014 में सबका साथ-सबका विकास के नए संकल्प का आह्वान किया था। 2014 से पहले देश में क्या स्थिति थी? पूरे देश में जनता भ्रष्टाचार के विरुद्ध सड़क पर उतरी हुई थी।

बड़े-बड़े शहरों में आए दिन आतंकी हमले होते थे। कांग्रेस सरकार सीमा पर सड़कें बनाने से भी डरती थी। महिलाओं के विरुद्ध अपराध चरम पर थे। प्रधानमंत्री के ऊपर सुपरपावर थी, कांग्रेस सरकार रिमोट कंट्रोल से चला करती थी। निर्णय होते नहीं थे, नीतियां चौपट थीं।

निवेशक निराश थे, युवाओं के सामने अंधकार था। जनता से वोट लेकर, कांग्रेस, जनता को ही कोस रही थी।

घोर निराशा के इसी माहौल को 2014 में आपने एक वोट से विकास के विश्वास में बदल दिया। आज देखिए, पूरी दुनिया में भारत का यशगान हो रहा है। आज दुनिया के बड़े एक्सपर्टस ये बोल रहे हैं कि भारत अति गरीबी को समाप्त करने के बहुत निकट है।

आखिर ये बदलाव आया कैसे? इसका जवाब है- सबका साथ,सबका विकास।

इसका जवाब है- वंचितों को वरीयता।

कांग्रेस ने 50 साल पहले, देखिए कांग्रेस की गारंटी देने वाली आदत आज की नहीं है पुरानी है, 50 साल पहले कांग्रेस ने इस देश को गरीबी हटाने की गारंटी दी थी। ये गरीबों के साथ किया गया कांग्रेस का सबसे बड़ा विश्वासघात है। कांग्रेस की रणनीति रही है कि, गरीबों को भरमाओ, गरीबों को तरसाओ।

कांग्रेस ने किस तरह देश की करोड़ों महिलाओं और बच्चों के जीवन से खिलवाड़ किया, इसका उदाहरण कांग्रेस के समय चला टीकाकरण अभियान है। जब कांग्रेस की सरकार थी तो देश में टीकाकरण का दायरा सिर्फ 60 प्रतिशत के आसपास ही पहुंच पाया था। उस समय कांग्रेस के शासनकाल में 100 में से चालीस गर्भवती महिलाएं और बच्चे ऐसे होते थे, जिन्हें जीवन रक्षक टीके नहीं लग पाते थे। अगर कांग्रेस सरकार होती तो देश में टीकाकरण की कवरेज 100 प्रतिशत होने में 40 साल और लग जाते। और कितनी पीढ़ियां बीत जाती। आप कल्पना कर सकते हैं कि जीवन रक्षक टीकों के ना लगने से देश में कितनी बड़ी संख्या में गरीब महिलाओं और बच्चों को अपने जीवन से हाथ धोना पड़ता।

हम सभी ने अपने बचपन में अपनी मां को लकड़ी पर खाना बनाते देखा है। लकड़ी पर खाना बनाने की वजह से जो धुआं निकलता था, वो हर महिला के जीवन पर संकट लाता था। देश की महिलाओं की ये परेशानी भी कांग्रेस को कभी नजर नहीं आई। कांग्रेस शासन में एक गैस कनेक्शन पाने तक के लिए इधर-उधर दौड़ना पड़ता था, सिफारिशें लगवानी पड़ती थीं। इसलिए 2014 तक सिर्फ 14 करोड़ लोगों के पास ही गैस कनेक्शन था। हम अगर कांग्रेस सरकार की स्पीड से चले होते तो देश के कोने-कोने में गैस कनेक्शन पहुंचने में 20 साल और लग जाते। यानि बिना गैस कनेक्शन के एक पीढ़ी और गुजर जाती। मुझे ये स्थिति स्वीकार नहीं थी। इसलिए ही पिछले 9 साल में बीजेपी सरकार ने देश के 19 करोड़ से अधिक लोगों को गैस कनेक्शन दिया है। इस गैस कनेक्शन ने महिलाओं को स्वास्थ्य भी दिया है और सुविधा भी दी है।

पानी की एक-एक बूंद की कीमत, भाई-बहन अच्छी तरह जानते हैं। हमारे देश में 2014 तक 18 करोड़ से ज्यादा ऐसे परिवार थे जहां नल से जल नहीं आता था, पाइप से पानी का कनेक्शन ही नहीं था। बीजेपी सरकार ने बीते 3 साल में 9 करोड़ लोगों को पाइप से पानी के कनेक्शन से जोड़ा है। अगर कांग्रेस की सरकार होती तो उसे यही काम करने में 20 साल और लग जाते। जल संकट हल करने में, पानी से जुड़ी चुनौतियों को समाप्त करने में कांग्रेस सरकार कभी आगे बढ़कर काम नहीं करती। कांग्रेस को सिर्फ झूठ बोलना आता है और आज भी कांग्रेस यही कर रही है। कांग्रेस ने वीरों की इस धरती और यहां के वीरों के साथ भी हमेशा धोखा किया है। ये कांग्रेस ही है जो चार दशक तक वन रैंक वन पेंशन के नाम पर हमारे पूर्व सैनिकों से विश्वासघात करती रही। कागजों पर सिर्फ 500 करोड़ रुपए रखकर कांग्रेस कहती थी कि वो वन रैंक वन पेंशन लागू करेगी। जबकि इसके लिए हजारों करोड़ रुपए चाहिए थे। भाजपा सरकार ने ना सिर्फ वन रैंक वन पेंशन को लागू किया बल्कि पूर्व सैनिकों को एरियर भी दिया। वन रैंक वन पेंशन लागू होने के बाद, 18 हजार करोड़ रुपए से ज्यादा की राशि एरियर के तौर पर, पूर्व सैनिकों को मिली है।

वन रैंक वन पेंशन लागू होने की वजह से देश के पूर्व सैनिकों की जेब में अब तक करीब-करीब 65 हजार करोड़ रुपए गए हैं, 65 हजार करोड़

रुपया। आप कल्पना कर सकते हैं, कहां कांग्रेस के 500 करोड़ रुपये और कहां बीजेपी सरकार के 65 हजार करोड़ रुपये। अगर बीजेपी सरकार ना होती, तो पूर्व फौजियों को आज भी वन रैंक वन पेंशन का इंतजार ही करना पड़ता।

कांग्रेस की गलत नीतियों का सबसे ज्यादा नुकसान अगर किसी को उठाना पड़ा तो वो देश के छोटे किसान हैं। छोटे किसानों की जरूरतों पर, छोटे किसानों की मदद करने पर कांग्रेस ने कभी ध्यान नहीं दिया। ये भारतीय जनता पार्टी है जिसने पहली बार छोटे किसानों की मुश्किलों को समझा, उनकी परेशानी दूर करने की कोशिश की।

हमने छोटे किसानों के हितों को ध्यान में रखकर पिछले 9 वर्ष में कृषि बजट में लगभग 6 गुणा वृद्धि की है, छह गुणा वृद्धि...

भाजपा सरकार में....

- पहली बार किसानों को लागत का डेढ़ गुणा समर्थन मूल्य तय हुआ।
- पहली बार किसानों को बैंक खाते में उनकी उपज का पैसा मिलना सुनिश्चित हुआ।
- पहली बार किसानों को e-NAM के रूप में राष्ट्रीय मंडी मिली है।
- पहली बार किसी फसल बीमा योजना से किसानों को सवा लाख करोड़ रुपए से अधिक का मुआवजा मिला है।
- पहली बार अभियान चलाकर किसानों को बीजों की 2 हजार नई वैरायटी दी गई है।
- पहली बार पशुपालकों को, मछली पालकों को किसान क्रेडिट कार्ड की सुविधा मिली है।
- पहली बार यूरिया की कालाबाजारी रुकी है, नीम कोटिंग होने का फायदा किसानों को मिला है।
- पहली बार किसानों को लिक्विड नैनो यूरिया जैसा मेड इन इंडिया उत्पाद मिला है।
- पहली बार अभियान चलाकर देश के 11 करोड़ किसानों को 11 करोड़ से अधिक सॉयल हेल्थ कार्ड दिए गए हैं।
- पहली बार किसानों के लिए पीएम किसान सम्मान निधि जैसी योजना शुरु हुई है।

इसके तहत अभी तक 11 करोड़ किसानों को करीब ढाई लाख करोड़ रुपए मिल चुके हैं।

ये बीजेपी की ही सरकार है जिसने गेहूं और धान की खेती के अलावा भी किसानों की आय के दूसरे साधनों पर और ज्यादा काम किया है।

पहली बार देश में दालों का उत्पादन बढ़ाने और MSP पर दलहन की खरीद के लिए इतना बड़ा अभियान चलाया गया।

पहली बार अन्नदाता को ऊर्जादाता बनाने के लिए हमने अभियान चलाया, लाखों किसानों को सोलर पंप भी दिए।

पहली बार देश में प्राकृतिक खेती-नैचुरल फार्मिंग के लिए भी इतना बड़ा अभियान शुरू किया गया।

पहली बार शहद का उत्पादन बढ़ाने और उसके निर्यात के लिए भी बीजेपी सरकार ने विशेष मिशन चलाया।

पहली बार ज्वार-बाजरा जैसे भारत के श्री-अन्न को वैश्विक पहचान देने का प्रयास हुआ।

पहली बार, किसी सरकार ने मोटे अनाज उगाने वाले देश के ढाई करोड़ किसानों की चिंता की है।

भारत के प्रयास से ही संयुक्त राष्ट्र ने 2023 को मोटे अनाज का अंर्तराष्ट्रीय वर्ष घोषित किया है। इन सबका फायदा किसानों को हुआ है।

आजकल बहुत से लोग ये पूछते हैं कि देश में जो विकास के बड़े-बड़े काम हो रहे हैं, उसके लिए पैसा कहां से आ रहा है? हमारे देश में विकास के काम के लिए मोदी इतने पैसे लाता कहां से है। चारों तरफ विकास का काम चल रहा है इतने पैसे मोदी लाता कहां से है। मैं बताता हुं मोदी पैसे लाता कहां से है। पहले पैसे कहां जाते थे और आज कहां जाते हैं वो भी बताता हुं। हमारे देश में विकास के काम के लिए पैसे की कमी कभी भी नहीं रही है। ये बहुत जरूरी होता है कि जो पैसा सरकार भेजे, वो पूरा का पूरा विकास के कार्यों में लगे। लेकिन कांग्रेस ने अपने शासन में देश का खून चूसने वाली ऐसी भ्रष्ट व्यवस्था बना दी थी, जो देश के विकास को खाए जा रही थी, खोखला कर रही थी। कांग्रेस के नेता पूर्व प्रधानमंत्री राजीव गांधी ने सार्वजनिक रूप से माना था कि कांग्रेस सरकार 100 पैसे भेजती है, एक रुपया अगर भेजती है तो सौ पैसे में से पिच्यासी पैसे भ्रष्टाचार की भेंट चढ़ जाते हैं। कांग्रेस, हर योजना में पिच्यासी परसेंट कमीशन खाने वाली पार्टी है।

बीजेपी सरकार ने बीते 9 वर्षों में जो देश का इतना विकास किया है, वो इसलिए संभव हो पाया क्योंकि बीजेपी कांग्रेस की लूट के रास्तों को बंद कर रही है। बीते 9 वर्षों में बीजेपी सरकार ने आधुनिक हाईवे और रेलवे पर करीब चौबीस

लाख करोड़ रुपए खर्च किए हैं। हाईवे और रेलवे- 24 लाख करोड़... अगर कांग्रेस की सरकार होती और राजीव गांधी ने जो कहा था अगर उस पर विचार करें तो 24 लाख करोड़ में से 20 लाख करोड़ रुपए बीच में ही लुट जाते। न रेल बनती न रोड बनता। बीते 9 वर्षों में बीजेपी सरकार ने उनतीस लाख करोड़ रुपए डायरेक्ट बेनिफिट ट्रांसफर DBT के माध्यम से सीधे गरीबों के बैंक खाते में जमा किए हैं। अगर कांग्रेस सरकार होती तो इसमें से चौबीस लाख करोड़ रुपए पिच्यासी पैसों के हिसाब से 24 लाख करोड़ रुपये बीच में ही लुट जाते।

जब लूट की बात होती है, तो कांग्रेस किसी में भेदभाव नहीं करती।

कांग्रेस, देश के हर नागरिक को, गरीब हो, दलित हो, पीड़ित हो, शोषित हो, वंचित हो, आदिवासी हो अल्पसंख्यक हो, दिव्यांग हो, महिला हो, सबको समान भाव से लूटती है। बीते 9 वर्षों में बीजेपी सरकार ने आदिवासी बच्चों को 22 हजार करोड़ रुपए से ज्यादा पढ़ाई के लिए भेजे हैं। अगर कांग्रेस सरकार होती तो इसमें से उन्नीस हजार करोड़ रुपए बीच में ही लुट जाते। बीते 9 वर्षों में बीजेपी सरकार ने पानी की सुविधाओं के लिए पौने चार लाख करोड़ रुपए का प्रावधान किए हैं। अगर कांग्रेस सरकार होती तो इसमें से भी सवा तीन लाख करोड़ रुपए बीच में ही लुट जाते। आप कल्पना कर सकते हैं, इसका कितना बड़ा नुकसान माताओं-बहनों-बेटियों को भी उठाना पड़ता। गरीब का सबसे बड़ा सपना, उसका अपना घर होता है। कांग्रेस सरकार के समय गरीबों को जो घर मिलते थे, वो चार दीवारों के खंडहर बनकर रह जाते थे इससे ज्यादा कुछ नहीं होते थे। ऐसा इसलिए होता था क्योंकि कांग्रेस, गरीब के घरों को भी लूट लेती थी।

बीते 9 वर्षों में बीजेपी सरकार ने दो लाख 25 हजार करोड़ रुपए गरीबों को घर बनाने के लिए दिए हैं। अगर कांग्रेस सरकार होती तो इसमें से दो लाख करोड़ रुपए बीच में ही लुट जाते। बाकी बचे 25 हजार करोड़ रुपए में खंडहर ही बनते, घर का सपना कभी पूरा नहीं होता।

बीते 9 वर्षों में बीजेपी सरकार ने मुद्रा योजना के तहत करीब 24 लाख करोड़ रुपए की मदद युवाओं को दी है। ये पैसा भी पूरा का पूरा, युवाओं के बैंक खातों में गया है। जब देश का पैसा देश के विकास में लगता है, तो विकास दिखता भी है और विकास महसूस भी होता है। ये हम होते हुए देख रहे हैं। बहुत बड़े रेल नेटवर्क का बिजलीकरण हो चुका है।

कांग्रेस, देश के हर नागरिक को, गरीब हो, दलित हो, पीड़ित हो, शोषित हो, वंचित हो, आदिवासी हो अल्पसंख्यक हो, दिव्यांग हो, महिला हो, सबको समान भाव से लूटती है।

बीते 9 वर्षों में बीजेपी सरकार ने आदिवासी बच्चों को 22 हजार करोड़ रुपए से ज्यादा पढ़ाई के लिए भेजे हैं। अगर कांग्रेस सरकार होती तो इसमें से उन्नीस हजार करोड़ रुपए बीच में ही लुट जाते।

बॉर्डर के क्षेत्रों तक पहुंचना भी अब और आसान हुआ है। इन सभी ने टूरिज्म को बढ़ाने में, रोजगार के अवसर बढ़ाने में बहुत बड़ी मदद की है। पिछले 9 वर्षों में भारत के लोगों ने अपने जिस सामर्थ्य का प्रदर्शन किया है, उसकी जितनी प्रशंसा की जाए, वो कम होगी। देश की हर सफलता के पीछे भारत के लोगों की मेहनत है, भारत के लोगों का पसीना है। देश को आगे ले जाने के लिए हर भारतवासी ने जो संकल्प दिखाया है, वो अद्वितीय है। ये भारत के लोग ही हैं जिन्होंने महामारी के बाद देश की अर्थव्यवस्था को नई ऊंचाई पर पहुंचाया है। ये भारत के लोग ही हैं, जिनकी वजह से आज दुनिया कह रही है कि ये दशक भारत का दशक है, ये सदी भारत की सदी है। लेकिन भारत की ये उपलब्धियां, भारत के लोगों की ये कामयाबी, कुछ लोगों को पच नहीं रही। आपने ये देखा है। भारत को नया संसद भवन मिला है। आपने टीवी पर देखा, मैं आपसे पूछता हूं कि ये नया संसद भवन पर आपको गर्व हुआ कि नहीं हुआ? आपका माथा ऊंचा हुआ कि नहीं हुआ? हमारे देश की शान बढ़ने का आनंद हुआ कि नहीं हुआ? लेकिन कांग्रेस और इसके जैसे कुछ दलों ने इस पर भी राजनीति का कीचड़ उछाला। कई-कई पीढ़ियों के जीवन में ऐसे अवसर एक बार ही आते हैं। लेकिन कांग्रेस ने भारत के गौरव के इस क्षण को भी अपने स्वार्थी विरोध की भेंट चढ़ा दिया। कांग्रेस ने 60 हजार श्रमिकों के परिश्रम का, देश की भावनाओं और आकांक्षाओं का अपमान किया है। 60 हजार मजदूरों के पसीनों को उन्होंने लात मारी है। इनको गुस्सा इस बात का है कि एक गरीब का बेटा, इनके अहंकार के आगे अड़ा कैसे हुआ है। इनको गुस्सा इस बात का है कि एक गरीब का बेटा, इनकी मनमानी चलने क्यों नहीं दे रहा। इनको गुस्सा इस बात का है कि एक गरीब का बेटा, इनके भ्रष्टाचार पर, इनके परिवारवाद पर सवाल क्यों खड़े कर रहा है।

2014 में आप लोगों ने कई दशकों बाद केंद्र में एक स्थिर सरकार बनाई थी। भाजपा ने आपके हर आदेश की मर्यादा रखी है।

कांग्रेस को बेटियों की सुरक्षा की, बेटियों के हितों की परवाह नहीं है। आपका प्यार और आशीर्वाद मेरी बहुत बड़ी ऊर्जा है। मैं बड़े संतोष के साथ कह सकता हूं कि बीते 9 वर्षों में बीजेपी सरकार ने माताओं-बहनों-बेटियों के जीवन चक्र से जुड़ी हर समस्या पर ध्यान दिया है। गर्भावस्था के दौरान शिशु को पौष्टिक खाना मिले इसके लिए हमने मातृ वंदना योजना चलाई, महिलाओं के बैंक खाते में पैसे भेजने शुरू किए। शिशु का जन्म अस्पताल में हो, हमने इसके लिए भी अभियान चलाया। बेटी को कोख में ही ना समाप्त कर दिया जाए, इसके लिए बेटी बचाओ-बेटी पढ़ाओ जैसे जनआंदोलन शुरू किए। बेटी जब बड़ी होकर स्कूल जाने लगे, तो शौचालय ना होने की वजह से स्कूल ना छोड़े, इसके लिए करोड़ों शौचालय बनाए। बेटी की शिक्षा जारी रहे, इसके लिए सुकन्या समृद्धि योजना में इतना ज्यादा ब्याज देने का काम किया। बेटी बड़ी होकर कुछ अपना काम कर सके इसके लिए बिना गारंटी मांगे लोन देने वाली मुद्रा योजना शुरू कर दी। मां बनने के बाद भी अपनी नौकरी जारी रख सके इसके लिए मातृत्व अवकाश में वृद्धि की। बेटी अगर सैनिक स्कूल जाना चाहे, तो उसके लिए भी हमने सैनिक स्कूल के द्वार खोल दिए। बेटी अगर सेना में अफसर बनना चाहे तो तीनों सेनाओं में हमने बेटियों के लिए नए रास्ते बना दिए। आज बड़ी संख्या में हमारी वीर बेटियां अग्निवीर भर्ती हुई हैं, नौसेना में नाविक भर्ती हुई हैं। गांव की बहनों को कमाई के अवसर बढ़ें, इसके लिए 9 करोड़ बहनों तक सेल्फ हेल्प ग्रुप का विस्तार किया और सहायता को भी दोगुना कर दिया। बेटी को रसोई में लकड़ी का धुआं ना सहना पड़े, इसके लिए उज्ज्वला का गैस कनेक्शन दिया। बेटी को पानी के इंतजाम में परेशान ना होना पड़े, इसके लिए हमने हर घर पाइप से पानी देने की योजना शुरू की। बेटी को अंधेरे में ना रहना पड़े, इसके लिए हमने सौभाग्य योजना से मुफ्त बिजली कनेक्शन दिया। बेटी पैसे की कमी की वजह से अपनी बीमारी छिपाए नहीं, इसलिए हमने उसे आयुष्मान कार्ड की ताकत दे दी। बेटी का घर की संपत्ति

पर भी अधिकार हो, इसके लिए पीएम आवास के घरों में उसे संयुक्त भागीदारी दी। गृहणी को अपनी बचत अनाज के डिब्बों में ना रखनी पड़े, इसके लिए जनधन योजना के तहत बड़ी संख्या में बैंक खाते खोले। और इन सब प्रयासों का जो परिणाम रहा है, जो अभूतपूर्व है।

सच ये है कि कांग्रेस के पास देश के लिए कोई काम करने की मंगल कल्पना नहीं है, शुभ विचार नहीं है, उनके पास कोई एजेंडा नहीं है। अपने कुशासन को ढकने के लिए कांग्रेस ने एक और नया फॉर्मूला खोज लिया है। ये फॉर्मूला है झूठी गारंटियों का। किसान और नौजवान तो इसके भुक्तभोगी हैं। ये लोग 10 दिन में गारंटी पूरी करने वाले थे। याद है न? ये गारंटी याद है न इन लोगों ने पिछली बार दी थी। 10 दिन में पूरे करने वाले थे, आप मुझे बताइए, जो कांग्रेस ने कहा था, जो वादा किया था वो निभाया क्या? वो पूरा किया क्या? जो कहा वो किया क्या?

ये ऐसी गारंटियां देते हैं, जिनको अगर अमल में लाया जाए तो राज्य और देश दिवालिया हो जाएगा। दुनिया में आज जो देश दिवालिया हो रहे हैं, उनकी स्थिति आप देख रहे हैं। लेकिन कांग्रेस का यही विजन है, यही नीति है। इसलिए कांग्रेस से, लोगों को बहुत सावधान रहना है। विकसित भारत के संकल्प को पूरा करने के लिए विकसित राज्य बहुत जरूरी है। इस दशक के अगले सात साल बहुत अहम हैं। इन सात सालों में देश के लोग भारत का कायाकल्प होते हुए देखेंगे। भारत का आधुनिक इंफ्रास्ट्रक्चर, आधुनिक हाईवे, आधुनिक रेलवे, आधुनिक एयरपोर्ट, दुनिया में किसी देश से कम नहीं होंगे। भारत के लोगों के पास, दुनिया के किसी देश से कम सुविधाएं नहीं होंगी। भारत के लोगों के पास, शिक्षा के, स्वास्थ्य के बेहतरीन संसाधन होंगे। भारत दुनिया की सबसे बड़ी मैन्यूफैक्चरिंग फैक्ट्री के रूप में उभर कर आने वाला है। भारत दुनिया में सबसे बड़े निर्यातक देशों में से एक बनेगा। भारत दुनिया में सबसे बड़े टूरिस्ट डेस्टिनेशन में से एक बनेगा। इन सभी में लोगों को बहुत बड़ी भूमिका निभानी है। पराक्रम और परिश्रम की ये पुण्य भूमि, नवनिर्माण का आह्वान कर रही है। मैं देशवासियों को विश्वास दिलाता हूं.. आपने नौ साल मुझे काम करते देखा, बिना थके, बिना रुके सिर्फ और सिर्फ 140 करोड़ देशवासी यही मेरा परिवार, यही मेरा परमात्मा। और अभी भी आपके उज्ज्वल भविष्य के लिए जी-जान से जुटा रहूंगा। ये आपका आशीर्वाद, ये आपके आशीर्वाद ही मेरी ताकत है, वही मुझे काम करने की प्रेरणा देता है। ▪

1 जनवरी 2024 से श्री राम जन्मभूमि में दर्शन प्रारम्भ होगा

अयोध्या में भगवान श्री राम जी के मंदिर का पुनर्निर्माण तीव्र गति से चल रहा है। पांच अगस्त 2020 को प्रधानमंत्री श्री नरेंद्र मोदी जी ने श्री राम मंदिर के पुनर्निर्माण की आधारशिला रखी थी। तब से मंदिर का निर्माण कार्य जोर शोर से चल रहा है। पिछले वर्ष देव दीपावली के अवसर पर प्रधानमंत्री श्री नरेंद्र मोदी जी ने निर्माण स्थल पर जाकर वहां चल रहे कार्यों का निरीक्षण किया था। दुनिया भर के करोड़ों राम भक्त उस लम्हे का बेसब्री से इंतजार कर रहे हैं जब वो अयोध्या में श्री राम जन्मभूमि में रामलला के भव्य मंदिर के दर्शन कर सकेंगे। भव्य राम मंदिर का पुनर्निर्माण श्री राम जन्म भूमि तीर्थ क्षेत्र ट्रस्ट द्वारा किया जा रहा है, जिसे सरकार ने अयोध्या में श्री राम जन्मभूमि स्थल पर श्री राम मंदिर निर्माण के लिए गठित किया था। श्री राम मंदिर निर्माण का काम लगभग 70 फीसदी से अधिक पूरा हो चुका है और गर्भगृह बनाने का काम भी तेजी से चल रहा है। मंदिर निर्माण काम तीन स्तरों पर हो रहा है और इस साल के अंत पहले चरण का काम पूरा हो जाने की उम्मीद है। जिसके बाद मंदिर भक्तों के लिए खोल दिया जाएगा और भक्तगण रामलला के दर्शन कर सकेंगे। मंदिर निर्माण कार्य तीन चरणों में पूर्ण होगा। पहला चरण 30 दिसंबर 2023 जब भगवान गर्भगृह में स्थापित होंगे और यदि सब कुछ सही ढंग से अनुमान के अनुसार चला तो श्रद्धालुओं को दर्शन करने की अनुमति यहां मिल जाएगी। जो आज वर्तमान में अस्थाई है वो उससे हटकर है। दूसरा चरण है 30 दिसंबर 2024, जब मंदिर की पहली और दूसरी मंजिल भी पूरी हो जाएगी। श्रीराम जन्मभूमि मंदिर में खंभों की स्थापना का काम शुरू हो चुका है। राममंदिर में कुल 392 खंभे होंगे। विशेषज्ञों की राय लेने के बाद महाराष्ट्र के चंद्रपुर जिले के बल्लारपुर की सागोन की लकड़ी श्री राम मंदिर को बनाने में इस्तेमाल की जा रही है। राम मंदिर में कुल 12 द्वार होंगे। मंदिर के मुख्य द्वार को ''सिंह द्वार'' के नाम से जाना जाएगा। श्री राम जन्मभूमि मंदिर में स्तंभों, पीठका और अन्य स्थानों पर सज्जित होने के लिए शास्त्रीय ग्रंथों में वर्णित कथाओं के आधार पर सुंदर मूर्तियों का निर्माण किया जा रहा है। इन मूर्तियों को निर्माण प्रक्रिया की सारणी के अनुसार निर्दिष्ट स्थानों पर प्रतिष्ठापित किया जाएगा। मंदिर इस प्रकार से बनाया जा रहा है कि इस पर भूकंप का कोई प्रभाव नहीं पड़ेगा। भक्तों के लिए अगले वर्ष 1 जनवरी 2024 से राममंदिर खोल दिया जाएगा और मौजूदा निर्माण कार्य की रफ्तार को देखते हुए ऐसा लगता है कि मंदिर निर्माण के पहले चरण का काम समय सीमा से काफी पहले खत्म हो सकता है और बहुत जल्द ही भक्तों को रामलला के दर्शन का सौभाग्य प्राप्त होगा। ▪

मोदी युग: राष्ट्रीय नवाचार के नौ साल

विष्णु दत्त शर्मा

पारदर्शिता और जवाबदेही किसी भी जन-हितैषी सरकार के दो आधार-स्तम्भ हैं। ये न केवल जनता को करीब लाकर सरकार से जोड़ते हैं, बल्कि निर्णय लेने की प्रक्रिया में उन्हें समान रूप से अहम भागीदार भी बनाते हैं।

अपने 9 साल के कार्यकाल में श्री नरेन्द्र मोदी जी ने खुले व पारदर्शी शासन के प्रति अपनी प्रतिबद्धता दर्शाई है,नीतियां बंद कमरों में बैठकर नहीं, बल्कि लोगों के बीच जाकर बनाने की परंपरा शुरू की है।

कभी एक प्रधानमंत्री ने कहा था कि दिल्ली से एक रुपया चलता है, तो वह नीचे तक पहुंचते-पहुंचते मात्र 15 पैसे ही रह जाता है। स्व. राजीव गांधी का यह बयान भारत की साख पर एक घिनौना धब्बा बनकर दशकों तक चिपका रहा और भ्रष्टाचार का मुहावरा बन गया था। लेकिन 2014 के बाद यह दाग तब मिटा जब श्री नरेंद्र भाई मोदी जी ने भारी जनादेश से प्रधानमंत्री पद की शपथ लेने के बाद सबसे पहले 'जनधन योजना' के तहत हर गरीब का (लगभग 45 करोड़) बैंक खाता खोलने का परिवर्तनकारी नवाचार किया। परिणाम यह हुआ कि अंतिम व्यक्ति के लिए दिल्ली से चलने वाला 100 पैसा डीबीटी के जरिए गरीबों के खाते में सीधे जाने लगा। अब कोई बिचौलिया गरीब का हिस्सा नहीं खा सकता। मोदी सरकार की यह पहली योजना राष्ट्रीय नवाचार की शुरुआत थी, जिसने पार्टी के अंत्योदय को साकार किया। नौ साल के अंदर देश भर में व्यापक इंफ्रास्ट्रक्चर खड़ा हुआ है। एक ओर सड़कों का जाल बिछ रहा है, बड़े-बड़े प्रोजेक्ट चल रहे हैं, वहीं, भ्रष्टाचार का एक भी दाग नहीं लगा है। मोदी सरकार निष्कलंक रूप से अपना राष्ट्रीय कर्तव्य निभा रही है। इसलिए मोदी सरकार के नौ साल के कार्यकाल की यह एक महान आश्वस्ति है कि अब भ्रष्टाचार के लिए यहां कोई जगह नहीं बची।

पारदर्शिता और जवाबदेही किसी भी जन-हितैषी सरकार के दो आधार-स्तम्भ हैं। ये न केवल जनता को करीब लाकर सरकार से जोड़ते हैं, बल्कि निर्णय लेने की प्रक्रिया में उन्हें समान रूप से अहम भागीदार भी बनाते हैं। अपने 9 साल के कार्यकाल में श्री नरेन्द्र मोदी जी ने खुले व पारदर्शी शासन के प्रति अपनी प्रतिबद्धता दर्शाई है,नीतियां बंद कमरों में बैठकर नहीं, बल्कि लोगों के बीच जाकर बनाने की परंपरा शुरू की है। अब नीतियों के मसौदे ऑनलाइन जारी होते हैं, ताकि जनता भी इनमें सहभागी हो सके। राष्ट्रीय शिक्षा नीति-2020 इसका प्रत्यक्ष उदाहरण है। कार्यपालिका में पारदर्शिता लाने के प्रति मोदी जी का दृढ़ संकल्प और उनकी प्रतिबद्धता एक खुली, पारदर्शी और जन-केन्द्रित सरकार के युग की स्थापना को दर्शाता है।

ऐसी ही पारदर्शी कार्य-संस्कृति अपनाकर श्री नरेंद्र मोदी जी ने ऐतिहासिक लकीर खींच दी है। वंशवाद और कमीशनखोरी से ऊपर उठकर राजनीति अब श्रम साधना बन गई है। कड़ी मेहनत करते हुए श्री मोदी जी ने राजनीतिक कार्य-संस्कृति में बदलाव ला दिया है। कथनी और करनी में अंतर की राजनीति का अंत हो चला है। इसलिए अब विरोधी नेता भी जनता के बीच जाकर पसीना बहाने लगे हैं। भारतीय राजनीति के भीतर यह सकारात्मक बदलाव

मोदी जी के नवाचारों के कारण हुआ है। उनकी लोकप्रियता और जनता से जुड़ाव की अनूठी पहल राजनीतिज्ञों को जमीन से जुड़ने के लिए प्रेरित करती है। भारत ही नहीं, विदेशी नेता भी मोदी-शैली से प्रभावित दिखते हैं। मोदी जी की कार्यप्रणाली का डंका सारी दुनिया में बज रहा है। बीते नौ वर्षों में हुए राष्ट्रीय नवाचारों को समझने के लिए मोदी सरकार की स्वदेशी नीति को देखना होगा। स्वराज, स्वच्छता और स्वदेशी का नारा गांधी जी ने दिया था, जिसको साकार करने का काम मोदी युग में हुआ। सरकार ने मेक इन इंडिया के जरिए विनिर्माण, इंफ्रास्ट्रक्चर और सेवा गतिविधियों में 25 क्षेत्रों को चिन्हित करके उद्योगों के प्रति सरकार की 'रेग्युलेटर' छवि को बदला है। उद्योगों के साथ सरकार के व्यवहार में आमूलचूल बदलाव लाकर सरकार को सुविधा प्रदाता की भूमिका में लाया गया। यह योजना विश्व भर में संभावित निवेशकों तथा साझीदारों को 'नये भारत' की विकास गाथा में भाग लेने के लिए एक खुला आमंत्रण देती है। इसके कारण बीते सालों में देश में कारोबार शुरू करना आसान हुआ है।

मोदी सरकार की 'मेक इन इंडिया' योजना ने 27 सेक्टरों में महान उपलब्धियां हासिल की हैं। इसको विस्तार देते हुए देश को 'आत्मनिर्भर भारत' की ओर ले जाने का भगीरथ प्रयास भी मोदी सरकार ने किया है। सभी क्षेत्रों में आत्मनिर्भरता लाने की पहल हुई है। उदाहरण के लिए रक्षा क्षेत्र में प्रमुख स्वदेशी पहलों को देखें, तो डिफेंस इंडिया स्टार्टअप चैलेंज, INS विक्रांतः एयरक्राफ्ट कैरियर, धनुषः लंबी दूरी की तोपें, अरिहंतः परमाणु पनडुब्बी और प्रचंडः हल्के लड़ाकू हेलीकॉप्टर का निर्माण बड़ी उपलब्धि हैं। आज भारत की ब्रह्मोस, आकाश मिसाइल सिस्टम्स, रडार, सिमुलेटर, माइन प्रोटेक्टेड व्हीकल्स, आर्मर्ड व्हीकल्स, पिनाका रॉकेट और लॉन्चर, एम्युनिशन, थर्मल इमेजर, बॉडी आर्मर और एवियॉनिक्स आदि की दुनिया के कई देशों में मांग है। भारत के एलसीए तेजस, लाइट कॉम्बैट हेलीकॉप्टर और एयरक्राफ्ट कैरियर की मांग भी कई देशों में बढ़ी है। हाल ही में रक्षा विभाग ने 928 उत्पादों की एक सूची जारी की थी, जिन्हें भारत में ही बनाया जाएगा। भारत की आत्मनिर्भरता से वैश्विक प्रभाव भी बढ़ा है और भारतीयों का मान भी।

आजादी के अमृत काल को ध्यान में रखकर मोदी सरकार देश को 2047 तक हर क्षेत्र में आत्मनिर्भर बनाने की दिशा में काम कर रही है। श्री मोदी जी ने चायनीज सामानों की आमद को कम करने का बीड़ा उठाया, जिसके परिणामस्वरूप बीते नौ सालों में हमारे स्वदेशी सामानों की मांग दुनिया भर में कई गुना बढ़ चुकी है। प्रधानमंत्री का नारा है 'लोकल के लिए वोकल'।

उनका संकल्प है कि भारत के लोगों के परिश्रम से बने सामान को मान-सम्मान मिले। देश की समृद्धि के लिए स्वदेशी अपनाकर भारत की कला, संस्कृति और सभ्यता को जीवित रखा जाये। इसका प्रभाव उस समय साफ तौर पर देखा गया जब हम खिलौने के विश्व में सबसे बड़े निर्यातक बन गये।

साल 2014 में अनेक चुनौतियों के बीच प्रधानमंत्री बनने के बाद सामरिक व आर्थिक मोर्चों पर ही नहीं बल्कि शिक्षा और स्वास्थ्य के क्षेत्र में भी श्री नरेंद्र मोदी जी ने अनेक नवाचार किये हैं। नौ साल के दौरान भाजपा सरकार द्वारा लायी गई योजनाओं के कारण समाज के सबसे कमजोर वर्ग के लोगों की जिंदगी में जबरदस्त बदलाव आए हैं। दुनिया के सबसे बड़े स्वास्थ्य मिशन के रूप में आयुष्मान भारत योजना से 23 करोड़ गरीबों को 5 लाख रुपए तक के मुफ्त इलाज की गारंटी देना, प्रधानमंत्री आवास योजना के तहत गरीबों के लिए 3.5 करोड़ घर बनाना और समय सीमा में 18 हजार गांवों में बिजली पहुंचाना, पीएम गरीब कल्याण योजना में 80 करोड़ लोगों को अनाज देना, 74 नए एयरपोर्ट, 54 हजार कि.मी. नए हाईवे का निर्माण, 7 नए आईआईएम-आईआईटी और 370 नए विश्वविद्यालय, सुशासन व विकास की दिशा में मील का पत्थर हैं।

भारतीयता के अनुरूप राष्ट्रीय शिक्षा नीति-2020 लागू कर मोदी सरकार ने सच्ची स्वाधीनता की नींव रखी है। नौ साल पीछे मुड़कर देखें तो पता चलता है कि हमारे न जाने कितने प्रतिभाशाली खिलाड़ी अभाव के चलते आगे नहीं बढ़ सके, 'खेलो इंडिया' के माध्यम से देश का माथा दुनिया में ऊँचा हो रहा है। अंतिम पायदान पर खड़ा प्रतिभाशाली खिलाड़ी अब शीर्ष पर पहुंचकर अपने सपने पूरे कर रहा है। मोदी जी की रुचि, उनके प्रोत्साहन और संवाद ने देश की खेल भावना को नई ऊंचाई दी है। आंकड़े गवाह हैं कि हर खेल में भारतीय खिलाड़ी इतिहास रच रहे हैं।

सरकार की योजनाएँ तब अद्भुत परिणाम देती हैं, जब उनको लागू करने वाले नेतृत्व की नीयत साफ हो। शीर्ष पद पर रहते हुए प्रधानमंत्री मोदी जी ने किशोरों, युवाओं, दिव्यांगों, महिलाओं, बुजुर्गों, उद्यमियों, लोकसेवकों सहित सभी से संवाद का संबंध बनाया है। उन्होंने सभी वर्गों को मोटिवेट व जागृत किया है और पंचप्रण जैसे संकल्पों में सबका साथ लेकर भारत को परम वैभव के मार्ग पर पुनः उन्मुख किया है।

प्रधान सेवक के तौर पर उनके इस अवदान को स्वर्ण अक्षरों में लिखा जाएगा। देश के लोकतांत्रिक इतिहास में श्री नरेंद्र मोदी जी को मिला जनादेश भारत में परिवर्तन और प्रगति के लिए था। नवाचारों के जरिए राष्ट्रीय पुनर्निर्माण कर रहे प्रधानमंत्री श्री नरेंद्र मोदी जी का कार्यकाल भारतीय लोकतंत्र में कालजयी बन गया है। ▪

लिया गया हर फैसला, की गई हर कार्रवाई का मार्गदर्शन लोगों के जीवन में सुधार लाने की इच्छा ने किया है: प्रधानमंत्री

आज, जब हम राष्ट्र की सेवा के नौ वर्ष पूरे कर रहे हैं, मैं विनम्रता और कृतज्ञता से भर उठा हूं। लिया गया हर फैसला, की गई हर कार्रवाई का मार्गदर्शन लोगों के जीवन में सुधार लाने की इच्छा ने किया है। हम विकसित भारत का निर्माण करने के लिये लगातार परिश्रम करते रहेंगे। ▪

प्रधानमंत्री ने विकास यात्रा को दर्शाने वाली वेबसाइट का लिंक साझा किया

''भारत के विकास के प्रति अटल समर्पण के नौ वर्ष।'' हमारी विकास-यात्रा की झलक देखने के लिये मैं सभी को इस nm4.com/9yrsofseva साइट का अवलोकन करने के लिये आमंत्रित करता हूं। इससे यह रेखांकित करने का अवसर भी मिलता है कि कैसे लोग विभिन्न सरकारी योजनाओं से लाभान्वित हुये हैं। ▪

आज पूरा एक रूपया गरीब के खाते में पहुंच रहा है : विष्णुदत्त शर्मा

प्रधानमंत्री श्री नरेन्द्र मोदी जी के नेतृत्व में केन्द्र सरकार के 9 वर्ष सेवा, सुशासन और गरीब कल्याण को समर्पित हैं। श्री मोदी जी के नेतृत्व में भारतीय जनता पार्टी के कार्यकर्ता आज भारत के कोने कोने में गुड गर्वेनेंस को जमीन पर उतारने का काम कर रहे है। कांग्रेस के जमाने में कहा जाता था कि केन्द्र सरकार से 1 रुपए भेजा जाता था तो 85 पैसे भ्रष्टाचार में चला जाता था, 15 पैसे ही जनता तक पहुँचते थे। लेकिन प्रधानमंत्री श्री नरेंद्र मोदी जी ने भ्रष्टाचार की परंपरा का अंत कर देश को पारदर्शी व्यवस्था दी है। आज केन्द्र सरकार एक रूपया अगर गरीब के लिए पहुंचाती है तो पूरा 1 रूपया गरीब के खाते में पहुंचता है। देश के विकास के संकल्प के साथ प्रधानमंत्री श्री नरेंद्र मोदी जी के कुशल नेतृत्व में देश आगे बढ़ रहा है। हर गरीब के जीवन को बदलने का कार्य विगत 9 वर्षों में हुआ है। प्रधानमंत्री श्री नरेन्द्र मोदी के नेतृत्व में पूरी दुनिया में भारत का मान सम्मान बढ़ा है और भारत के नेतृत्व के प्रति एक विश्वास जागृत हुआ है। यह सब मोदीजी के कारण संभव हुआ है। मोदी जी के विकास कार्यो और निर्णयों को 140 करोड़ जनता अनुभव करती है और आज मोदी जी हर नागरिक के दिल में अलग स्थान बनाए हुए हैं।

प्रधानमंत्री जी मध्यप्रदेश की जनता को समृद्धि की ओर ले जा रहे हैं : शिवराजसिंह चौहान

प्रधानमंत्री श्री नरेंद्र मोदी जी सदैव देश के विकास, गरीब कल्याण, प्रकृति और पर्यावरण को लेकर सोचते हैं। 9 साल में प्रधानमंत्री जी ने देश को बदल दिया है, आज हर भारतवासी आत्म विश्वास और गौरव से भरा हुआ है। पूरी दुनिया में भारत की जय-जय हो रही है। प्रधानमंत्री श्री नरेंद्र मोदी जी के मार्गदर्शन में मध्यप्रदेश में 5 करोड़ 18 लाख से अधिक हितग्राहियों को निःशुल्क खाद्यान्न वितरित किया गया है। 4 करोड़ 1 लाख से अधिक नागरिकों के जन धन खाते खोले गए है। गांव में हर घर में नल से पानी लाने का अभियान शुरू किया है, जिसके अंतर्गत 57 लाख घरों में नल कनेक्शन एवं 38 लाख से अधिक पीएम आवास ग्रामीण क्षेत्र में और 7 लाख आवास शहरी क्षेत्रों में दिये जा चुके हैं। अटल पेंशन योजना से 30 लाख 21 हजार लोग लाभान्वित हुए है। वहीं मुख्यमंत्री जीवन ज्योति योजना के अंतर्गत 81 लाख 75 हजार लोगों को बीमा की सुविधा मिली है। मुद्रा योजना के अंतर्गत 95 लाख 47 हजार हितग्राहियों को 34 हजार करोड़ से अधिक के ऋण दिए गए हैं। 2009 से 2014 के बीच रेलवे के बजट का आवंटन 632 करोड़ रूपए था, जो 2021-22 में बढ़कर 7700 करोड़ और 2023-24 में बढ़कर 13607 करोड़ रूपए हो गया है। वहीं, 2005-06 से लेकर 2013-14 तक 9 वर्षों में सड़कों के निर्माण के लिए प्रदेश को केवल 662 करोड़ रूपए स्वीकृत किए गए थे। वहीं, इसके बाद 2022-23 तक 9 वर्षों में 52613 करोड़ रूपए सड़क निर्माण के लिए स्वीकृत किए गए हैं। 4906 कि.मी. राष्ट्रीय राजमार्ग सड़कों का निर्माण किया जा चुका है। मध्यप्रदेश सिंचाई के मामले में 45 लाख हेक्टेयर

बीते 9 वर्षों में प्रधानमंत्री श्री नरेंद्र मोदी जी की सरकार अगर देश में बड़े बदलाव ला सकी है, तो उसका आधार है टारगेटेड डिलीवरी और लॉस्ट माइल डिलीवरी।

यही मोदी सरकार की सबसे बड़ी उपलब्धियां भी हैं। मोदी सरकार ने हर काम की समय सीमा तय की और हर योजना का 100 प्रतिशत लाभ अंतिम व्यक्ति तक पहुंच सके, यह सुनिश्चित किया।

तक पहुंचा है तो इसके पीछे प्रधानमंत्री श्री नरेन्द्र मोदी जी का भरपूर सहयोग है।

44500 करोड़ से अधिक की केन बेतवा लिंक परियोजना स्वीकृत करके प्रधानमंत्री जी ने बुन्देलखण्ड के तस्वीर और वहां की जनता की तकदीर बदलने का काम किया है। प्रधानमंत्री श्री नरेंद्र मोदी जी के नेतृत्व में एक वैभवशाली, गौरवशाली और संपन्न भारत का निर्माण हो रहा है, आज भारत विश्वगुरु बनने की ओर तेजी से अग्रसर है। सुरक्षित भारत और आत्मविश्वास से भरा भारत आज दुनिया को दिशा दिखा रहा है।

जनता के विश्वास पर खरी उतर रही मोदी सरकार: भूपेंद्र यादव

2014 से पहले देश में जो सरकार थी, उसमें सत्ता के ऐसे केंद्र बन गए थे, जो संविधानेत्तर थे और उनकी देश के संविधान के प्रति कोई जवाबदेही नहीं थी। देश पॉलिसी पैरालिसिस का शिकार था। अर्थव्यवस्था ढेर हो रही थी और भ्रष्टाचार की स्थिति यह थी कि सरकार के मंत्री ही जेल चले जाते थे। 2014 के चुनाव में जनता ने जनादेश दिया और प्रधानमंत्री श्री नरेंद्र मोदी जी के नेतृत्व में नई सरकार बनी। देश की जनता ने पूर्ण बहुमत से सरकार बनाकर जो विश्वास जताया था, बीते 9 वर्षों में प्रधानमंत्री श्री नरेंद्र मोदी जी की सरकार ने अपने कामकाज से उस भरोसे को सही साबित कर दिया है।

लक्षित नीतियां, अंतिम व्यक्ति तक पहुंचा योजनाओं का लाभ

बीते 9 वर्षों में प्रधानमंत्री श्री नरेंद्र मोदी जी की सरकार अगर देश में बड़े बदलाव ला सकी है, तो उसका आधार है टारगेटेड डिलीवरी और लॉस्ट माइल डिलीवरी। यही मोदी सरकार की सबसे बड़ी उपलब्धियां भी हैं। मोदी सरकार ने हर काम की समय सीमा तय की और हर योजना का 100 प्रतिशत लाभ अंतिम व्यक्ति तक पहुंच सके, यह सुनिश्चित किया। प्रधानमंत्री श्री मोदी जी ने 2014 में शपथ लेते ही कहा था कि मेरी सरकार, गरीबों की सरकार है। बीते 9 वर्षों में उनकी सरकार ने जो काम किए हैं, उनसे हर गरीब को सुरक्षा और गरिमा मिली है। मोदी सरकार ने आधुनिक टेक्नोलॉजी, अपने विजन और कार्यक्षमता के आधार पर हर गरीब तक योजनाओं का लाभ पहुंचाया। पहले जहां हम टी.बी. और पोलियो जैसी बीमारियों की वेक्सीन नहीं बना पाए, हमने कोरोना संकट में रिकॉर्ड समय में कोरोना की वेक्सीन बनाई और अंतिम व्यक्ति तक पहुंचाई। 3.5 करोड़ से अधिक लोगों को प्रधानमंत्री आवास दिये गए। स्व. लोहिया जी ने जिन दो विषयों को भारतीय महिलाओं की सबसे बड़ी समस्या बताया था, उन्हें मोदी सरकार ने हल किया है। देश में 11.72 करोड़ इज्जत घरों का निर्माण किया गया है। 12 करोड़ घरों में नल से स्वच्छ जल पहुंच रहा है और उज्जवला योजना में 9.6 करोड़ से अधिक गैस कनेक्शन देकर महिलाओं के जीवन को आसान बनाया है। कोविड संकट में मोदी सरकार ने 80 करोड़ गरीबों को मुफ्त राशन देना शुरू किया। आयुष्मान योजना में प्रत्येक गरीब व्यक्ति को 5 लाख रुपये तक का मुफ्त इलाज मिल रहा है।

तुष्टिकरण नहीं, सशक्तिकरण पर विश्वास करती है मोदी सरकार

मोदी सरकार के लिए सामाजिक न्याय का आशय किसी का तुष्टिकरण नहीं है, बल्कि वह पिछड़ों के सशक्तिकरण पर विश्वास करती है। वोट बैंक की राजनीति को नकारते हुए मोदी सरकार ने उच्च शिक्षा में सामान्य वर्ग के कमजोर आय वर्ग के छात्र-छात्राओं को 10 प्रतिशत आरक्षण दिया। कांग्रेस की सरकारों ने काका कालेलकर कमीशन और फिर मंडल कमीशन की सिफारिशों को ठंडे बस्ते में डाले रखा।

मोदी सरकार ने सत्ता में आने के बाद पिछड़ा वर्ग आयोग को संवैधानिक दर्जा दिया। सरकार ने दिव्यांगों की कैटेगरी को 7 से बढ़ाकर 21 किया, ताकि हर तरह के दिव्यांगों तक सरकार की योजनाओं का लाभ पहुंच सके। मोदी सरकार ने सीमांत किसानों की कठिनाइयों को ध्यान में रखते हुए उनकी तात्कालिक आवश्यकता की पूर्ति के लिए उन्हें प्रतिवर्ष 6 हजार रुपये की किसान सम्मान निधि देना शुरू किया।

अधोसंरचना के क्षेत्र में हुए अभूतपूर्व काम

देश की आजादी के बाद से लेकर 2014 के पहले तक अधोसंरचना के विकास के जितने काम नहीं हुए थे, उससे कहीं ज्यादा विकास कार्य मोदी सरकार के 9 वर्षों में हुए हैं। 2014 के पहले देश में 74 एयरपोर्ट थे, जबकि 2014 के बाद के 9 वर्षों में इतने ही नए एयरपोर्ट बनाए गए हैं। मोदी सरकार के पहले तक देश में 91287 किलोमीटर सड़कें थीं, जबकि मोदी सरकार के 9 वर्षों में 53868 किलोमीटर नई सड़कें बनाई गई हैं। इस सरकार के समय पहली बार वाटर वे के विकास के बारे में सोचा गया और 111 वाटर वे बनाए गए। 20 वंदे भारत ट्रेनें देश के यात्रियों को वर्ल्ड क्लास सुविधाएं उपलब्ध करा रही हैं, वहीं 15 शहरों में मेट्रो ट्रेनों का परिवहन शुरू किया गया है, जो कि पहले 5 शहरों में ही चलती थीं। 2014 तक देश में 7 एम्स हुआ करते थे, मोदी सरकार ने 15 नए एम्स स्थापित किए। पहले देश में 641 मेडिकल कॉलेज थे, जबकि बीते 9 सालों में 700 नए कॉलेज खोले गए हैं। 7 नए आईआईएम और 390 नए विश्वविद्यालय खोले गए हैं। सरयू नहर, बोगीबील ब्रिज और केरल के कोलम बायपास जैसी जो परियोजनाएं बरसों से अटकी हुई थीं, उन्हें पूरा किया गया है। देश के सुदूर अंचलों और सीमावर्ती क्षेत्रों तक हर मौसम में आने-जाने की सुविधा मिली है तथा इसमें लगने वाला समय भी कम हुआ है।

अविस्मरणीय हैं मोदी सरकार के 9 साल

मोदी सरकार के 9 सालों में देश में अर्थव्यवस्था को टेक्नोलॉजी से जोड़ा गया और आज देश में एक डिजिटल क्रांति आई हुई है। देश का निर्यात रिकॉर्ड स्तर पर है और भारत सबसे तेजी से बढ़ती अर्थव्यवस्था वाला देश बन गया है। भारत ग्लोबल इनोवेशन इंडेक्स में 45 वें स्थान पर है और देश में 100 से अधिक यूनिकॉर्न हैं। देश में नई शिक्षा नीति लागू की गई है, जो भविष्य की आवश्यकताओं को पूरा करेगी। देश में नए स्पोर्ट्स कल्चर की शुरुआत हुई है। मोदी सरकार ने अयोध्या में श्री राम मंदिर की 500 साल पुरानी समस्या को न्यायिक प्रक्रिया के माध्यम से सुलझाया है, तो वहीं बुद्धा सर्किट, महाकाल महालोक, सोमनाथ, करतारपुर साहिब कॉरिडोर, केदारनाथ धाम आदि के विकास से देश के धार्मिक, सांस्कृतिक वैभव को नई ऊंचाइयां दी हैं। एक देश में दो निशान-दो विधान की बिडंबना से मुक्ति के लिए मोदी सरकार ने कश्मीर से धारा 370 को समाप्त किया। रक्षा उत्पादन में देश आत्मनिर्भरता की ओर बढ़ रहा है। देश की जैव विविधता को समृद्ध करने के लिए प्रोजेक्ट चीता की शुरुआत की गई है। भारत जी-20 के अध्यक्ष के रूप में उन देशों का नेतृत्व कर रहा है, जिन देशों में वैश्विक अर्थव्यवस्था की 75 प्रतिशत हिस्सेदारी है।

बीते 9 सालों में मोदी सरकार ने अविस्मरणीय काम किए हैं और सरकार की घरेलू नीतियों की वजह से सारी दुनिया में देश की साख तथा भारत और प्रधानमंत्री मोदी जी का मान-सम्मान बढ़ा है। ▪

कार्यकर्ता जनता को भाजपा के विकास की कहानी बतायें: विष्णुदत्त शर्मा

हमारा नेतृत्व आदर्श है, जिसने देश और प्रदेश में इतिहास रचा है। हमें अपने नेतृत्व पर गर्व है। एक तरफ प्रधानमंत्री श्री मोदी जी के नेतृत्व में भारत ने दुनिया में अपना स्थान बनाया है, तो मुख्यमंत्री श्री शिवराजसिंह चौहान जी ने अपनी मेहनत और संवेदनशीलता से जनता का विश्वास जीता है।

पहले की सरकारें जहां रोटी, कपड़ा और मकान की सिर्फ बातें करती थीं, प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी जी की सरकार ने उसे साकार करके हर गरीब का जीवन स्तर ऊपर उठाया है।

आज जो युवा हैं, उन्हें देश और मध्यप्रदेश में कांग्रेस सरकारों के समय की दुरावस्था की जानकारी नहीं है। दूसरी तरफ प्रधानमंत्री श्री नरेंद्र मोदी जी की सरकार ने अपने 9 सालों में सिर्फ देश और प्रदेश की तस्वीर ही नहीं बदली, बल्कि राजनीति में एक नई कार्य संस्कृति की शुरुआत की है। हमें युवा पीढ़ी को इस बारे में जागरूक करना है। प्रधानमंत्री श्री नरेंद्र मोदी जी की सरकार अपने 9 साल पूरे कर रही है।

इस अवसर पर विशेष जनसंपर्क अभियान चलाया जा रहा है। कार्यकर्ता, पदाधिकारी और जनप्रतिनिधि इस अभियान को सफल बनाने में पूरी ताकत से जुट जाएं और घर-घर जाकर बंटाढार युग का सच और भाजपा की विकास गाथा लोगों को बताएं।

हमारे नेतृत्व ने रचा इतिहास, हमें उस पर गर्व है

हमारा नेतृत्व आदर्श है, जिसने देश और प्रदेश में इतिहास रचा है। हमें अपने नेतृत्व पर गर्व है। एक तरफ प्रधानमंत्री श्री मोदी जी के नेतृत्व में भारत ने दुनिया में अपना स्थान बनाया है, तो मुख्यमंत्री श्री शिवराजसिंह चौहान जी ने अपनी मेहनत और संवेदनशीलता से जनता का विश्वास जीता है। पहले की सरकारें जहां रोटी, कपड़ा और मकान की सिर्फ बातें करती थीं, प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी जी की सरकार ने उसे साकार करके हर गरीब का जीवन स्तर ऊपर उठाया है। श्री मोदी जी की सरकार ने हर गरीब को छत दी है, कोई भूखा न सोए, इसलिए मोदी सरकार हर गरीब को पांच किलो अनाज दे रही है। पांच लाख रुपये तक हर गरीब को मुफ्त इलाज मिल रहा है। दूसरी तरफ

प्रदेश की शिवराज सरकार एक बीमारू राज्य को विकसित बनाकर, स्वर्णिम मध्यप्रदेश बनाने की दिशा में बढ़ रही है।

भाजपा सरकारों ने असंभव को संभव बना दिया

केंद्र की मोदी सरकार ने अपने 9 सालों के कार्यकाल में ऐसे-ऐसे काम किए हैं, जो असंभव लगते थे। जिस राम मंदिर के लिए लाखों लोगों ने अपने प्राणों का बलिदान दिया, प्रधानमंत्री श्री मोदी जी के नेतृत्व में भव्य श्री राम मंदिर का निर्माण चल रहा है। कश्मीर से धारा 370 की समाप्ति के लिए डॉ. श्यामाप्रसाद मुखर्जी जी ने बलिदान दिया, वह धारा 370 कश्मीर से हटा दी गई है। पूर्व प्रधानमंत्री स्व. श्री अटलजी ने गांव-गांव को सड़कों से जोड़ने का जो सपना देखा था, उसे मुख्यमंत्री श्री शिवराजसिंह चौहान जी की सरकार ने साकार किया है। मध्यप्रदेश आज विकास का मॉडल बन गया है। लाड़ली लक्ष्मी योजना ने देश-प्रदेश में इतिहास रचा है और 45 लाख से अधिक बेटियां लाड़ली लक्ष्मी बन चुकी हैं। प्रदेश में पहले जहां सिर्फ 7 लाख हेक्टेयर क्षेत्र में सिंचाई होती थी, वहीं अब 45 लाख हेक्टेयर क्षेत्र में सिंचाई हो रही है। किसानों के लिए ई-मंडी जैसी आधुनिक सुविधाएं उपलब्ध हैं। यही वजह है कि जनता हमारी सरकारों पर विश्वास करती है।

कांग्रेस के जींस में देशद्रोह और भ्रष्टाचार

फूट डालो और राज करो की नीति कांग्रेस के खून में है। छल-कपट की राजनीति करने वाले, प्रदेश को दुरावस्था में ढकेलकर बंटाढार करने वाले कांग्रेस के नेता आज फिर झूठ परोस रहे हैं। ये वही नेता हैं, जिनके बारे में कांग्रेस सरकार के मंत्री ने कहा था कि ये सबसे बड़े भू माफिया, शराब माफिया और रेत माफिया हैं। 15 महीने की कांग्रेस सरकार के एक और मंत्री ने कहा था कि भ्रष्टाचार इतना बढ़ गया है कि टीआई रेट तय करते हैं और पैसा ऊपर तक जाता है। इन्होंने वल्लभ भवन को दलाली का अड्डा बना दिया था। भ्रष्टाचार और देशद्रोह कांग्रेस के जींस में है।

30 दिनों के अभियान में प्रवक्ता बनकर मैदान में उतरे हर कार्यकर्ता

प्रधानमंत्री श्री मोदी जी की सरकार के 9 साल पूरे होने पर पार्टी द्वारा विशेष जनसंपर्क अभियान शुरू किया जा रहा है। इस अभियान के दौरान प्रत्येक कार्यकर्ता को पार्टी के प्रवक्ता के रूप में मैदान में उतरना है और कांग्रेस की करतूतों तथा भाजपा सरकार की उपलब्धियों को हर घर तक, हर व्यक्ति तक पहुंचाना है। हम भाजपा सरकारों की योजनाओं और संगठन की ताकत के साथ मैदान में उतरेंगे तथा 2023 और 2024 के चुनावों में जीत का इतिहास बनाएंगे। वरिष्ठ पार्टीजनों का आशीर्वाद लेकर हमें मैदान में उतरना है और हर बूथ पर विजय के संकल्प को साकार करना है।

हमारे पास नरेन्द्र मोदी एवं देवदुर्लभ कार्यकर्ता हैं- शिवराज सिंह चौहान

हम अत्यंत भाग्यशाली है कि हम भाजपा के कार्यकर्ता है, जिसका जन्म भारत को परम वैभव पर ले जाने के लिए हुआ है। 100 वर्ष पूर्व एक नरेन्द्र (विवेकानंद) ने कहा था, भारत माता फिर से अंगड़ाई ले रही है और विश्व गुरू के पथ पर अग्रसर हो रही है और आज दूसरे नरेन्द्र इसको पूरा कर रहे है। एक संपन्न, शिक्षित, विकसित भारत बनाने का काम हो रहा है। मध्यप्रदेश में हम जीत का रिकार्ड बनायेंगे।

कांग्रेस के पास क्या है। हमारे पास नरेन्द्र मोदी एवं देवदुर्लभ कार्यकर्ता है। कर्नाटक में राष्ट्र विरोधी ताकतें रंग दिखाने लगी है। भाजपा की सरकार में राष्ट्र विरोधी ताकतों के साथ सख्ती से पेश आयेंगे। भाजपा सरकार से पूर्व प्रदेश की स्थिति क्या थी सभी को मालूम है। आज प्रदेश में विभिन्न एक्सप्रेस-वे हैं। कांग्रेस के समय बिजली आती थी तो खबर बनती थी अब बिजली जाती है तो खबर बनती है।

आज चारों दिशाओं और हर वर्ग के लिए प्रदेश में काम हो रहा है। भाजपा की कांग्रेस से कोई तुलना नहीं है। लाड़ली बहना योजना से कांग्रेस घबराई हुई है इसलिए नारी सम्मान की बात कर रही है। लाड़ली बहना योजना महिला सशक्तिकरण का मंत्र है। हमने कहा है तो बजट में प्रावधान भी किया है। कांग्रेस का वचन पत्र झूठ का पुलिंदा है। कांग्रेस बेरोजगारी भत्ते की बात करती है, हम बेरोजगारी भत्ता नहीं काम सीखो और पैसा कमाओ की बात करते है। इसलिए सीखो कमाओ योजना शुरू की है। कांग्रेस की सरकार में तबादला उद्योग चल रहा था। इनके परिचितों के यहां आईटी की रेड भी पड़ी थी। हमने बच्चों की 64 लाख की फीस भरी है। किसानों का ब्याज माफ करके कांग्रेस के पाप उतार रहे है।

विकास और जनकल्याण के काम में हमारा कांग्रेस कोई मुकाबला नहीं कर सकती है। इसलिए आमजन के बीच पहुंचकर केन्द्र और राज्य सरकार की योजनाओं से अवगत कराएं।

मोदी जी का कार्यकाल इतिहास के स्वर्ण अक्षरों में लिखा जायेगा - नरेन्द्र सिंह तोमर

पूर्व प्रधानमंत्री स्व. श्री अटल बिहारी वाजपेयी जी की सरकार ने देश की स्थिति को सुधारा और आज भी उस सरकार के कार्यकाल की कोई आलोचना नहीं कर सकता। श्री वाजपेयी जी के बाद अब देश में प्रधानमंत्री श्री नरेंद्र मोदी जी के नेतृत्व वाली पूर्ण बहुमत की सरकार है जो और भी सशक्त है।

प्रधानमंत्री श्री मोदी जी का व्यक्तित्व और कृतित्व हर कार्यकर्ता के लिए प्रेरणादायी है। मोदी सरकार ने ऐसे काम किए हैं कि देश की आजादी के बाद प्रधानमंत्री श्री मोदी जी का कार्यकाल स्वर्णिम अक्षरों में लिखा जायेगा। हमारे अनेक युवा साथियों को यह पता नहीं होगा कि 2003 से पूर्व मध्यप्रदेश की स्थिति कैसी थी?

न सड़क, न बिजली और न पानी था। लेकिन आज हम गर्व से कह सकते हैं कि प्रदेश में मौलिक आवश्यकता की हर चीज मुख्यमंत्री श्री शिवराज सिंह जी के कुशल नेतृत्व वाली भाजपा सरकार ने मुहैया कराई है। रोजगार शिक्षा गारंटी योजना ने पायलट बनने के सपने को भी साकार किया।

इसी तरह प्रधानमंत्री श्री नरेंद्र मोदी जी की सरकार की योजनाएं लोगों का जीवन बदल रही

हैं। इन योजनाओं के लाभार्थी हर घर में मौजूद हैं। हमें इन लाभार्थियों से संपर्क करना होगा। केंद्र और राज्य की भाजपा सरकारों की उपलब्धियों पर सभी को गर्व है और जब कार्यकर्ता गर्व तथा उत्साह से भरे होंगे तो 2023 और 2024 में हमारी जीत को कोई नहीं रोक सकता।

मध्यप्रदेश जैसे कार्यकर्ता पूरे देश में नहीं: कैलाश विजयवर्गीय

मध्यप्रदेश के कार्यकर्ता जैसे गंभीर, समझदार कार्यकर्ता पूरे देश में देखने को नहीं मिल सकते। यह स्व. श्री कुशाभाऊ ठाकरे जी द्वारा सींची गई खेती है, जिसे कोई पराजित नहीं कर सकता। प्रभारी मंत्री और वरिष्ठ पदाधिकारी जब भी किसी जिले में जाएं, तो उन बुजुर्ग कार्यकर्ताओं से अवश्य मिलें, जिन्होंने प्रदेश में संगठन को खड़ा करने में योगदान दिया है। कर्नाटक चुनाव में 37 सीटें ऐसी रही हैं, जिनमें पार्टी प्रत्याशी मात्र 500 से 9000 वोटों से पराजित हुए हैं। हमारे पास सब कुछ है। हमारी सरकारें विकास के कीर्तिमान बढ़ा रही हैं और लोगों का जीवन बदलने का काम कर रही हैं। सरकार की योजनाओं को लेकर अगर प्रदेश के सभी कार्यकर्ता मैदान में उतर जाएं, तो हमारी जीत सुनिश्चित है।

सरकार चलाना भाजपा को आता है - मुरलीधर राव

केन्द्र सरकार के 9 वर्ष के सफल कार्यकाल के अभियान को अभूतपूर्व बनाने जा रहे है। लोकसभा और विधानसभा में सम्मेलन होंगे। देश में अगर सरकार चलाना किसी को आता है तो भाजपा को आता है। हम चुनाव जीत रहे है और डंके की चोट पर जीत रहे है। मध्यप्रदेश दिल्ली के लिए मजबूत खंबा है। जैसा इतिहास गुजरात में रचा, वैसा मध्यप्रदेश में दोहरायेंगे। हमारी चुनौती कांग्रेस नहीं, भाजपा की जीत का इतिहास बनाना है। भ्रष्टाचार ही कांग्रेस की पहचान है। सिंचाई और कृषि में मध्यप्रदेश ने रिकार्ड बनाया है और रोल मॉडल बना है, इसका श्रेय पार्टी नेतृत्व और मुख्यमंत्री को है।

अनुसूचित जाति और जनजाति क्षेत्रों में भाजपा रिकार्ड सीट जीतेगी। समाज को एक रखने का काम भाजपा ही कर सकती है। संत रविदास जी का मंदिर बनाना समाज को एक करने का कार्य है, जो सिर्फ भाजपा ही कर सकती है। भाजपा की छाती खोलेंगे तो अजा, अजजा ही निकलेंगे जैसे हनुमान जी की छाती में राम सीता निकले थे। भारत में टुकड़े-टुकड़े गैंग के साथ कोई खड़ा है तो वह कांग्रेस है। कांग्रेस के नेता ऐसे लोगों के साथ जुड़ें हुए हैं, जिन्हें हमें सोशल मीडिया के माध्यम से उजागर करना है।

मध्यप्रदेश संगठनात्मक दृष्टि से बहुत आगे- अजय जामवाल

मध्यप्रदेश के कार्यकर्ता आदर्श के रूप में है। यह कार्यकर्ता मध्यप्रदेश के रीढ़ की हड्डी है। मध्यप्रदेश संगठनात्मक दृष्टि से बहुत आगे है। श्रद्धेय श्री कुशाभाऊ ठाकरे जी से लेकर स्व. श्री प्यारेलाल खण्डेलवाल जी ने कार्यकर्ता गढ़ने का काम किया है। संगठन और सरकार के कार्यो की दृष्टि से मध्यप्रदेश देश का नंबर वन राज्य है।

केन्द्र और प्रदेश सरकार के जनकल्याणकारी कार्यों के प्रदेश में हर घर में लाभार्थी है, उन्हें भारतीय जनता पार्टी से जोड़ने का काम करना है। हमारे पूर्वजों ने हमें मंडल स्तर तक मजबूत किया है और अब हम सभी मिलकर शक्ति केन्द्र को मजबूत करें। आज हम देश और प्रदेश का विकास कर रहे है।

सौ फीसदी काम पूरा होने तक रुकना नहीं है: हितानंद जी

हमने स्व. श्री कुशाभाऊ ठाकरे जी की जयंती से बूथ सशक्तीकरण अभियान शुरू किया था। इस अभियान के अंतर्गत पूरे देश में 75 लाख एंट्री की गई हैं, जिनमें से 37 लाख से अधिक मध्यप्रदेश की हैं। इस अभियान के अंतर्गत प्रदेश की 100 विधानसभाओं में 90 प्रतिशत से अधिक काम किया जा चुका है। हम अब तक 80 प्रतिशत से अधिक पन्ना प्रमुखों की नियुक्तियां कर चुके हैं, लेकिन हमें 100 फीसदी काम पूरा हो जाने तक रुकना नहीं है। इसके बाद बूथ सशक्तीकरण का भी दूसरा चरण बूथ विजय संकल्प अभियान चल रहा है। अब तक 5948 क्लस्टर और 719 मंडलों में यह अभियान शुरू हो चुका है। इसमें शक्ति केंद्रों पर संगत, पंगत और खेलों के कार्यक्रम होंगे तथा कार्यकर्ता बूथ जीतने का संकल्प लेंगे। इस अभियान में सभी जनप्रतिनिधियों एवं पदाधिकारियों की सहभागिता रहनी चाहिए। प्रधानमंत्री श्री मोदी जी की सरकार के 9 वर्ष पूर्ण होने पर विशेष अभियान शुरू किया जा रहा है, जिसमें पार्टी कार्यकर्ताओं, पदाधिकारियों और जनप्रतिनिधियों की सहभागिता आवश्यक रूप से होना चाहिए।

जो काम प्रदेश की भाजपा सरकार ने किया, वो पहले किसी ने नहीं किया: लालसिंह आर्य

मध्यप्रदेश में आजादी के बाद 47 सालों तक कांग्रेस की सरकारें रहीं, लेकिन

कभी किसी सरकार ने अनुसूचित जाति के भाई-बहनों का महाकुंभ आयोजित करने की बात नहीं सोची। प्रदेश की शिवराज सरकार ने फरवरी में सागर में तीसरा महाकुंभ आयोजित किया था, जिसमें समाज के एक लाख से अधिक लोग मौजूद रहे। इस महाकुंभ में मुख्यमंत्री श्री शिवराजसिंह चौहान जी ने सागर में 100 करोड़ की लागत से संत रविदास जी का मंदिर बनाने की घोषणा की थी, जिसका भूमिपूजन जल्द ही होने वाला है। संत रविदास जी के मंदिर निर्माण के लिए एक अभियान चलेगा, जिसमें हर घर से एक मुट्ठी मिट्टी और नदी, बावड़ियों का जल एकत्र किया जाएगा। अभियान के लिए प्रदेश, जिला, विधानसभा और मंडल स्तर पर टोलियों का गठन किया जाएगा। इस दौरान प्रत्येक विधानसभा में संत रविदास रथ भ्रमण करेगा, जिस पर संत रविदास जी का चित्र होगा। यह रथ अनुसूचित जाति बहुल गांवों, बस्तियों में जाएगा और सामाजिक समरसता का संदेश देगा। इस दौरान मंदिर के लिए शिलापूजन भी होगा तथा शिलाओं को मंदिर निर्माण स्थल तक पहुंचाया जाएगा। मंदिर निर्माण के लिए एक ट्रस्ट का गठन किया जाएगा। संत रविदास जी ने सामाजिक समरसता का संदेश दिया था तथा मध्यप्रदेश में संत रविदास जी के भव्य मंदिर के निर्माण से पूरे देश में यह संदेश जाएगा। ▪

जन सुरक्षा योजनाओं ने लोगों को प्रभावी सामाजिक सुरक्षा कवच प्रदान किया है - प्रधानमंत्री

8 साल पहले शुरू की गई जन सुरक्षा योजनाएँ करोड़ों भारतीयों के लिए मजबूत समर्थन का स्रोत रहीं हैं। इन योजनाओं ने लोगों को एक प्रभावी सामाजिक सुरक्षा कवच प्रदान किया है। सभी लाभार्थियों को मेरी शुभकामनाएं।

'200 पार' के संकल्प को पूरा करेंगे - विष्णुदत्त शर्मा

मध्यप्रदेश, भाजपा के कार्यकर्ताओं तथा प्रधानमंत्री श्री नरेन्द्र मोदी जी की योजनाओं का गढ़ है। प्रदेश के पार्टी कार्यकर्ताओं ने कांग्रेस को पहले भी आईना दिखाया है और एक बार फिर आईना दिखाएंगे। 2023 का चुनाव भाजपा अपने कार्यकर्ताओं के बल पर, अपने नेतृत्व के विश्वास पर और गरीबों के जीवन बदलने के अभियान पर लड़ेगी और ऐतिहासिक बहुमत से जीतेगी।

भारतीय जनता पार्टी के कार्यकर्ता विषम परिस्थितियों में अपने दायित्वों का जिस जिम्मेदारी से निर्वहन करते हैं वह अनुकरणीय है। विश्व का सबसे बड़ा राजनैतिक दल बनाने में कार्यकर्ताओं की भूमिका अहम् है। हम अंत्योदय की कल्पना को साकार करने वाले कार्यकर्ता हैं। हमारे संगठन और सत्ता का ध्येय सत्ता के माध्यम से जनता की सेवा करना है। कार्यकर्ता मध्यप्रदेश में 51 प्रतिशत वोट शेयर के साथ ''अबकी बार 200 पार'' के संकल्प को पूरा करेंगे।

हमारी सरकारों ने हर गरीब का जीवन बदला है

प्रधानमंत्री श्री मोदी जी के नेतृत्व में भारतीय जनता पार्टी की केंद्र सरकार और मुख्यमंत्री श्री शिवराजसिंह चौहान के नेतृत्व में प्रदेश सरकार ऐतिहासिक काम कर रही है। हमारी सरकारों ने हर गरीब का जीवन बदला है। योजनाओं को जमीन पर उतारकर सामाजिक परिवर्तन लाने का काम भाजपा ने किया है।

यह मध्यप्रदेश है और भाजपा के कार्यकर्ताओं तथा प्रधानमंत्री श्री नरेन्द्र मोदी जी की योजनाओं का गढ़ है। प्रदेश के पार्टी कार्यकर्ताओं ने कांग्रेस को पहले भी आईना दिखाया है और एक बार फिर आईना दिखाएंगे। 2023 का चुनाव भाजपा अपने कार्यकर्ताओं के बल पर, अपने नेतृत्व के विश्वास पर और गरीबों के जीवन बदलने के अभियान पर लड़ेगी और ऐतिहासिक बहुमत से जीतेगी। विपक्ष को हम अपनी योजनाओं तथा विकास के कार्य से मुहतोड़ जवाब देने में सक्षम हैं। ▪

किसान-कल्याण के कार्य हो रहे हैं-मुख्यमंत्री

किसी किसान को डिफॉल्टर नहीं रहने देंगे, हर किसान को मिलेगा जीरो प्रतिशत ब्याज पर फसल ऋण

परिवर्तित मध्यकालिक फसल ऋण के ब्याज की राशि भी सरकार भरेगी

गत 3 वर्ष में 2 लाख 31 हजार 322 करोड़ रूपए की राशि किसानों के खातों में अंतरित

सरकार ने विभिन्न योजनाओं में गत 3 वर्ष में 2 लाख 31 हजार 322 करोड़ रूपए की राशि किसानों के खातों में डाली है।

इसमें 94 हजार 394 करोड़ रूपए फसल उपार्जन की, 47 हजार 188 करोड़ रूपए की राशि खेती के लिये बिजली प्रदाय के अनुदान की, 15 हजार 541 करोड़ रूपए मुख्यमंत्री किसान सम्मान निधि की, 7 हजार 963 करोड़ रूपए मुख्यमंत्री किसान-कल्याण योजना की, 4 हजार 82 करोड़ रूपए फसल मुआवजा की, 115 करोड़ रूपए सोलर पंप पर अनुदान की और 4375 करोड़ रूपए की कृषि अधो-संरचना विकास की राशि शामिल है।

भाजपा सरकार किसानों की सरकार है, प्रधानमंत्री श्री मोदी जी के नेतृत्व में पूरे देश में किसान-कल्याण के कार्य हो रहे हैं। पुरानी सरकार ने कर्ज माफी के नाम पर किसानों को ठगा और उन्हें डिफॉल्टर बना दिया। उन्होंने 10 दिन में किसानों की कर्ज माफी की घोषणा की और सवा साल में 48 हजार करोड़ के कर्जे में से सिर्फ 6 हजार करोड़ का कर्जा माफ किया। यह किसानों के साथ बड़ा धोखा था। किसानों के सर पर कर्ज की गठरी लाद दी गई और वे डिफॉल्टर हो गए। इससे उन्हें फसल ऋण मिलना बंद हो गया। हमारी सरकार ऐसे प्रत्येक किसान की ब्याज की राशि भरेगी, जिससे वे डिफॉल्टर न रहे और उन्हें जीरो प्रतिशत ब्याज पर फसल ऋण योजना का लाभ मिल सके।

प्रदेश की सभी 4536 कृषक प्राथमिक सहकारी समितियों में योजना के आवेदन-पत्र भरने का कार्य शुरू हो गया। सभी प्राथमिक सहकारी समितियों में उन सबके नाम की सूची प्रकाशित की गई है, जो ब्याज की राशि न भर पाने के कारण डिफॉल्टर हो गए हैं। किसान अपनी सोसाइटी में जाएँ, सूची देखें और निःशुल्क आवेदन भरें। वे आवेदन की पावती भी प्राप्त करें। ऐसे सभी किसानों के ब्याज की राशि सरकार

भरेगी और इसी के साथ डिफाल्टर किसानों को भी जीरो प्रतिशत ब्याज पर अगली फसल के लिए फसल ऋण मिलना प्रारंभ हो जाएगा। ऐसे किसान जिनकी फसलों को नुकसान हुआ था, उनके अल्पकालिक फसल ऋण को मध्यकालिक फसल ऋण में परिवर्तित कर दिया गया था। ऐसे किसानों के ब्याज की राशि भी सरकार भरवा रही है। यह राशि लगभग 2123 करोड़ रूपए है।

सरकार ने विभिन्न योजनाओं में गत 3 वर्ष में 2 लाख 31 हजार 322 करोड़ रूपए की राशि किसानों के खातों में डाली है। इसमें 94 हजार 394 करोड़ रूपए फसल उपार्जन की, 47 हजार 188 करोड़ रूपए की राशि खेती के लिये बिजली प्रदाय के अनुदान की, 15 हजार 541 करोड़ रूपए मुख्यमंत्री किसान सम्मान निधि की, 7 हजार 963 करोड़ रूपए मुख्यमंत्री किसान-कल्याण योजना की, 4 हजार 82 करोड़ रूपए फसल मुआवजा की, 115 करोड़ रूपए सोलर पंप पर अनुदान की और 4375 करोड़ रूपए की कृषि अधो-संरचना विकास की राशि शामिल है। सरकार सदैव किसानों के साथ खड़ी है। कोविड जैसे संकट काल में भी सरकार ने निरंतर किसान-कल्याण के कार्य किए और बड़ी राशि उनके खाते में डाली। हाल ही में हुए फसल नुकसान की राशि भी किसानों को दी गई है। यदि कोई किसान मुआवजे से छूट गये हैं तो उसका भी सर्वे करवा कर उचित मुआवजा दिया जाएगा। ▪

आपरेशन कावेरी की सफलता पर गर्व मुख्यमंत्री श्री चौहान

प्रधानमंत्री श्री नरेंद्र मोदी जी के मार्गदर्शन में सूडान में फंसे भारतीयों को सुरक्षित निकालने के लिए चलाए गए आपरेशन कावेरी की सफलता पर हर भारतीय को गर्व है। प्रधानमंत्री श्री मोदी जी के नेतृत्व में सूडान में फंसे 3000 से अधिक भारतीयों को सुरक्षित निकालना देशवासियों के प्रति उनके समर्पण एवं सेवा-भाव को दर्शाता है। हर भारतीय को अपने प्रधान सेवक पर गर्व है। आपरेशन कावेरी से पुन: सिद्ध हो गया है कि मोदी है तो सब मुमकिन है। ▪

युवाओं को नई उड़ान- मुख्यमंत्री सीखो-कमाओ योजना

युवाओं को नई उड़ान देने के लिये प्रदेश में ऑन द जॉब ट्रेनिंग की सुविधा देते हुए मुख्यमंत्री सीखो-कमाओ योजना लागू की गई है। योजना में कम से कम एक लाख युवाओं को प्रतिष्ठानों में प्रशिक्षण उपलब्ध कराया जाएगा।

मुख्यमंत्री सीखो-कमाओ योजना में युवाओं के पंजीयन के बाद विभिन्न प्रतिष्ठानों में उन्हें हुनर सीखने की अवधि में आर्थिक सहायता के रूप में 8 से 10 हजार रूपए तक का स्टाइपेंड उपलब्ध कराया जायेगा। राज्य सरकार इस योजना में प्रतिष्ठानों से अनुबंध भी करेगी।

युवाओं को नई उड़ान देने के लिये प्रदेश में ऑन द जॉब ट्रेनिंग की सुविधा देते हुए मुख्यमंत्री सीखो-कमाओ योजना लागू की गई है। योजना में कम से कम एक लाख युवाओं को प्रतिष्ठानों में प्रशिक्षण उपलब्ध कराया जाएगा। मध्यप्रदेश के स्थानीय निवासी, 18 से 29 वर्ष के युवा, जिनकी शैक्षणिक योग्यता 12वीं अथवा आईटीआई या उच्च है, वे योजना में पात्र होंगे। चयनित युवाओं को छात्र प्रशिक्षणार्थी कहा जायेगा। प्रशिक्षण के बाद मध्य प्रदेश राज्य कौशल विकास एवं रोजगार निर्माण बोर्ड द्वारा स्टेट कॉउंसिल फॉर वोकेशनल ट्रेनिंग का प्रमाण-पत्र दिया जाएगा। युवाओं को प्रशिक्षण के साथ स्टाइपेंड मिलेगा, कौशल उन्नयन से उनके रोजगार के अवसर बढ़ेंगे और आमदनी का बेहतर मार्ग प्रशस्त होगा।

योजना से देश और प्रदेश के प्रतिष्ठित औद्योगिक तथा निजी संस्थानों को जोड़ा जाएगा। प्रतिष्ठान के पास पेन नंबर और जीएसटी पंजीयन होना आवश्यक होगा। प्रतिष्ठान अपने कुल कार्यबल के 15 प्रतिशत की संख्या तक छात्र प्रशिक्षणार्थियों को प्रशिक्षण दे सकेंगे। योजना में 12वीं या उससे कम कक्षा में उत्तीर्ण प्रशिक्षणार्थियों को 8 हजार रूपए, आईटीआई उत्तीर्ण को 8 हजार 500 रूपए, डिप्लोमा उत्तीर्ण को 9 हजार रूपए और स्नातक उत्तीर्ण या उच्च शैक्षणिक योग्यता वालों को 10 हजार रूपए प्रतिमाह स्टाइपेंड दिया जाएगा। स्टाइपेंड की 75 प्रतिशत राशि राज्य शासन की ओर से प्रशिक्षणार्थी को डीबीटी से भुगतान की जायेगी। संबंधित प्रतिष्ठान को निर्धारित न्यूनतम स्टाइपेंड की 25 प्रतिशत राशि प्रशिक्षणार्थी के बैंक खाते में जमा करानी होगी। ▪

बुजुर्गों को अब विमान से तीर्थ-यात्रा: मुख्यमंत्री

पहली बार विमान से प्रयागराज रवाना हुए प्रदेश के 32 बुजुर्ग तीर्थ-यात्री

प्रधानमंत्री श्री नरेन्द्र मोदी ने कहा था कि हमारी सरकार ने ऐसी व्यवस्था कर दी है, जिससे हवाई चप्पल पहनने वाले भी हवाई यात्रा कर सकेंगें। मुख्यमंत्री तीर्थ-दर्शन योजना में विमान से तीर्थ-यात्रा की व्यवस्था करना प्रधानमंत्री श्री मोदी की सोच को साकार करने का प्रयास है। यह यात्राएँ लगातार जारी रहेंगी।

सरकार ने प्रदेश के बुजुर्गों को हवाई जहाज से तीर्थ-यात्रा कराने का संकल्प लिया था। मनुष्य, भौतिक प्रगति के साथ आध्यात्मिक शांति चाहता है। भारत धर्म प्रधान देश है, भक्तिमार्ग में तीर्थ-यात्रा को प्रभु दर्शन का प्रभावी मार्ग माना गया है। हमारे बुजुर्ग बिना कष्ट के कम समय में तीर्थ कर आध्यात्मिक शांति प्राप्त कर सकें इस उद्देश्य से विमान से तीर्थ-यात्रा शुरू की गई है। रेल और विमान से मुख्यमंत्री तीर्थ दर्शन यात्रा लगातार जारी रहेगी।

भगवान की भक्ति में डूबने की अनुभूति प्रदान करती है तीर्थ-यात्रा

माता-पिता के समान हमारे बुजुर्ग तीर्थ-यात्रा पर विमान से रवाना हो रहे हैं। माना गया है कि राम नाम से मुख, ब्रह्म ज्ञान से हृदय, तीर्थ जाने से चरण और दान-पुण्य करने से हाथ पवित्र होते हैं। भारतीय संस्कृति में तीर्थ का बहुत महत्व है। भगवत प्राप्ति के तीन मार्ग क्रमशः भक्ति मार्ग, ज्ञान मार्ग और कर्म मार्ग बताए गए हैं। भगवान की भक्ति में डूबना ही भक्ति मार्ग है, तीर्थ-यात्रा यही अनुभूति प्रदान करती है। प्रदेश के बुजुर्गों को आध्यात्मिक शांति और आनंद की अनुभूति कराने के लिए ही गंगा-यमुना-सरस्वती नदियों के संगम स्थल तीर्थराज-प्रयागराज की यात्रा पर विमान से भेजा जा रहा है।

हवाई चप्पल वाले भी हवाई यात्रा कर सकेंगे

प्रधानमंत्री श्री नरेन्द्र मोदी ने कहा था कि हमारी सरकार ने ऐसी व्यवस्था कर दी है, जिससे हवाई चप्पल पहनने वाले भी हवाई यात्रा कर सकेंगें। मुख्यमंत्री तीर्थ-दर्शन योजना में विमान से तीर्थ-यात्रा की व्यवस्था करना प्रधानमंत्री श्री मोदी की सोच को साकार करने का प्रयास है। यह यात्राएँ लगातार जारी रहेंगी। योजना में अब तक 7 लाख 82 हजार बुजुर्ग रेल से तीर्थ-यात्रा कर चुके हैं।

विमान से तीर्थ-यात्राओं का क्रम निरंतर जारी रहेगा। प्रयागराज के साथ ही शिर्डी, मथुरा-वृंदावन, गंगासागर की यात्रा विमान से कराई जाएगी। साथ ही प्रदेशवासियों के जीवन को बेहतर बनाने के लिए विकास और कल्याण के कार्य निरंतर जारी रहेंगे। ▪

नया संसद भवन भारतवासियों की आकांक्षाओं और सपनों का प्रतिबिंब - नरेन्द्र मोदी

- ''नई संसद 140 करोड़ भारतीयों की आकांक्षाओं और सपनों का प्रतिबिंब है''
- ''ये विश्व को भारत के दृढ़ संकल्प का संदेश देता हमारे लोकतंत्र का मंदिर है''
- ''जब भारत आगे बढ़ता है, तो विश्व आगे बढ़ता है''
- ''यह हमारा सौभाग्य है कि हम पवित्र सेंगोल की गरिमा को बहाल कर सके। सेंगोल सदन की कार्यवाही के दौरान हमें प्रेरित करता रहेगा''
- ''हमारा लोकतंत्र हमारी प्रेरणा है और हमारा संविधान हमारा संकल्प''
- ''अमृत काल हमारी धरोहर को सहेजते हुए विकास के नए आयाम गढ़ने का काल है''
- ''आज का भारत दासत्व की मानसिकता को पीछे छोड़कर कला के प्राचीन वैभव को अंगीकार कर रहा है, यह नया संसद भवन इसी प्रयत्न का जीता-जागता उदाहरण है''
- ''हम इस भवन के कण-कण में एक भारत श्रेष्ठ भारत की भावना का अवलोकन करते हैं''
- ''यह पहली बार है कि श्रमिकों के योगदान को नई संसद में अमर कर दिया गया है''
- ''इस नए संसद भवन की हर ईंट, हर दीवार, हर कण गरीबों के कल्याण के लिए समर्पित होगी''
- ''यह 140 करोड़ भारतीयों का संकल्प है जो नई संसद को अर्पित किया गया है''

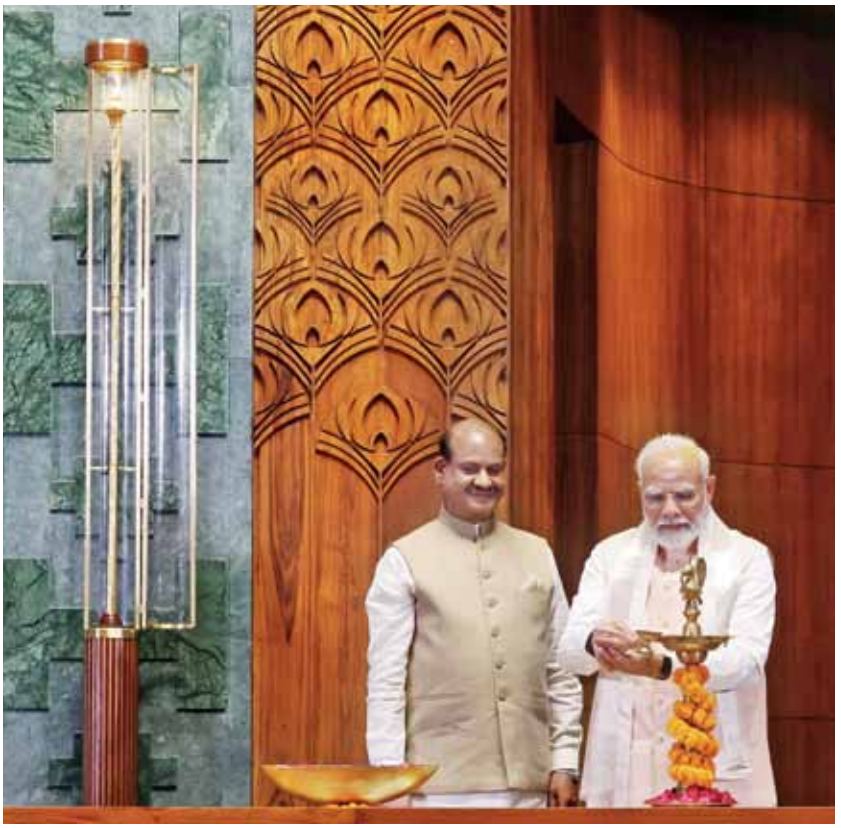

28 मई, 2023 का ये दिन, ऐसा ही शुभ अवसर है। देश, आजादी के 75 वर्ष होने पर अमृत महोत्सव मना रहा है। इस अमृत महोत्सव में भारत के लोगों ने अपने लोकतंत्र को संसद के इस नए भवन का उपहार दिया है।

हर देश की विकास यात्रा में कुछ पल ऐसे आते हैं, जो हमेशा के लिए अमर हो जाते हैं। कुछ तारीखें, समय के ललाट पर इतिहास का अमिट हस्ताक्षर बन जाती हैं। 28 मई, 2023 का ये दिन, ऐसा ही शुभ अवसर है। देश, आजादी के 75 वर्ष होने पर अमृत महोत्सव मना रहा है। इस अमृत महोत्सव में भारत के लोगों ने अपने लोकतंत्र को संसद के इस नए भवन का उपहार दिया है।

ये सिर्फ एक भवन नहीं है। ये 140 करोड़ भारतवासियों की आकांक्षाओं और सपनों का प्रतिबिंब है। ये विश्व को भारत के दृढ़ संकल्प का संदेश देता हमारे लोकतंत्र का मंदिर है। ये नया संसद भवन, योजना को यथार्थ से, नीति को निर्माण से, इच्छा शक्ति को क्रियाशक्ति से, संकल्प को सिद्धि से जोड़ने वाली अहम कड़ी साबित होगा। ये नया भवन, हमारे स्वतंत्रता सेनानियों के सपनों को साकार करने का माध्यम बनेगा। ये नया भवन, आत्मनिर्भर भारत के सूर्योदय का साक्षी बनेगा। ये नया भवन, विकसित भारत के संकल्पों की सिद्धि होते हुए देखेगा। ये नया भवन, नूतन और पुरातन के सह-अस्तित्व का भी आदर्श है।

नए रास्तों पर चलकर ही नए प्रतिमान गढ़े जाते हैं। आज नया भारत, नए लक्ष्य तय कर रहा है, नए रास्ते गढ़ रहा है। नया जोश है, नई उमंग है। नया सफर है, नई सोच है। दिशा नई है, दृष्टि नई है। संकल्प नया है, विश्वास नया है। और आज एक बार फिर पूरा विश्व, भारत को, भारत के संकल्प की दृढ़ता को, भारतवासियों की प्रखरता को, भारतीय जनशक्ति की जिजीविषा

को, आदर और उम्मीद के भाव से देख रहा है। जब भारत आगे बढ़ता है तो विश्व आगे बढ़ता है। संसद का ये नया भवन, भारत के विकास से, विश्व के विकास का भी आह्वान करेगा।

इस ऐतिहासिक अवसर पर, संसद की इस नई इमारत में पवित्र सेंगोल की भी स्थापना हुई है। महान चोल साम्राज्य में सेंगोल को, कर्तव्यपथ का, सेवापथ का, राष्ट्रपथ का प्रतीक माना जाता था। राजाजी और आदीनम् के संतों के मार्गदर्शन में यही सेंगोल सत्ता के हस्तांतरण का प्रतीक बना था। तमिलनाडु से विशेष तौर पर आए हुए आदीनम् के संत संसद भवन में हमें आशीर्वाद देने उपस्थित हुए थे। उनके ही मार्गदर्शन में लोकसभा में ये पवित्र सेंगोल स्थापित हुआ है। पिछले दिनों मीडिया में इसके इतिहास से जुड़ी बहुत सारी जानकारी उजागर हुई है। मैं इसके विस्तार में नहीं जाना चाहता। लेकिन मैं मानता हूं, ये हमारा सौभाग्य है कि इस पवित्र सेंगोल को हम उसकी गरिमा लौटा सके हैं, उसकी मान-मर्यादा लौटा सके हैं। जब भी इस संसद भवन में कार्यवाही शुरू होगी, ये सेंगोल हम सभी को प्रेरणा देता रहेगा।

भारत एक लोकतान्त्रिक राष्ट्र ही नहीं बल्कि लोकतन्त्र की जननी भी है, मदर ऑफ डेमोक्रेसी भी है। भारत आज वैश्विक लोकतन्त्र का भी बहुत बड़ा आधार है। लोकतन्त्र हमारे लिए सिर्फ एक व्यवस्था नहीं, एक संस्कार है, एक विचार है, एक परंपरा है। हमारे वेद हमें सभाओं और समितियों के लोकतान्त्रिक आदर्श सिखाते हैं। महाभारत जैसे ग्रन्थों में गणों और गणतंत्रों की व्यवस्था का उल्लेख मिलता है। हमने वैशाली जैसे गणतंत्रों को जीकर दिखाया है। हमने भगवान बसवेश्वर के अनुभव मंटपा को अपना गौरव माना है। तमिलनाडु में मिला 900 ईस्वी का शिलालेख आज भी हर किसी को हैरान कर देता है। हमारा लोकतंत्र ही हमारी प्रेरणा है, हमारा संविधान ही हमारा संकल्प है। इस प्रेरणा, इस संकल्प की सबसे श्रेष्ठ प्रतिनिधि अगर कोई है तो ये हमारी संसद है। और ये संसद देश की जिस समृद्ध संस्कृति का प्रतिनिधित्व करती है, उसका उद्घोष करती है- **शेते निपद्य-मानस्य चराति चरतो भगः चरैवेति, चरैवेति- चरैवेति**॥ कहने का तात्पर्य जो रुक जाता है, उसका भाग्य भी रुक जाता है। लेकिन जो चलता रहता है, उसी का भाग्य आगे बढ़ता है, बुलंदियों को छूता है। और इसलिए, चलते रहो, चलते रहो। गुलामी के बाद हमारे भारत ने बहुत कु छ खोकर अपनी नई यात्रा शुरू की थी। वो यात्रा कितने ही उतार-चढ़ावों से होते हुए, कितनी ही चुनौतियों को पार करते हुए, आजादी के अमृतकाल में प्रवेश कर चुकी है। आजादी का ये अमृतकाल- विरासत को सहेजते हुए विकास के नए आयाम गढ़ने का अमृतकाल है। आजादी का ये अमृतकाल- देश को नई दिशा देने का अमृतकाल है। आजादी का ये अमृतकाल- अनंत सपनों को, असंख्य आकांक्षाओं को पूरा करने का अमृतकाल है। इस अमृतकाल का आह्वान है-

मुक्त मातृभूमि को नवीन मान चाहिए।
नवीन पर्व के लिए, नवीन प्राण चाहिए।
मुक्त गीत हो रहा, नवीन राग चाहिए।
नवीन पर्व के लिए, नवीन प्राण चाहिए।

और इसलिए भारत के भविष्य को उज्ज्वल बनाने वाली इस कार्यस्थली को भी उतना ही नवीन होना चाहिए, आधुनिक होना चाहिए।

एक समय था, जब भारत दुनिया के सबसे समृद्ध और वैभवशाली राष्ट्रों में गिना जाता था। भारत के नगरों से लेकर महलों तक, भारत के मंदिरों से लेकर मूर्तियों तक, भारत का वास्तु, भारत की विशेषज्ञता का उद्घोष करता था। सिंधु सभ्यता के नगर नियोजन से लेकर मौर्यकालीन स्तंभों और स्तूपों तक, चोल शासकों के बनाए भव्य मंदिरों से लेकर जलाशयों और बड़े बांधों तक, भारत का कौशल, विश्व भर से आने वाले यात्रियों को हैरान कर देता था। लेकिन सैकड़ों साल की गुलामी ने हमसे हमारा ये गौरव छीन लिया। एक ऐसा भी समय आ गया जब हम दूसरे देशों में हुए निर्माण को देखकर मुग्ध होने लग गए। 21वीं सदी का नया भारत, बुलंद हौसले से भरा हुआ भारत, अब गुलामी की उस सोच को पीछे छोड़ रहा है। आज भारत, प्राचीन काल की उस गौरवशाली धारा को एक बार फिर अपनी तरफ मोड़ रहा है। और संसद की ये नई इमारत, इस प्रयास का जीवंत प्रतीक बनी है। आज नए संसद भवन को देखकर हर भारतीय गौरव से भरा हुआ है। इस भवन में विरासत भी है, वास्तु भी है। इसमें कला भी है, कौशल भी है। इसमें संस्कृति भी है, और संविधान के स्वर भी हैं।

लोकसभा का आंतरिक हिस्सा राष्ट्रीय पक्षी मोर पर आधारित है। राज्यसभा का आंतरिक हिस्सा राष्ट्रीय फूल कमल पर आधारित है। और संसद के प्रांगण में हमारा राष्ट्रीय वृक्ष बरगद भी है। हमारे देश के अलग-अलग हिस्सों की जो विविधता है, इस नए भवन ने उन सबको समाहित किया है। इसमें राजस्थान से लाए गए ग्रेनाइट और बलुआ पत्थर लगाए गए हैं। लकड़ी महाराष्ट्र से आई है। यूपी में भदोही के कारीगरों ने इसके लिए अपने हाथ से कालीनों को बुना है। एक तरह से, इस भवन के कण-कण में हमें **'एक भारत, श्रेष्ठ भारत'** की भावना के दर्शन होंगे।

संसद के पुराने भवन में, सभी के लिए अपने कार्यों को पूरा करना कितना मुश्किल हो रहा था, ये हम सभी जानते हैं। टेक्नोलॉजी से जुड़ी समस्याएं थीं, बैठने की जगह से जुड़ी चुनौती थी। इसलिए ही बीते डेढ़ दो दशकों से ये चर्चा लगातार हो रही थी कि देश को एक नए संसद भवन की आवश्यकता है। और हमें ये भी देखना होगा कि आने वाले समय में सीटों की संख्या बढ़ेगी, सांसदों की संख्या बढ़ेगी, वो लोग कहां बैठते?

और इसलिए ये समय की मांग थी कि संसद की नई इमारत का निर्माण किया जाए। और मुझे खुशी है कि ये भव्य इमारत आधुनिक सुविधाओं से पूरी तरह लैस है। आप देख रहे हैं कि इस समय भी इस हॉल में सूरज का प्रकाश सीधे आ रहा है। बिजली कम से कम खर्च हो, हर तरफ लेटेस्ट टेक्नोलॉजी वाले गैजेट्स हों, इन सभी का इसमें पूरा ध्यान रखा गया है।

मैं इस संसद भवन को बनाने वाले श्रमिकों के एक समूह से मिला हूं। इस संसद भवन ने करीब 60 हजार श्रमिकों को रोजगार देने का भी काम किया है। उन्होंने इस नई इमारत के लिए अपना पसीना बहाया है। खुशी है कि इनके श्रम को समर्पित एक डिजिटल गैलरी भी संसद में बनाई गई है। और विश्व में शायद ये पहली बार हुआ होगा। संसद के निर्माण में अब उनका योगदान भी अमर हो गया है।

कोई भी एक्सपर्ट अगर पिछले नौ वर्षों का आकलन करे तो ये पाएगा कि ये नौ साल, भारत में नव निर्माण के रहे हैं, गरीब कल्याण के रहे हैं। आज हमें संसद की नई इमारत के निर्माण का गर्व है, तो मुझे पिछले 9 साल में गरीबों के 4 करोड़ घर बनने का भी संतोष है। आज जब हम इस भव्य इमारत को देखकर अपना सिर ऊंचा कर रहे हैं, तो मुझे पिछले 9 साल में बने 11 करोड़ शौचालयों का भी संतोष है, जिन्होंने महिलाओं की गरिमा की रक्षा की, उनका सिर ऊंचा कर दिया। आज जब हम इस संसद भवन में सुविधाओं की बात कर रहे हैं, तो मुझे संतोष है कि पिछले 9 साल में हमने गांवों को जोड़ने के लिए 4 लाख किलोमीटर से भी ज्यादा सड़कों का निर्माण किया। आज जब हम इस इको-फ्रेंडली इमारत को देखकर खुश हैं, तो मुझे संतोष है कि हमने पानी की एक-एक बूंद बचाने के लिए 50 हजार से ज्यादा अमृत सरोवरों का निर्माण किया है। आज जब हम इस नए संसद भवन की लोकसभा और राज्यसभा को देखकर उत्सव मना

रहे हैं तो मुझे संतोष है कि हमने देश में 30 हजार से ज्यादा नए पंचायत भवन भी बनाए हैं। यानि, पंचायत भवन से लेकर संसद भवन तक, हमारी निष्ठा एक ही है, हमारी प्रेरणा एक रही- देश का विकास, देश के लोगों का विकास।

आपको ध्यान होगा, 15 अगस्त को लाल किले से मैंने कहा था- यही समय है, सही समय है। हर देश के इतिहास में ऐसा समय आता है, जब देश की चेतना नए सिरे से जागृत होती है। भारत में आजादी के 25 साल पहले, 47 के पहले 25 साल याद कीजिए, आजादी के 25 साल पहले, ऐसा ही समय आया था। गांधी जी के असहयोग आंदोलन ने पूरे देश को एक विश्वास से भर दिया था। गांधी जी ने स्वराज के संकल्प से हर भारतवासी को जोड़ दिया था। ये वो दौर था जब हर भारतीय, आजादी के लिए जी जान से जुट गया था। इसका नतीजा हमने 1947 में भारत की आजादी के तौर पर देखा। आजादी का ये अमृतकाल भी भारत के इतिहास का ऐसा ही पड़ाव है। आज से 25 साल बाद, भारत अपनी आजादी के 100 वर्ष पूरे करेगा। हमारे पास भी 25 वर्ष का अमृत कालखंड है।

इन 25 वर्षों में हमें मिलकर भारत को विकसित राष्ट्र बनाना है। लक्ष्य बड़ा है, लक्ष्य कठिन भी है, लेकिन हर देशवासी को आज इसके लिए जी-जान से जुटना ही है, नए प्रण लेने हैं, संकल्प लेने हैं, नई गति पकड़नी है। और इतिहास गवाह है कि हम भारतीयों का विश्वास, सिर्फ भारत तक ही सीमित नहीं रहता। हमारी आजादी की लड़ाई ने दुनिया के बहुत सारे देशों में उस समय एक नई चेतना जागृत कर दी थी। हमारी आजादी की लड़ाई से भारत तो आजाद हुआ ही साथ ही कई देश आजादी की राह पर चल पड़े। भारत के विश्वास ने, दूसरे देशों के विश्वास को सहारा दिया था। और इसलिए, भारत जैसा विविधता से भरा देश, इतनी बड़ी आबादी वाला देश, इतनी सारी चुनौतियों से लड़ने वाला देश, जब एक विश्वास के साथ आगे बढ़ता है, तो इससे दुनिया के अनेक देशों को प्रेरणा भी मिलती है। भारत की हर सफलता, आने वाले दिनों में दुनिया के अलग-अलग भूभाग में, अलग-अलग देशों की सफलता के रूप में प्रेरणा का कारण बनने वाली है। आज यदि भारत तेजी से गरीबी दूर करता है तो ये कई देशों को गरीबी से बाहर आने की प्रेरणा भी देता है। भारत का विकसित होने का संकल्प कई और देशों का संबल बनेगा। इसलिए भारत की जिम्मेदारी और बड़ी हो जाती है।

सफलता की पहली शर्त, सफल होने का विश्वास ही होती है। ये नया संसद भवन, इस विश्वास को नई बुलंदी देने वाला है। ये विकसित भारत के निर्माण में हम सभी के लिए नई प्रेरणा बनेगा। ये संसद भवन हर भारतीय के कर्तव्य भाव को जागृत करेगा। मुझे विश्वास है, इस संसद में जो जनप्रतिनिधि बैठेंगे, वे नई प्रेरणा के साथ, लोकतंत्र को नई दिशा देने का प्रयास करेंगे। हमें Nation First की भावना से आगे बढ़ना होगा-

इदं राष्ट्राय इदं न मम
हमें कर्तव्यपथ को सर्वोपरि रखना होगा-
कर्तव्यमेव कर्तव्यं,
अकर्तव्यं न कर्तव्यं
हमें अपने व्यवहार से उदाहरण प्रस्तुत करना होगा-
यद्यदा-चरति श्रेष्ठः तत्तदेव इतरो जनः।
हमें निरंतर खुद में सुधार करते रहना होगा-
उद्धरेत् आत्मना आत्मानम्।
हमें अपने नए रास्ते खुद बनाने होंगे-
अप्प दीपो भवः
हमें खुद को खपाना होगा, तपाना होगा-
तपसों हि परम नास्ति, तपसा विन्दते महत।
हमें लोक कल्याण को ही अपना जीवन मंत्र बनाना होगा-
लोकहितं मम करणीयम्,

जब संसद के इस नए भवन में हम अपने दायित्वों का ईमानदारी से निर्वहन करेंगे, तो देशवासियों को भी नई प्रेरणा मिलेगी।

दुनिया के सबसे बड़े लोकतंत्र को यह नई संसद एक नई ऊर्जा और नई मजबूती प्रदान करेगी। हमारे श्रमिकों ने अपने पसीने से इस संसद भवन को इतना भव्य बना दिया है। अब हम सभी सांसदों का दायित्व है कि इसे अपने समर्पण से और ज्यादा दिव्य बनाएंगे। एक राष्ट्र के रूप में हम सभी 140 करोड़ भारतीयों का संकल्प ही, इस नई संसद की प्राण-प्रतिष्ठा है। यहां होने वाला हर निर्णय, आने वाली सदियों को सजाने-संवारने वाला है।

यहां होने वाला हर निर्णय, आने वाली पीढ़ियों को सशक्त करने वाला होगा। यहां होने वाला हर निर्णय, भारत के उज्ज्वल भविष्य का आधार बनेगा। गरीब, दलित, पिछड़ा, आदिवासी, दिव्यांग, समाज के हर वंचित परिवार के सशक्तिकरण का, वंचितों को वरीयता का रास्ता यहीं से गुजरता है। इस नए संसद भवन की हर ईंट, हर दीवार, इसका कण-कण गरीब के कल्याण के लिए समर्पित है। अगले 25 वर्षों में संसद के इस नए भवन में बनने वाले नए कानून, भारत को विकसित भारत बनाएंगे। इस संसद में बनने वाले कानून भारत को गरीबी से बाहर निकालने में मदद करेंगे। इस संसद में बनने वाले कानून, देश के युवाओं के लिए, महिलाओं के लिए नए अवसरों का निर्माण करेंगे। मुझे विश्वास है, संसद का यह नया भवन, नये भारत के सृजन का आधार बनेगा। एक समृद्ध सशक्त और विकसित भारत, नीति, न्याय, सत्य, मर्यादा और कर्तव्यपथ पर और सशक्त होकर चलने वाला भारत। ▪

संस्कृति और परंपरा को आधुनिकता से जोड़ेगा नया संसद भवन -विष्णुदत्त शर्मा

28 मई 2023 को प्रधानमंत्री श्री नरेंद्र मोदी जी के विजनरी नेतृत्व में देश की आजादी के इतिहास में एक नया अध्याय जुड़ा। प्रधानमंत्री श्री नरेंद्र मोदी जी ने नए संसद भवन को देश को समर्पित किया। देश का नया संसद भवन हमारे इतिहास, सांस्कृतिक विरासत, परंपरा और सभ्यता को आधुनिकता से जोड़ने वाला अनुपम उदाहरण है। जिन श्रमिकों के अथक परिश्रम से रिकॉर्ड समय में इसका निर्माण हुआ है, प्रधानमंत्री जी ने उन्हें सम्मानित किया। इस नए संसद भवन के लिए हम सब देशवासी, देश की 140 करोड़ जनता प्रधानमंत्री श्री नरेंद्र मोदी जी को धन्यवाद देती है बधाई देती है।

हमारे इतिहास की पहचान है सैंगोल

नए संसद भवन में सैंगोल की स्थापना न्यायपूर्ण और निष्पक्ष शासन व्यवस्था का प्रतीक है, हमारे इतिहास की पहचान है। यह हमारी लोकतांत्रिक आजादी का प्रतीक है, स्वर्णिम इतिहास का अंग है और मजबूत तथा समृद्ध राष्ट्र के निर्माण के संकल्प का प्रतीक है। लेकिन हमारे धर्म, अध्यात्म और संस्कृति पर आक्रमण करना कांग्रेस नेतृत्व की आदत रही है।

कांग्रेस इसके लिए कुछ भी झूठ बोल सकती है। कांग्रेस इस सैंगोल को फर्जी बता रही है। यही नहीं बल्कि कांग्रेस के नेता तो उस मठ को भी फर्जी बता रहे हैं जिसने नेहरु जी को यह सैंगोल सौंपा था।

धर्म, संस्कृति का अपमान कांग्रेस की आदत

देश की जनता जानती है कि प्रधानमंत्री श्री मोदी का नाम सम्राट विक्रमादित्य और देवी अहिल्याबाई जैसी उन विभूतियों की श्रृंखला में आता है जिन्होंने भारत की संस्कृति, धर्म और अध्यात्म को पुष्ट करने का काम किया।

देश की जनता यह जानना चाहती है कि कांग्रेस को देश की परंपरा, संस्कृति और मान-सम्मान से इतनी नफरत क्यों है। जनता देख रही है कि किस प्रकार कांग्रेस राष्ट्र हित की बजाए निजी हित और स्वार्थ की राजनीति कर रही है। ▪

नया संसद भवन राष्ट्र की प्रगति का साक्षी बनेगा - मुख्यमंत्री श्री चौहान

नया संसद भवन राष्ट्र की प्रगति और एकता का साक्षी बनेगा। देशवासी जहाँ लोकतंत्र के इस नवीन भव्य मंदिर में नये भारत का उज्ज्वल और स्वर्णिम भविष्य देख रहे हैं, वहीं कुछ लोगों की आँखों में बंधी पट्टी उन्हें सच्चाई नहीं देखने दे रही है। ऐसे लोगों से बस यही कहना है- 'जाकी रही भावना जैसी, प्रभु मूरत देखी तिन तैसी।' नया संसद भवन, भारत के लोकतांत्रिक मूल्यों के संरक्षण के साथ देश की एकता, अखण्डता और प्रगति का साक्षी बनेगा। इस श्रेष्ठ और अभूतपूर्व रचना के लिए प्रधानमंत्री श्री नरेन्द्र मोदी जी अभिनंदन के पात्र हैं।

प्रधानमंत्री श्री मोदी जी ने जब 'नए भारत का नया संसद भवन' राष्ट्र को समर्पित किया और राजधर्म, न्याय, निष्पक्षता, संप्रभुता, अक्षुण्णता एवं सामर्थ्य को साष्टांग दंडवत प्रमाण किया, तब वह क्षण ऐतिहासिक था। यह पल देश के लोकतांत्रिक इतिहास का स्वर्णिम अध्याय है। पूरे देश का मन उत्साह और गौरव से भरा हुआ है। प्रधानमंत्री श्री मोदी जी ने नवनिर्मित संसद भवन का लोकार्पण कर नवनिर्माण के संकल्पों की ओर अग्रसर भारत को नई गति दी है। यह स्वर्णिम पल इतिहास में दर्ज हो गया, जब वैदिक मंत्र उच्चारण के साथ प्रधानमंत्री श्री मोदी जी ने नये संसद भवन में ऐतिहासिक 'सेंगोल' स्थापित किया। यह एक स्मरणीय क्षण था। ▪

विधि प्रकोष्ठ जनता के बीच भाजपा सरकार के पक्ष को प्रस्तुत करे - विष्णुदत्त शर्मा

केन्द्र की मोदी सरकार के 9 वर्षों के कार्यकाल के दौरान कई कानूनी सुधार हुए हैं। अनेक निरर्थक कानूनों को समाप्त कर दिया गया है, वहीं देश और समाज के हित में कई नए कानून बनाए गए हैं। कांग्रेस और अन्य विपक्षी दल इनके बारे में भ्रम फैलाते हैं। नागरिकता संशोधन कानून हो या तीन तलाक विरोधी कानून, विरोधी दलों ने किस तरह लोगों को गुमराह करके देश की कानून व्यवस्था को चोट पहुंचाने का काम किया था, यह किसी से छिपा नहीं है। निकाय चुनावों में अन्य पिछड़ा वर्ग के आरक्षण को किस तरह कांग्रेस ने प्रभावित करने का प्रयास किया था? यह विधि प्रकोष्ठ की जिम्मेदारी है कि जनता के बीच इन कानूनों और सुधारों की सही व्याख्या करे। भाजपा सरकार के पक्ष को सही तरीके से तथ्यों और कानूनी आधारों के साथ जनता के बीच प्रस्तुत करे। चुनावों के दौरान जिस तरह से कानूनी अड़चनें विरोधी दलों के द्वारा डाली जाती हैं, उनके प्रति सजग रहे। इसके लिए विधि प्रकोष्ठ प्रदेश के चारों महानगरों में शिविर आयोजित कर अपने कार्यकर्ताओं को प्रशिक्षित करे तथा प्रत्येक विधानसभा के लिए टोलियों का गठन करे।

सोशल मीडिया के माध्यम से झूठ परोस रही कांग्रेस - हितानंद शर्मा

कांग्रेस आज पूरे प्रदेश में सोशल मीडिया के माध्यम से युवाओं के बीच लगातार झूठ परोसने का काम कर रही है। अधिवक्ताओं को उनके झूठ के विरूद्ध आईटी एक्ट के तहत अधिक से अधिक प्रकरण दर्ज कराकर कांग्रेस के झूठ को जनता के समक्ष उजागर करना है। अधिवक्ताओं का प्रदेश स्तरीय सम्मेलन आयोजित करना चाहिए। ▪

51 प्रतिशत वोट शेयर हमारा लक्ष्य-विष्णुदत्त शर्मा

भारतीय जनता पार्टी ने अबकी बार 200 पार के नारे को साकार करने का संकल्प लिया है, साथ ही हर बूथ पर 51 फीसदी वोट शेयर का लक्ष्य निर्धारित किया है। संकल्प को साकार करने और लक्ष्य को पूरा करने के लिए हम सब मिलकर आगे बढ़ेंगे। 15 महीने सत्ता में रही कांग्रेस सरकार हर कदम पर विफल रही। उन विफलताओं को हमें जनता तक पहुंचाना है। ताकि उन्हें सरकार, सरकार का फर्क समझ में आएं। हमारा एकसूत्रीय कार्य केन्द्र और राज्य सरकार की योजनाओं का प्रचार, प्रसार तथा उसका लाभ लोगों तक पहुंचाने के लिए कार्यकर्ताओं की सहभागिता जरूरी है।▪

यूपीआई से रिकॉर्ड लेनदेन

भारत की स्वदेशी भुगतान प्रणाली- यूपीआई वर्ष 2016 में अपनी शुरूआत के बाद से ही विश्वसनीय भुगतान प्रणाली बनी हुई है और यह अब विश्व स्तर पर स्वीकार्य भुगतान प्रणाली बन गई है। एकीकृत भुगतान प्रणाली- यूपीआई के माध्यम से पिछले महीने 14 लाख करोड़ रूपये के रिकॉर्ड नौ अरब से अधिक के लेनदेन हुए। भारतीय राष्ट्रीय भुगतान निगम -एनपीसीआई के अनुसार मई 2023 में नौ अरब 41 करोड़ के यूपीआई के माध्यम से लेनदेन हुए। यूपीआई से इस साल जनवरी महीने में आठ अरब लेन देन हुए, फरवरी में साढ़े सात अरब, मार्च में आठ अरब सत्तर करोड़ और अप्रैल में आठ अरब 89 करोड़ लेनदेन हुए। वित्त वर्ष 2022-23 में यूपीआई के माध्यम से 139 लाख करोड़ रूपये के कुल 83 अरब लेन देन हुए।▪

भाजपा विश्व पटल पर भारत को सिरमौर बनाने के लिए कार्य कर रही है : मुरलीधर राव

भारतीय जनता पार्टी सरकार ने कश्मीर से धारा 370 को समाप्त करने का काम किया। अयोध्या में भगवान श्रीराम के भव्य मंदिर निर्माण का संकल्प पूरा होने जा रहा है। साथ ही तीन तलाक को भी समाप्त कर दिया। अब सबसे बड़ा कोई काम बचा है तो वह है भारत को फिर से विश्वगुरु बनाना। भाजपा के प्रत्येक कार्यकर्ता इस कार्य के लिए कृत संकल्पित है। भारतीय जनता पार्टी विश्व पटल पर भारत को सिरमौर बनाने के लिए कार्य कर रही है।

भाजपा की स्थापना भारत को विश्व गुरू बनाने के लिए हुई

कांग्रेस के लोग सत्ता में आने का इंतजार कर रहे है। कांग्रेस के पास इंतजार के अलावा कोई काम नहीं बचा है। भाजपा सरकार के तीन साल निकल गए पर उन्होंने कोई आंदोलन, धरना प्रदर्शन नही किया, क्योंकि सिर्फ वे सत्ता का इंतजार कर रहे है। भाजपा विपक्ष में भी होती है तो कोई कार्यकर्ता चैन से नही बैठता। कभी जेल भरता है तो कभी आंदोलन करके जनता की आवाज बनता है। भारतीय जनता पार्टी इतनी जल्दी थकने वाली पार्टी नही है। आने वाले 25 साल तक भाजपा सरकार में रहेगी। सिर्फ सत्ता पाने के लिए भाजपा की स्थापना नही हुई है भाजपा की स्थापना भारत को विश्व गुरु बनाने के लिए हुई है।

भाजपा से ही भारतीय संस्कृति और भारत की विविधता है

देश में कोई अन्य राजनैतिक दल नही है जो भारत माता की जय बोलते है, सिर्फ भारतीय जनता पार्टी ऐसा दल है जिसका कार्यकर्ता हर वक्त भारत माता की जय बोलते है। देश में बहुत से राजनैतिक दल काम करते है जो परिवार से चलते है। सिर्फ भारतीय जनता पार्टी एक ऐसा दल है जो कार्यकर्ताओं से संचालित होती है। भाजपा से ही भारतीय संस्कृति और भारत की विविधता है। कांग्रेस हमारी संस्कृति और विविधता को खत्म करने

में लगी है। केंद्र और प्रदेश में हमारी सरकार ने कई विकास कार्य किए है। आमजनों को कई कल्याणकारी योजनाओं के माध्यम से लाभ दिया है, उन्ही लाभार्थियों को हमें मतदाता के रूप में बदलना है। हमें सरकार की उपलब्धियों को आमजन तक पहुंचाना है। पार्टी के बूथ विजय संकल्प अभियान के माध्यम से प्रत्येक बूथ पर 51 प्रतिशत वोट बढ़ाने का कार्य करना है। आज देश के कई प्रदेशों में हमारी सरकार बूथों पर काम करने वाले कार्यकर्ताओ के कारण ही है, इसलिए बूथ ही हमारी जीत का मूलमंत्र है। ▪

मोदीजी के नेतृत्व में सरकार के 9 वर्ष पूर्ण होने पर महाजनसंपर्क अभियान - हितानंद

प्रधानमंत्री श्री नरेन्द्र मोदी जी के नेतृत्व में केन्द्र सरकार के सफलतम 9 वर्ष पूरे होने पर विशेष जनसंपर्क अभियान चलेगा। प्रत्येक कार्यकर्ता पार्टी द्वारा तय कार्य योजना को सफल बनाने में जुटें। अनुसूचित जाति मोर्चा विशेष जनसंपर्क अभियान के दौरान शक्ति केन्द्र स्तर पर बस्ती संपर्क और विधानसभा स्तर पर लाभार्थी मेला आयोजित करेगा। विधानसभा स्तर पर अनुसूचित जाति वर्ग के युवाओं के साथ संवाद कार्यक्रम आयोजित होंगे। अभियान के दौरान अनुसूचित जाति मोर्चा के कार्यकर्ता विधानसभा स्तर पर अजा छात्रावासों में जाकर युवाओं से संवाद कर उन्हें सरकार की उपलब्धियों के पत्रक वितरित करेंगे। इसी प्रकार अनुसूचित जनजाति मोर्चा बूथ स्तर पर लाभार्थियों से संपर्क करेगा, वहीं जिला स्तर पर मोर्चा जनजाति गौरव यात्रा निकालकर जनजाति समूहों के समाज प्रमुखों और योजनाओं के लाभार्थियों से संपर्क करेंगे। जनजाति गौरव यात्रा के दौरान गांव, चौपाल एवं जनजाति सम्मान सभा आयोजित होगी। भगवान बिरसा मुंडा शहीद दिवस पर विधानसभा स्तर पर सम्मेलन आयोजित होंगे। वहीं विशेष जनसंपर्क अभियान के दौरान अजजा मोर्चा जिला स्तर पर अनुसूचित जनजाति समाज के प्रतिनिधियों की बैठक आयोजित करेगा।

किसान मोर्चा विशेष जनसंपर्क अभियान के दौरान पीएम किसान निधि के लाभार्थियों से संपर्क करेगा। विभिन्न किसान उत्पादक संगठन के अध्यक्षों के साथ बैठकें आयोजित होगी। किसान मोर्चा ग्राम चौपाल आयोजित कर केन्द्र और राज्य सरकार की किसान केन्द्रित उपलब्धियों और योजनाओं पर किसानों से चर्चा करेगा। वहीं असंगठित मजदूरों के साथ ग्राम सभा आयोजित होगी। प्रधानमंत्री श्री नरेन्द्र मोदी जी के 9 वर्ष पूर्ण होने पर विशेष जनसंपर्क अभियान के दौरान भारतीय जनता युवा मोर्चा लाभार्थी संवाद और नवमतदाता सम्मेलन व नया मतदाता पंजीकरण अभियान चलायेगा। युवा मोर्चा हर मंडल में बाइक यात्रा निकालेगा और केन्द्र सरकार की योजनाओं और उपलब्धियों पर केन्द्रित ऑनलाइन प्रश्नोत्तरी प्रतियोगिता आयोजित करेगा। ▪

भारत की वैश्विक भूमिका के नायक बने मोदी

विष्णु दत्त शर्मा

देश के प्रधानमंत्री श्री नरेंद्र भाई मोदी जी जब जापान में हुई जी-7 की बैठक के बाद इंडो-पैसिफिक देश पापुआ न्यू गिनी पहुंचे, तब वहां के इतिहास में तीन अद्वितीय घटनाएँ हुईं। एक तो यह किसी भी भारतीय प्रधान मंत्री द्वारा इंडो-पैसिफिक देश का पहला दौरा था और दूसरा यह कि पापुआ न्यू गिनी ने पहली बार सूर्यास्त के बाद आने वाले किसी भी नेता का औपचारिक स्वागत किया। जबकि पापुआ न्यू गिनी की परंपरा में सूर्यास्त के बाद किसी का औपचारिक स्वागत करने की परंपरा नहीं है। हमारे यशस्वी प्रधानमंत्री का वहां न केवल औपचारिक स्वागत किया गया, बल्कि एयरपोर्ट पर पारंपरिक लोक नृत्य का भी आयोजन किया गया। तीसरी अहम् घटना थी पोर्ट मोरेस्बी एयरपोर्ट पर पापुआ न्यू गिनी के प्रधानमंत्री जेम्स मारापे द्वारा श्री नरेंद्र मोदी जी के पैर छूकर आशीर्वाद मांगना। शायद ही ऐसा कभी हुआ है कि एक राष्ट्राध्यक्ष ने दूसरे किसी राष्ट्राध्यक्ष का सार्वजनिक रूप से पैर छूकर आशीष लिया हो। अपने अग्रज के आदर पूर्वक पैर छूकर आशीष लेने के सांस्कृतिक अभिवादन व अभिव्यक्ति को किसी दूसरे देश द्वारा अपने व्यवहार में लाना, हम सभी भारतीयों के लिए गौरव तो है ही हमारी सांस्कृतिक आस्थाओं को भी दुनिया में स्थान मिलने का प्रमाण है। इसलिए तीनों घटनाएँ सामान्य नहीं हैं।

आधुनिक युग में राष्ट्राध्यक्षों के स्वागत मेजबान देश के प्रोटोकॉल के अनुसार ही नियोजित किये जाते हैं। उनमें कोई बड़ा बदलाव तभी होता है, जब सामने वाला राष्ट्राध्यक्ष भी किसी महान देश और उसकी विरासत का असाधारण नेतृत्व करने वाला हो। श्री नरेंद्र मोदी जी प्रधानमंत्री के तौर पर आज दुनिया में एक ऐसे ही महान देश के असाधारण नेता माने जाते हैं। इसका भी ताजा उदाहरण हमें उनके गत विदेश दौरे में देखने को मिला, जब पापुआ न्यू गिनी के बाद हमारे पीएम ऑस्ट्रेलिया पहुंचे। बीते 23 मई को कुडोस बैंक एरिना में बीस हजार लोगों के जनसैलाब के समक्ष ऑस्ट्रेलिया के प्रधानमंत्री एंथनी एल्बनीज ने श्री नरेंद्र मोदी जी को 'बॉस' बताया। उन्होंने कहा- मोदी इज दि बॉस। किसी समकक्ष नेता के मुंह से ऐसे वाक्य यूं ही नहीं निकलते, इसके लिए सामने किसी विराट व्यक्तित्व का होना अपरिहार्य है। इसलिए पिछले नौ सालों में श्री मोदी जी की लगभग 65 देशों की यात्राओं से हटकर इन घटनाओं को देखना चाहिए।

यह विदेश यात्रा तो इसलिए भी बहुत मायने रखती है कि इस दौरान हमारे लोकप्रिय असाधारण प्रधानमंत्री श्री नरेंद्र मोदी जी को फिजी और पापुआ न्यू गिनी के सर्वोच्च सम्मानों से विभूषित

आधुनिक युग में राष्ट्राध्यक्षों के स्वागत मेजबान देश के प्रोटोकॉल के अनुसार ही नियोजित किये जाते हैं। उनमें कोई बड़ा बदलाव तभी होता है, जब सामने वाला राष्ट्राध्यक्ष भी किसी महान देश और उसकी विरासत का असाधारण नेतृत्व करने वाला हो।

श्री नरेंद्र मोदी जी प्रधानमंत्री के तौर पर आज दुनिया में एक ऐसे ही महान देश के असाधारण नेता माने जाते हैं। इसका भी ताजा उदाहरण हमें उनके गत विदेश दौरे में देखने को मिला, जब पापुआ न्यू गिनी के बाद हमारे पीएम ऑस्ट्रेलिया पहुंचे। बीते 23 मई को कुडोस बैंक एरिना में बीस हजार लोगों के जनसैलाब के समक्ष ऑस्ट्रेलिया के प्रधानमंत्री एंथनी एल्बनीज ने श्री नरेंद्र मोदी जी को "बॉस" बताया। उन्होंने कहा- मोदी इज दि बॉस।

किया गया। ये सम्मान उन्हें ग्लोबल साउथ के विषयों को आगे बढ़ाने और उनके वैश्विक नेतृत्व के लिए दिया गया है। फिजी के प्रधानमंत्री सितिवेनी राबुका ने सर्वोच्च नागरिक सम्मान 'कंपैनियन ऑफ द ऑर्डर ऑफ फिजी' दिया जो बहुत ही कम बाहरी लोगों को दिया गया है। भारतीय प्रशांत द्वीप देशों की एकता और ग्लोबल साउथ लक्ष्यों की अगुवाई करने के लिए पापुआ न्यू गिनी ने भी मोदी जी को 'कंपैनियन ऑफ द ऑर्डर ऑफ लोगोहू' से सम्मानित किया। जाहिर सी बात है कि ग्लोबल साउथ यानी गैर यूरोपीय (लगभग 100) देश प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी में अपना नायक देख रहे हैं।

यह उनके नेतृत्व कौशल का ही कमाल है कि नौ साल के कार्यकाल में अमेरिका,रूस और मिडिल ईस्ट समेत कई देशों ने प्रधानमंत्री श्री नरेंद्र मोदी जी को सम्मानित किया है। वर्ष 2016 में सऊदी अरब ने गैर-मुस्लिम गणमान्य को दिए जाने वाले अपने सर्वोच्च सम्मान 'अब्दुल अजीज अल सॉद' से सम्मानित किया था। अफगानिस्तान ने सर्वोच्च नागरिक सम्मान 'गाजी अमीर अमानुल्लाह खान' से नवाजा। 2018 में फिलिस्तीन ने मोदी को विदेशी गणमान्य नागरिकों को दिए जाने वाले सर्वोच्च सम्मान 'ग्रांड कॉलर ऑफ द स्टेट' दिया। संयुक्त अरब अमीरात ने भी 2019 में अपने सर्वोच्च नागरिक सम्मान 'जायेद मेडल' से मोदी का सम्मान किया।

इसी कड़ी में दुनिया की बड़ी शक्ति रूस ने भी 2019 में प्रधानमंत्री श्री नरेंद्र मोदी जी को सर्वोच्च नागरिक सम्मान 'सेंट एंड्रू अवॉर्ड' से सम्मानित किया। बहरीन ने 2019 में 'किंग हमाद ऑर्डर ऑफ दि रेनेसां' दिया, जो खाड़ी देशों का सर्वोच्च सम्मान है। मालदीव ने किसी भी विदेशी नागरिक को दिया जाने वाला सर्वोच्च सम्मान 2019 में 'निशान इज्जुदीन अवॉर्ड' श्री मोदी जी को दिया।

अमेरिकी सरकार ने 2020 में संयुक्त राज्य अमेरिका सशस्त्र बलों के लिए उत्कृष्ट सेवाओं और उपलब्धियों के प्रदर्शन में असाधारण आचरण के लिए दिया जाने वाला 'लीजन ऑफ मेरिट' अवार्ड श्री मोदी जी को प्रदान किया। पड़ोसी देश भूटान भी उन्हें 2021 में सर्वोच्च नागरिक अलंकरण 'ऑर्डर ऑफ दि ड्रक गियल्पो' से सम्मानित कर चुका है। अंतरराष्ट्रीय सहयोग और वैश्विक आर्थिक विकास को बढ़ावा देने के लिए उन्हें 2018 में 'सियोल पीस प्राइस' से नवाजा गया था।

वैश्विक सम्मानों की ऐसी श्रृंखला यह जाहिर करती है कि अंतरराष्ट्रीय स्तर पर हमारा देश दुनिया में बड़ी भूमिका निभाने की इबारत लिख चुका है। दुनिया समझ रही है कि महान देश भारत को एक असाधारण नेतृत्व मिला है, जिसने अपने देश के पुराने गौरव को वापस लाने में भागीरथ भूमिका निभायी है। यह कोई साधारण बात नहीं है कि जब 2014 में श्री नरेंद्र मोदी जी प्रधानमंत्री बने तब हमारी योग परंपरा को वैश्विक स्वीकृति मिली और अंतरराष्ट्रीय योग दिवस की शुरुआत हुई। 2014 में ग्लोबल इकोनॉमी में भारत दसवें स्थान पर था, जो कि 2022 में ब्रिटेन को बाहर करके पांचवें स्थान पर आ गया। अब जर्मनी को पछाड़कर यह चौथी अर्थव्यवस्था बनने की ओर अग्रसर है। भारत की यह शक्ति उसके असाधारण नेतृत्व के कारण बढ़ी है। इसलिए दुनिया के नेताओं ने श्री मोदी जी के करिश्माई नेतृत्व को परख लिया है एवं उन्हें श्री नरेंद्र मोदी जी में विश्व का नेतृत्वकर्ता दिखाई देता है।

सदियों से भारत विश्व को राह दिखाने वाला राष्ट्र रहा है, इसीलिए यह विश्व गुरु की भूमिका निभाने का अधिकारी भी रहा। हर कालखंड में दुनिया के देशों ने भारत से वैश्विक नेतृत्व की आकांक्षा रखी है, परन्तु दशकों से भारत को इस भूमिका को निभाते हुए नहीं देखा गया। लेकिन 2014 के बाद बदलते भारत को देखकर विश्व ने भी यह अनुभव किया है कि अब यह देश नये नेतृत्व के साथ नयी भूमिका में आ गया है। चाहे वह पड़ोसी देशों के विवाद हों, विश्व आपदाएँ हों, सामरिक चुनौतियां हों या आर्थिक मोर्चा, सारे मामलों में भारत का अब निजी नजरिया और निर्णय होता है। यह नजरिया इसके नेतृत्व की कार्यशैली से सिद्ध हुआ है। आतंकवाद को कुचलने हेतु भारतीय सेना अब पाकिस्तान में घुसकर स्ट्राइक करती है। मोदी सरकार अपने सैनिक 'अभिनंदन' को बिना शर्त तत्काल वापस लाती है। विश्व शक्तियों की आंख में आंख डालकर भारत ने कश्मीर में धारा 370 को विदा कर दिया। श्रीराम मंदिर जैसे मसलों का हल निकाल कर दुनिया को अपनी अंदरुनी ताकत का एहसास भी करा दिया।

सदी के सबसे बड़े मानवीय संकट (कोविड) में अनेक देशों को वैक्सीन देकर वसुधैव कुटुम्बकम की भावना और विश्व गुरु की भूमिका को चरितार्थ करने वाले नेतृत्व को दुनिया ने देखा है। देश में मुफ्त वैक्सीन का अनूठा अभियान भी दुनिया देख चुकी है। प्रधानमंत्री श्री नरेंद्र मोदी जी के नेतृत्व में सक्षम-समर्थ भारत अपनी वैश्विक भूमिका के साथ आगे बढ़ रहा है। ▪

(लेखक भाजपा मध्य प्रदेश के अध्यक्ष एवं खजुराहो लोकसभा क्षेत्र से सांसद हैं।)

प्रत्येक दिन महत्वपूर्ण, कार्यकर्ता विजय संकल्प के लिए जुट जाएं - हितानंद शर्मा

हमारे बूथ पूरे प्रदेश में डिजिटल हो चुके है। हमें समाज के हर वर्ग के लोगों से संपर्क कर सरकार द्वारा संचालित जनकल्याणकारी योजनाओं का लाभ दिलाकर उन्हें पार्टी की विचारधारा से जोड़ना है।

भाजपा कार्यकर्ता हर समय एक्टिव मोड में रहते हैं। हमारे पास योग्य, ऊर्जावान, प्रशिक्षित कार्यकर्ताओं की लंबी श्रृंखला है। जो कार्यकर्ता जिस कार्य में सक्षम है उसे उस दायित्व के निर्वहन के लिए अभी से जुटना होगा। पार्टी के कार्यकर्ता आज तकनीक से अपडेट है। हमारे बूथ पूरे प्रदेश में डिजिटल हो चुके है। हमें समाज के हर वर्ग के लोगों से संपर्क कर सरकार द्वारा संचालित जनकल्याणकारी योजनाओं का लाभ दिलाकर उन्हें पार्टी की विचारधारा से जोड़ना है। बूथ सशक्तिकरण अभियान के कार्य को जल्द पूरा करना है। हमारे लिए प्रत्येक दिन महत्वपूर्ण है। कार्यकर्ता आज से ही विजय संकल्प के लिए जुट जाए।

बूथ पर 51 प्रतिशत वोट प्राप्त करना हमारा लक्ष्य

चुनाव तैयारियों की दृष्टि से हमें बूथ सशक्तिकरण अभियान को पूर्ण करते हुए बूथ विजय संकल्प अभियान के लिए तैयार रहना है। हमें विधानसभावार पन्ना समिति, पन्ना प्रमुख व बूथों पर पार्टी द्वारा किए जाने वाली तैयारियों को पूर्ण करना है। केन्द्र में प्रधानमंत्री श्री नरेन्द्र मोदी जी और प्रदेश में मुख्यमंत्री श्री शिवराजसिंह चौहान जी की सरकार की जनकल्याणकारी योजनाओं से कोई भी वर्ग अछूता नहीं है। हमें योजनाओं से वंचित लोगों को चिन्हित कर उन्हें राहत पहुंचाना है। प्रत्येक बूथ को भाजपामय बनाकर 51 प्रतिशत वोट शेयर के लक्ष्य को पूरा करना है। ▪

एक लाख कमल मित्र बनाने का लक्ष्य

जल जीवन मिशन के तहत अब तक लगभग 12 करोड़ घरों में नल से जल पहुंचाया जा चुका है। उज्ज्वला योजना के माध्यम से 9.5 करोड़ महिलाओं को गैस कनेक्शन दिया गया है।

विगत 9 साल में लगभग साढ़े 11 करोड़ इज्जत घर बने। सौभाग्य योजना से लगभग 2.60 करोड़ से अधिक घरों में बिजली पहुंची है।

भाजपा महिला मोर्चा द्वारा आयोजित महिला केंद्रित 15 फ्लैगशिप योजनाओं का ट्रेनिंग प्रोग्राम - 'कमल मित्र' एक इनोवेटिव प्रोग्राम है। भाजपा महिला मोर्चा ने इन योजनाओं की ट्रेनिंग देकर 'कमल मित्र' के माध्यम से महिलाओं को सशक्त बनाने का निर्णय लिया है,

****

भाजपा महिला मोर्चा देश भर में एक लाख कमल मित्र बनाने का लक्ष्य लेकर निकली है जो महिला केंद्रित 15 योजनाओं की जानकारियां लाभार्थियों को बताएगी और उन्हें योजना से जोड़ेगी।

****

काफी लंबे समय तक नीति निर्धारकों ने महिला सशक्तिकरण की बात तो की लेकिन लास्ट माइल डिलीवरी में बहुत बड़ा गैप रहा। आदरणीय प्रधानमंत्री जी लास्ट माइल डिलीवरी पर फोकस कर रहे हैं और अंतिम पायदान पर खड़ी अंतिम महिला तक योजनाओं को पहुंचाया जा रहा है और उन्हें सशक्त बनाया जा रहा है।

****

आजादी के 70 सालों में मातृ सशक्तिकरण के जितने काम नहीं हुए, उससे कहीं अधिक कार्य विगत 9 वर्षों में प्रधानमंत्री श्री नरेन्द्र मोदी जी के कार्यकाल में हुए हैं।

****

जल जीवन मिशन के तहत अब तक लगभग 12 करोड़ घरों में नल से जल पहुंचाया जा चुका है। उज्ज्वला योजना के माध्यम से 9.5 करोड़ महिलाओं को गैस कनेक्शन दिया गया है। विगत 9 साल में लगभग साढ़े 11 करोड़ इज्जत घर बने। सौभाग्य योजना से लगभग 2.60 करोड़ से अधिक घरों में बिजली पहुंची है।

****

मुद्रा योजना का लगभग 68 प्रतिशत लाभ महिलाओं को मिला है। स्टैंड-अप इंडिया कार्यक्रम का लगभग 81 प्रतिशत लाभ मातृशक्ति को हुआ है।
जन-धन योजना में लगभग 55 प्रतिशत एकाउंट महिलाओं के खुले। आवास योजना में लगभग 58 प्रतिशत घरों का मालिकाना हक अब महिलाओं के पास है।

****

भारत में पहली बार श्री नरेन्द्र मोदी सरकार में महिलाओं को डिफेंस में परमानेंट कमीशन मिलना शुरू हुआ है। अब डिफेंस में महिलाओं को कॉम्बैट ट्रेनिंग मिलना शुरू हुआ है। अब नेशनल डिफेंस एकेडमी में महिलाओं को एडमिशन मिलना शुरू हुआ है।

****

ये सभी योजनाएं महिला सशक्तिकरण के अनुपम उदाहरण हैं। प्रधानमंत्री श्री नरेन्द्र

मोदी जी के नेतृत्व में आज महिलायें किसी से कम नहीं हैं। अब महिलायें हर क्षेत्र में आगे बढ़ रही हैं।

****

आजादी के अमृतकाल में विकसित भारत बनाने में सहयोग करने का एक पुनीत अवसर मिल रहा है। आजादी के 75 साल हुए हैं और अगले 25 वर्षों में हमें 'विकसित भारत' बनाने के लिए एकजुट हो जाना है। यह हम सबके लिए सौभाग्य की बात है।

****

भाजपा महिला मोर्चा ने इन योजनाओं की ट्रेनिंग देकर 'कमल मित्र' के माध्यम से महिलाओं को सशक्त बनाने का निर्णय लिया है।

****

हमें हमेशा इनोवेटिव बने रहना है, इनोवेटिव तरीके से सोचना है। इनोवेटिव रहेंगे तो विचारों में ताजगी रहेगी और हमारी सोच में विस्तार होता जाएगा। हमें यह चिंतन करते रहना चाहिए कि जो काम हम कर रहे हैं, इसे और इंप्रूव कैसे करें और अपने रिजल्ट और कैसे बेहतर करें।

****

आजादी के 70 सालों में मातृ सशक्तिकरण के जितने काम नहीं हुए, उससे कहीं अधिक कार्य विगत 9 वर्षों में श्री नरेन्द्र मोदी सरकार के कार्यकाल में हुए हैं। कार्यक्रम का लक्ष्य एक लाख कमल मित्र बनाने का है।

प्रत्येक लोकसभा में 200 कमल मित्र बनाने की परिकल्पना बनाई गई है और हम देश भर में एक लाख कमल मित्र बनाने का लक्ष्य लेकर निकले हैं जो महिला केंद्रित 15 योजनाओं की जानकारियां लाभार्थियों को बताएँगे और उन्हें योजना से जोड़ेंगे। इसमें प्रोफेशनल्स को जोड़ा गया है। खास बात ये है कि इसके डॉक्यूमेन्ट्स को क्षेत्रीय भाषाओं में भी अनुदित किया गया है।

काफी लंबे समय तक नीति निर्धारकों ने महिला सशक्तिकरण की बात तो की लेकिन लास्ट माइल डिलीवरी में बहुत बड़ा गैप रहा। आदरणीय प्रधानमंत्री जी लास्ट माइल डिलीवरी पर फोकस कर रहे हैं और अंतिम पायदान पर खड़ी अंतिम महिला तक योजनाओं को पहुंचाया जा रहा है, सरकार की मदद पहुंचाई जा रही है और उन्हें सशक्त बनाया जा रहा है।

योजनाएं पहले भी थीं लेकिन उसका फायदा महिलाओं को सीधे नहीं मिल पाता था। आज स्वास्थ्य विभाग के कार्यक्रमों में योजनाएं नीचे तक उतर रही हैं। फर्टिलिटी रेट कम हो रहा है, शिशु मृत्यु दर और मातृ मृत्यु दर में भी कमी आ रही है। ऐसा इसलिए हुआ है क्योंकि योजनाओं की इफेक्टिविटी को बढ़ाने पर विशेष ध्यान दिया जा रहा है।

'हर घर नल से जल' दूर-दराज में रहने वाले लोगों को ताकत दे रहा है। इस योजना से महिला सशक्तिकरण हो रहा है। लगभग 12 करोड़ घरों में नल से जल पहुँच रहा है। जरा सोचिये कि यदि 12 करोड़ घरों में नल से जल श्री नरेन्द्र मोदी सरकार में पहुंचना शुरू हुआ है तो पहले क्या स्थिति होगी? इसी तरह उज्ज्वला योजना की बात करें तो यह केवल गैस कनेक्शन नहीं है बल्कि यह महिला सशक्तिकरण के साथ-साथ महिलाओं के स्वास्थ्य में भी सुधार लाने में सहायक हो रहा है।

अब तक लगभग 9.5 करोड़ महिलाओं को गैस कनेक्शन दिया गया है। स्वच्छता अभियान की घोषणा आदरणीय प्रधानमंत्री जी ने जब लाल किले की प्राचीर से की तो कांग्रेस सहित कई विपक्षी पार्टियों ने इसका मजाक उड़ाया क्योंकि वे धरती से इतने कटे हुए थे कि उन्हें जमीनी हकीकत पता ही नहीं थी। श्री नरेन्द्र मोदी सरकार के 9 साल में लगभग साढ़े 11 करोड़ इज्जत घर बने।

पहले महिलायें खुले में शौच करने को विवश थीं। जरा सोचिये, वे किस प्रकार का जीवन जी रही थीं। आजादी के 70 साल बाद भी देश में 18 हजार से अधिक गाँव और करोड़ों घर बिजली से वंचित थे। मोदी सरकार की सौभाग्य योजना के तहत लगभग 2.60 करोड़ से अधिक घरों में बिजली पहुंची है। अब सुबह में बिजली के लिए आवेदन दिया जाता है तो शाम तक कनेक्शन लग जाता है। यह परिवर्तन आया है। जब एक घर में बिजली आती है तो महिला सशक्तिकरण होता है, बच्चों को पढ़ने का अवसर मिलता है।

कौशल विकास योजना के माध्यम से लगभग 40 प्रतिशत महिलाओं को सर्टिफिकेट मिला है। मुद्रा योजना का लगभग 68 प्रतिशत लाभ महिलाओं को मिला है। स्टैंड-अप इंडिया कार्यक्रम का लगभग 81 प्रतिशत लाभ मातृशक्ति को हुआ है। प्रधानमंत्री जन-धन योजना में लगभग 55 प्रतिशत एकाउंट महिलाओं के खुले।

प्रधानमंत्री आवास योजना में लगभग 58 प्रतिशत घरों का मालिकाना हक महिलाओं के पास है। भारत में पहली बार श्री नरेन्द्र मोदी सरकार में महिलाओं को डिफेंस में परमानेंट कमीशन मिलना शुरू हुआ है। अब डिफेंस में महिलाओं को कॉम्बैट ट्रेनिंग मिलना शुरू हुआ है। अब नेशनल डिफेंस एकेडमी में महिलाओं को एडमिशन मिलना शुरू हुआ है। प्रधानमंत्री श्री नरेन्द्र मोदी जी के नेतृत्व में आज महिलायें किसी से कम नहीं हैं। अब महिलाये हर क्षेत्र में आगे बढ़ रही हैं।

मातृ सशक्तिकरण के इस माहौल में 'कमल मित्र' बना कर अधिक से अधिक महिलाओं तक सरकार की योजनाओं का लाभ पहुंचाने की कोशिश करते हैं तो यह एक बहुत ही अच्छा कदम है। आजादी के अमृतकाल में विकसित भारत बनाने में सहयोग करने का एक पुनीत अवसर मिल रहा है। आजादी के 75 साल हुए हैं और अगले 25 वर्षों में हमें 'विकसित भारत' बनाने के लिए एकजुट हो जाना है। यह हम सबके लिए सौभाग्य की बात है।

स्वास्थ्य के क्षेत्र में भी नीतिगत सुधार हुए हैं। सुरक्षित मातृत्व की दिशा में श्री नरेन्द्र मोदी जी की सरकार ने बहुत बड़ा कदम उठाया है। अब जब महिलायें गर्भवती होती हैं तो उस दिन से लेकर उनकी गर्भावस्था के दौरान सभी तरह की जांच से लेकर सभी टीकाकरण, डिलवरी के पहले फ्री ट्रांसपोर्टेशन, डिलीवरी के बाद फ्री ट्रांसपोर्टेशन और उसके साथ-साथ आर्थिक सहायता भी केंद्र सरकार की ओर से दी जा रही है। यदि इसके बाद भी कोई समस्या हो जाए तो उसे फिर से हॉस्पिटल लाकर इलाज करना, यह जिम्मेदारी भारत सरकार उठा रही है। साथ ही, नवजात शिशु का 12 तरह के टीकाकरण आदि की जिम्मेदारी भी केंद्र सरकार उठा रही है। कहना यह बहुत आसान है किंतु यह कितनी बड़ी योजना है और किस तरह जिम्मेवारी के साथ की जा रही है, यह अपने आप में एक मिसाल है। कोई टीका तीसरे महीने में लगता है, कोई दसवें महीने में, कोई दो साल-पांच साल पर। ये सभी कार्यक्रम भारत सरकार वैज्ञानिक तरीके से कर रही है।

हम सब अपनी इफेक्टिविटी को चेक और री-चेक करते रहें। अक्सर हम अपने काम को रूटीन वर्क समझ लेते हैं, उसमें कितना सुधार कर सकते हैं, इस पर ध्यान नहीं देते। हमें इससे बाहर निकलना है और हमें हमेशा इनोवेटिव बने रहना है, इनोवेटिव तरीके से सोचना है। इनोवेटिव रहेंगे तो विचारों में ताजगी रहेगी और हमारी सोच में विस्तार होता जाएगा। हमें यह चिंतन करते रहना चाहिए कि जो काम हम कर रहे हैं, इसे और इंप्रूव कैसे करें और अपने रिजल्ट को और कैसे बेहतर करें। ▪

अमर आग है

अटल बिहारी वाजपेयी

कोटि-कोटि आकुल हृदयों में
सुलग रही है जो चिनगारी,
अमर आग है, अमर आग है।

उत्तर दिशि में अजित दुर्ग सा,
जागरूक प्रहरी युग-युग का,
मूर्तिमन्त स्थैर्य, धीरता की प्रतिमा सा,
अटल अडिग नगपति विशाल है।

नभ की छाती को छूता सा,
कीर्ति-पुंज सा,
दिव्य दीपकों के प्रकाश में-
झिल-मिल-झिल-मिल-
ज्योतित माँ का पूज्य भाल है।

कौन कह रहा उसे हिमालय?
वह तो हिमावृत्त ज्वालागिरि,
अणु-अणु कण-कण, गह्वर-कन्दर,
गुन्जित ध्वनित कर रहा अब तक
डिम-डिम डमरू का भैरव स्वर।

गौरीशंकर के गिरि गह्वर
शैल-शिखर, निर्झर, वन-उपवन,
तरु तृण दीपित।

शंकर के तीसरे नयन की-
प्रलय-वह्नि से जगमग ज्योतित।
जिसको छू कर,
क्षण भर ही में
काम रह गया था मुट्ठी भर।

यही आग ले प्रतिदिन प्राची
अपना अरुण सुहाग सजाती,
और प्रखर दिनकर की,
कंचन काया,
इसी आग में पल कर
निशि-निशि, दिन-दिन,
जल-जल, प्रतिपल,
सृष्टि-प्रलय-पर्यन्त तमावृत
जगती को रास्ता दिखाती।

यही आग ले हिन्दमहासागर की
छाती है धधकाती।
लहर-लहर प्रज्वाल लपट बन
पूर्व-पश्चिमी घाटों को छू,
सदियों की हतभाग्य निशा में
सोये शिलाखण्ड सुलगाती।

नयन-नयन में यही आग ले,
कण्ठ-कण्ठ में प्रलय-राग ले,
अब तक हिन्दुस्तान जिया है।
इसी आग की दिव्य विभा में,
सप्त-सिंधु के कल कछार पर,
सुर-सरिता की धवल धार पर
तीर-तटों पर,
पर्णकुटी में, पर्णासन पर,
कोटि-कोटि ऋ षियों-मुनियों ने
दिव्य ज्ञान का सोम पिया था।

जिसका कुछ उच्छिष्ट मात्र
बर्बर पश्चिम ने,
दया दान सा,
निज जीवन को सफल मान कर,
कर पसार कर,
सिर-आंखों पर धार लिया था।

वेद-वेद के मन्त्र-मन्त्र में,
मन्त्र-मन्त्र की पंक्ति-पंक्ति में,
पंक्ति-पंक्ति के शब्द-शब्द में,
शब्द-शब्द के अक्षर स्वर में,
दिव्य ज्ञान-आलोक प्रदीपित,
सत्यं, शिवं, सुन्दरं शोभित,
कपिल, कणाद और जैमिनि की
स्वानुभूति का अमर प्रकाशन,
विशद-विवेचन, प्रत्यालोचन,

ब्रह्म, जगत, माया का दर्शन।
कोटि-कोटि कंठों में गूँजा
जो अतिमंगलमय स्वर्गिक स्वर,
अमर राग है, अमर आग है।
कोटि-कोटि आकुल हृदयों में
सुलग रही है जो चिनगारी
अमर आग है, अमर आग है।

यही आग सरयू के तट पर
दशरथ जी के राजमहल में,
घन-समूह में चल चपला सी,
प्रगट हुई प्रज्वलित हुई थी।

दैत्य-दानवों के अधर्म से
पीड़ित पुण्यभूमि का जन-जन,
शंकित मन-मन,
त्रसित विप्र,
आकुल मुनिवर-गण,
बोल रही अधर्म की तूती
दुस्तर हुआ धर्म का पालन।

तब स्वदेश-रक्षार्थ देश का
सोया क्षत्रियत्व जागा था।
राम-रूप में प्रगट हुई यह ज्वाला,
जिसने
असुर जलाए,
देश बचाया,
वाल्मीकि ने जिसको गाया।

चकाचौंध दुनिया ने देखी
सीता के सतीत्व की ज्वाला,
विश्व चकित रह गया देख कर
नारी की रक्षा-निमित्त जब
नर क्या वानर ने भी अपना,
महाकाल की बलि-वेदी पर,
अगणित हो कर
सस्मित हर्षित शीश चढ़ाया।

यही आग प्रज्वलित हुई थी-
यमुना की आकुल आहों से,
अत्याचार-प्रपीड़ित ब्रज के
अश्रु-सिन्धु में बड़वानल बन।
कौन सह सका माँ का क्रन्दन?

दीन देवकी ने कारा में,
सुलगाई थी यही आग, जो
कृष्ण-रूप में फूट पड़ी थी।
जिसको छूकर,
माँ के कर की कड़ियाँ,
पग की लड़ियाँ
चट-चट टूट पड़ी थीं।

पाँचजन्य का भैरव स्वर सुन,
तड़प उठा आक्रुद्ध सुदर्शन,
अर्जुन का गाण्डीव,
भीम की गदा,
धर्म का धर्म डट गया,

अमर भूमि में,
समर भूमि में,
धर्म भूमि में,
कर्म भूमि में,
गूँज उठी गीता की वाणी,
मंगलमय जन-जन कल्याणी।

अपढ़, अजान विश्व ने पाई
शीश झुका कर एक धरोहर।
कौन दार्शनिक दे पाया है
अब तक ऐसा जीवन-दर्शन?

कालिंदी के कल कछार पर
कृष्ण-कंठ से गूँजा जो स्वर
अमर राग है, अमर राग है।

कोटि-कोटि आकुल हृदयों में
सुलग रही है जो चिनगारी,
अमर आग है, अमर आग है।

'मन की बात' ने सबको एक सूत्र में बाँधा

भारत की शक्ति इसकी विविधता में है। हमारे देश में देखने के लिए बहुत कुछ है। इसी को देखते हुए Education Ministry ने "युवासंगम" नाम से एक बेहतरीन पहल की है।

इस पहल का उद्देश्य People to People Connect बढ़ाने के साथ ही देश के युवाओं को आपस में घुलने-मिलने का मौका देना। विभिन्न राज्यों के उच्च शिक्षा संस्थानों को इससे जोड़ा गया है। "युवासंगम" में युवा दूसरे राज्यों के शहरों और गावों में जाते हैं, उन्हें अलग-अलग तरह के लोगों के साथ मिलने का मौका मिलता है।

इस बार 'मन की बात' का ये एपिसोड 2nd century का प्रारंभ है। पिछले महीने हम सभी ने इसकी special century को Celebrate किया है। आपकी भागीदारी ही इस कार्यक्रम की सबसे बड़ी ताकत है। 100वें एपिसोड के Broadcast के समय, एक प्रकार से पूरा देश एक सूत्र में बंध गया था। हमारे सफाईकर्मी भाई-बहन हों या फिर अलग-अलग sectors के दिग्गज, 'मन की बात' ने सबको एक साथ लाने का काम किया है। आप सभी ने जो आत्मीयता और स्नेह 'मन की बात' के लिए दिखाया है, वो अभूतपूर्व है, भावुक कर देने वाला है। जब 'मन की बात' का प्रसारण हुआ, तो उस समय दुनिया के अलग-अलग देशों में, अलग-अलग Time zone में, कहीं शाम हो रही थी तो कहीं देर रात थी, इसके बावजूद, बड़ी संख्या में लोगों ने 100वें एपिसोड को सुनने के लिए समय निकाला। मैंने हजारों मील दूर New Zealand का वो विडियो भी देखा, जिसमें 100 वर्ष की एक माताजी अपना आशीर्वाद दे रही हैं। 'मन की बात' को लेकर देश-विदेश के लोगों ने अपने विचार रखे हैं। बहुत सारे लोगों ने Constructive Analysis भी किया है। लोगों ने इस बात को appreciate किया है कि 'मन की बात' में देश और देशवासियो की उपलब्धियों की ही चर्चा होती है। मैं एक बार फिर आप सभी को इस आशीर्वाद के लिए पूरे आदर के साथ धन्यवाद देता हूं।

बीते दिनों हमने 'मन की बात' में काशी-तमिल संगमम की बात की, सौराष्ट्र-तमिल संगमम की बात की। कुछ समय पहले ही वाराणसी में, काशी-तेलुगू संगमम भी हुआ। एक भारत, श्रेष्ठ भारत की भावना को ताकत देने वाला ऐसे ही एक और अनूठा प्रयास देश में हुआ है। ये प्रयास है, युवा संगम का। मैंने सोचा, इस बारे में विस्तार से क्यों न उन्हीं लोगों से पूछा जाए, जो इस अनूठे प्रयास का हिस्सा रहे हैं। इसलिए अभी मेरे साथ फोन पर दो युवा जुड़े हुए हैं - एक हैं अरुणाचल प्रदेश के ग्यामर न्योकुम जी और दूसरी बेटी है बिहार की बिटिया विशाखा सिंह जी। आइए पहले हम ग्यामर न्योकुम से बात करते हैं।

प्रधानमंत्री जी– ग्यामर जी, नमस्ते!

ग्यामर जी– नमस्ते मोदी जी!

प्रधानमंत्री जी– अच्छा ग्यामर जी जरा सबसे पहले तो मैं आपके विषय में जानना चाहता हूँ।

ग्यामर जी– मोदी जी सबसे पहले तो मैं आपका और भारत सरकार का बहुत ही ज्यादा आभार व्यक्त करता हूँ, कि आपने बहुत कीमती Time निकाल के मुझ से बात करने का मुझे मौका दिया मैं National Institute of Technology, Arunachal Pradesh में First year में Mechanical Engineering में पढ़ रहा हूँ

प्रधानमंत्री जी– और परिवार में क्या करते हैं पिताजी वगैरह।

ग्यामर जी– जी मेरे पिताजी छोटे मोटे business और उसके बाद कुछ farming में सब करते हैं।

प्रधानमंत्री जी– युवा संगम के लिए आपको पता कैसे चला, युवा संगम में गए कहाँ, कैसे गए, क्या हुआ?

ग्यामर जी – मोदी जी मुझे युवा संगम का हमारे जो institution हैं जो NIT हैं उन्होंने हमें बताया था कि आप इसमें भाग ले सकते हैं। तो मैंने फिर थोड़ा internet में खोज किया फिर मुझे पता चला कि ये बहुत ही अच्छा Programme है जिसने मुझे एक भारत श्रेष्ठ भारत का जो vision है उसमें भी बहुत ही योगदान दे सकते हैं और मुझे कुछ नया चीज जानने का मौका मिलेगा ना, तो तुरंत, मैंने, फिर, उसमें website में जाके enrol किया। मेरा

अनुभव बहुत ही मजेदार रहा, बहुत ही अच्छा था।

प्रधानमंत्री जी– कोई selection आप को करना था?

ग्यामर जी– मोदी जी जब website खोला था तो अरुणाचल वालों के लिए दो option था। पहला था आँध्रप्रदेश जिसमें IIT तिरुपति था और दूसरा था Central University, Rajasthan तो मैंने राजस्थान में किया था अपना First preference, Second Preference मैंने IIT तिरुपति किया था। तो मुझे राजस्थान के लिए select हुआ था। तो मैं राजस्थान गया था।

प्रधानमंत्री जी– कैसा रहा आपका राजस्थान यात्रा? आप पहली बार राजस्थान गए थे!

ग्यामर जी – हाँ मैं पहली बार अरुणाचल से बाहर गया था मैंने तो जो राजस्थान के किले ये सब तो मैंने बस फिल्म और फोन में ही देखा था न, तो, मैंने, जब, पहली बार गया तो मेरा experience बहुत ही वहां के लोग बहुत ही अच्छे थे और जो हमें treatment दिया बहुत ही ज्यादा अच्छे थे। क्या हमें नया-नया चीज सीखने को मिला मुझे राजस्थान के बड़े झील और उधर के लोग जैसे कि rain water harvesting बहुत कुछ नया-नया चीज सीखने को मिला, जो मुझे बिलकुल ही मालूम नहीं था, तो, ये programme मुझे बहुत ही अच्छा था, राजस्थान का visit।

प्रधानमंत्री जी – देखिये आपको तो सबसे बड़ा फायदा ये हुआ है, कि, अरुणाचल में भी वीरों की भूमि है, राजस्थान भी वीरों की भूमि है और राजस्थान से सेना में भी बहुत बड़ी संख्या में लोग हैं, और अरुणाचल में सीमा पर जो सैनिक हैं उसमें जब भी राजस्थान के लोग मिलेंगे तो आप जरुर उनसे बात करेंगे, कि देखिये,मैं राजस्थान गया था, ऐसा अनुभव था तो, आपकी तो निकटता, एकदम से बढ़ जाएगी। अच्छा आपको वहां कोई समानताएं भी ध्यान में आई होगी आपको लगता होगा हां यार ये अरुणाचल

में भी तो ऐसा ही है।

ग्यामर जी – मोदी जी मुझे जो एक समानता मुझे मिली न वो थी कि जो देश प्रेम है ना और जो एक भारत श्रेष्ठ भारत का जो vision और जो feeling जो मुझे देखा, क्योंकि अरुणाचल में भी लोग अपने आप को बहुत ही गर्व महसूस करते हैं कि वो भारतीय हैं इसलिये और राजस्थान में भी लोग अपनी मातृ भूमि के लिए बहुत जो गर्व महसूस होता है वो चीज मुझे बहुत ही ज्यादा नजर आया और specially जो युवा पीढ़ी है ना क्योंकि मैंने उधर में बहुत सारे युवा के साथ interact और बातचीत किया ना तो वो चीज जो मुझे बहुत similarity नजर आया, जो वो चाहते हैं कि भारत के लिए जो कुछ करने का और जो अपने देश के लिए प्रेम है ना वो चीज मुझे बहुत ही दोनों ही राज्यों में बहुत ही similarity नजर आया।

प्रधानमंत्री जी – तो वहां जो मित्र मिले हैं उनसे परिचय बढ़ाया कि आकर के भूल गए?

ग्यामर जी– नहीं, हमने बढ़ाया परिचय किया।

प्रधानमंत्री जी – हाँ...! तो आप Social Media में active है ?

ग्यामर जी – जी मोदी जी, मैं active हूँ।

प्रधानमंत्री जी– तो आपने Blog लिखना चाहिए, अपना ये युवा संगम का अनुभव कैसा रहा, आपने उसमें enrol कैसे किया, राजस्थान में अनुभव कैसा रहा ताकि देशभर के युवाओं को पता चले कि एक भारत श्रेष्ठ भारत का माहात्मय क्या है, ये योजना क्या है? उसका फायदा युवक कैसे ले सकते हैं, पूरा अपने experience का blog लिखना चाहिए, तो बहुत लोगों को पढ़ने के लिए काम आयेगा।

ग्यामर जी – जी मैं जरुर करूँगा।

प्रधानमंत्री जी – ग्यामर जी, बहुत अच्छा लगा आपसे बात कर करके, और आप सब युवा देश के लिए, देश के उज्जवल भविष्य के लिए, क्योंकि ये 25 साल अत्यंत महत्वपूर्ण हैं - आपके जीवन के भी और देश के जीवन के भी, तो मेरी बहुत बहुत शुभकामनाएं है धन्यवाद।

ग्यामर जी – धन्यवाद मोदी जी आपको भी।

प्रधानमंत्री जी – नमस्कार, भईया।

अरुणाचल के लोग इतनी आत्मीयता से भरे होते हैं, कि उनसे बात करते हुए, मुझे, बहुत आनंद आता है। युवा संगम में ग्यामर जी का अनुभव तो बेहतरीन रहा। आइये, अब बिहार की बेटी विशाखा सिंह जी से बात करते हैं।

प्रधानमंत्री जी – विशाखा जी, नमस्कार।

विशाखा जी – सर्वप्रथम तो भारत के माननीय प्रधानमंत्री जी को मेरा प्रणाम और मेरे साथ सभी Delegates की तरफ से आप को बहुत-बहुत प्रणाम।

प्रधानमंत्री जी– अच्छा विशाखा जी पहले अपने बारे में बताइए। फिर मुझे युवा संगम के विषय में भी जानना है।

विशाखा जी – मैं बिहार के सासाराम नाम के शहर की निवासी हूँ और मुझे युवा संगम के बारे में मेरे कॉलेज के WhatsApp group के message के through पता चला था सबसे पहले। तो, उसके बाद फिर मैंने पता करा इसके बारे में और detail निकाली कि ये क्या है? तो मुझे पता चला कि ये प्रधानमंत्री जी की एक scheme 'एक भारत-श्रेष्ठ भारत' के through युवा संगम है। तो उसके बाद मैंने apply करा और जब मैंने apply करा तो मैं excited थी इससे join होने के लिए लेकिन जब वहाँ से घूम के तमिलनाडु जा के वापस आई। वो जो exposure मैंने gain किया उसके बाद मुझे अभी बहुत ज्यादा ऐसा proud feel होता है that I have been the part of this programme, तो मुझे बहुत ही ज्यादा खुशी है उस programme में part लेने की और मैं तहे दिल से आभार व्यक्त करती हूँ आपका कि आपने हमारे जैसे युवाओं के लिए इतना बेहतरीन programme बनाया जिससे हम भारत के विभिन्न भागों के culture को adapt कर सकते हैं।

प्रधानमंत्री जी – विशाखा जी, आप क्या पढ़ती हैं?

विशाखा जी – मैं Computer Science Engineering की Second

Year की छात्रा हूँ।

प्रधानमंत्री जी – अच्छा विशाखा जी, आपने किस राज्य में जाना है, कहाँ जुड़ना है? वो निर्णय कैसे किया?

विशाखा जी – जब मैंने ये युवा संगम के बारे में search करना शुरू किया Google पर, तभी मुझे पता चल गया था कि बिहार के delegates को तमिलनाडु के delegates के साथ exchange किया जा रहा है। तमिलनाडु काफी rich cultural state है हमारे country का तो उस time भी जब मैंने ये जाना, ये देखा कि बिहार वालों को तमिलनाडु भेजा जा रहा है तो इसने भी मुझे बहुत ज्यादा मदद किया ये decision लेने में कि मुझे form fill करना चाहिए, वहाँ जाना चाहिए या नहीं और मैं सच में आज बहुत ज्यादा गौरवान्वित महसूस करती हूँ कि मैंने इसमें part लिया और मुझे बहुत खुशी है।

प्रधानमंत्री जी – आपका पहली बार जाना हुआ तमिलनाडु?

विशाखा जी– जी, मैं पहली बार गई थी।

प्रधानमंत्री जी – अच्छा, कोई खास यादगार चीज अगर आप कहना चाहें तो क्या कहेंगें? देश के युवा सुन रहें हैं आपको।

विशाखा जी – जी, पूरा journey ही माने तो मेरे लिए बहुत ही ज्यादा बेहतरीन रहा है। एक-एक पड़ाव पर हमने बहुत ही अच्छी चीजें सीखी हैं। मैंने तमिलनाडु में जा के अच्छे दोस्त बनाए हैं। वहाँ के culture को adapt किया है। वहाँ के लोगों से मिली मैं। लेकिन सबसे ज्यादा अच्छी चीज जो मुझे लगी वहाँ पे वो पहली चीज तो ये कि किसी को भी मौका नहीं मिलता है ISRO में जाने का और हम delegates थे तो हमें ये मौका मिला था कि हम ISRO में जाएँ Plus दूसरी बात सबसे अच्छी थी वो जब हम राजभवन में गए और हम तमिलनाडु के राज्यपाल जी से मिले। तो वो दो moment जो था वो मेरे लिए काफी सही था और मुझे ऐसा लगता है कि जिस age में हम हैं as a youth हमें वो मौका नहीं मिल पाता जो कि युवा संगम के through मिला है। तो ये काफी सही और सबसे यादगार moment था मेरे लिए।

प्रधानमंत्री जी – बिहार में तो खाने का तरीका अलग है, तमिलनाडु में खाने का तरीका अलग है।

विशाखा जी – जी।

प्रधानमंत्री जी – तो वो set हो गया था पूरी तरह?

विशाखा जी – वहाँ जब हम लोग गए थे, तो South Indian Cuisine है वहाँ पे तमिलनाडु में। तो जैसे ही हम लोग गए थे तो वहाँ जाते के साथ हमें डोसा, इडली, सांभर, उत्तपम, वड़ा, उपमा ये सब serve किया गया था। तो पहले जब हमने try करा तो that was too good! वहाँ का खाना जो है वो बहुत ही healthy है actually बहुत ही ज्यादा taste में भी बेहतरीन है और हमारे North के खाने से बहुत ही ज्यादा अलग है तो मुझे वहाँ का खाना भी बहुत अच्छा लगा और वहाँ के लोग भी बहुत अच्छे लगे।

प्रधानमंत्री जी – तो अब तो दोस्त भी बन गए होंगे तमिलनाडु में?

विशाखा जी – जी ! जी वहाँ पर हम रुके थे NIT Trichy में, उसके बाद IIT Madras में तो उन दोनों जगह के Students से तो मेरी दोस्ती हो गई है। Plus बीच में एक CII का Welcome Ceremony था तो वहां पे वहाँ के आस-पास के college के भी बहुत सारे students आये थे। तो वहाँ हमने उन students से भी interact किया और मुझे बहुत अच्छा लगा उन लोगों से मिल के, काफी लोग तो मेरे दोस्त भी हैं। और कुछ delegate से भी मिले थे जो तमिलनाडु के delegate बिहार आ रहे थे तो हमारी बातचीत उनसे भी हुई थी और हम अभी भी आपस में बात करते हैं तो मुझे बहुत अच्छा लगता है।

प्रधानमंत्री जी – तो विशाखा जी, आप एक blog लिखिए और social media पर ये आपको पूरा अनुभव एक तो इस युवा संगम का फिर 'एक भारत-श्रेष्ठ भारत' का और फिर तमिलनाडु में अपनापन जो मिला, जो आपको स्वागत-सत्कार हुआ। तमिल लोगों का प्यार मिला, ये सारी चीजें देश को बताइये आप। तो लिखोगी आप?

विशाखा जी – जी जरुर !

प्रधानमंत्री जी – तो मेरी तरफ से आपको बहुत शुभकामना है और बहुत-बहुत धन्यवाद।

विशाखा जी – जी thank you so much। नमस्कार।

ग्यामर और विशाखा आपको मेरी बहुत-बहुत शुभकामनाएं। युवा संगम में आपने जो सीखा है, वो जीवन पर्यंत आपके साथ रहे। यही मेरी आप सबके प्रति शुभकामना है।

भारत की शक्ति इसकी विविधता में है। हमारे देश में देखने के लिए बहुत कुछ है। इसी को देखते हुए Education Ministry ने 'युवा-संगम' नाम से एक बेहतरीन पहल की है। इस पहल का उद्देश्य People to People Connect बढ़ाने के साथ ही देश के युवाओं को आपस में घुलने-मिलने का मौका देना। विभिन्न राज्यों के उच्च शिक्षा संस्थानों को इससे जोड़ा गया है। 'युवा-संगम' में युवा दूसरे राज्यों के शहरों और गावों में जाते हैं, उन्हें अलग-अलग तरह के लोगों के साथ मिलने का मौका मिलता है। युवा-संगम के First Round में लगभग 1200 युवा, देश के 22 राज्यों का दौरा कर चुके हैं। जो भी युवा इसका हिस्सा बने हैं, वे अपने साथ ऐसी यादें लेकर वापस लौट रहे हैं, जो जीवनभर उनके हृदय में बसी रहेंगी। हमने देखा है कि कई बड़ी कंपनियों के CEO, Business leaders,उन्होंने Bag-Packers की तरह भारत में समय गुजारा है। मैं जब दूसरे देशों के Leaders से मिलता हूँ, तो कई बार वो भी बताते हैं कि वो अपनी युवावस्था में भारत घूमने के लिए गए थे। हमारे भारत में इतना कुछ जानने और देखने के लिए है कि आपकी उत्सुकता हर बार बढ़ती ही जाएगी। मुझे उम्मीद है कि इन रोमांचक अनुभवों को जानकर आप भी देश के अलग-अलग हिस्सों की यात्रा के लिए जरुर प्रेरित होंगे।

कुछ दिन पहले ही मैं जापान में हिरोशिमा में था। वहां मुझे Hiroshima Peace

Memorial museum में जाने का अवसर मिला। ये एक भावुक कर देने वाला अनुभव था। जब हम इतिहास की यादों को संजोकर रखते हैं तो वो आने वाली पीढ़ियों की बहुत मदद करता है। कई बार Museum में हमें नए सबक मिलते हैं तो कई बार हमें बहुत कुछ सीखने को मिलता है। कुछ दिन पहले ही भारत में International Museum Expo का भी आयोजन किया था। इसमें दुनिया के 1200 से अधिक Museums की विशेषताओं को दर्शाया गया। हमारे यहां भारत में अलग-अलग प्रकार के ऐसे कई Museums हैं, जो हमारे अतीत से जुड़े अनेक पहलुओं को प्रदर्शित करते हैं, जैसे, गुरुग्राम में एक अनोखा संग्रहालय है - Museo Camera, इसमें 1860 के बाद के 8 हजार से ज्यादा कैमरों का collection मौजूद है। तमिलनाडु के Museum of Possibilities को हमारे दिव्यांगजनों को ध्यान में रखकर, design किया गया है। मुंबई का छत्रपति शिवाजी महाराज वास्तु संग्रहालय एक ऐसा museum है, जिसमें 70 हजार से भी अधिक चीजें संरक्षित की गई हैं। साल 2010 में स्थापित, Indian Memory Project एक तरह का Online museum है। ये जो दुनिया भर से भेजी गयी तस्वीरों और कहानियों के माध्यम से भारत के गौरवशाली इतिहास की कड़ियों को जोड़ने में जुटा है। विभाजन की विभिषिका से जुड़ी स्मृतियों को भी सामने लाने का प्रयास किया गया है। बीते वर्षों में भी हमने भारत में नए-नए तरह के museum और memorial बनते देखे हैं। स्वाधीनता संग्राम में आदिवासी भाई - बहनों के योगदान को समर्पित 10 नए museum बनाए जा रहे हैं। कोलकाता के Victoria Memorial में बिप्लोबी भारत Gallery हो या फिर जलियावालां बाग memorial का पुनुरुद्धार,देश के सभी पूर्व प्रधानमंत्रियों को समर्पित PM Museum भी आज दिल्ली की शोभा बढ़ा रहा है। दिल्ली में ही National War Memorial और Police Memorial में हर रोज अनेकों लोग शहीदों को नमन करने आते हैं। ऐतिहासिक दांडी यात्रा को समर्पित दांडी memorial हो या फिर Statue of Unity Museum. खैर, मुझे यहीं रुक जाना पड़ेगा क्योंकि देशभर में Museums की list काफी लम्बी है और पहली बार देश में सभी museums के बारे में जरुरी जानकारियों को compile भी किया गया है। Museum किस Theme पर आधारित है, वहाँ किस तरह की वस्तुएं रखी हैं, वहां की contact details क्या है - ये सब कुछ एक online directory में समाहित है। मेरा आपसे आग्रह है कि आपको जब भी मौका मिले, अपने देश के इन Museums को देखने जरुर जाएँ। आप वहां की आकर्षक तस्वीरों को #(Hashtag) Museum Memories पर share करना भी ना भूलें। इससे अपनी वैभवशाली संस्कृति के साथ हम भारतीयों का जुड़ाव और मजबूत होगा।

- **भाजपा प्रदेश कार्यालय में पार्टी नेताओं ने दिव्यांग बच्चों एवं खिलाड़ियों के साथ सुना 'मन की बात' कार्यक्रम।**

हम सबने एक कहावत कई बार सुनी होगी, बार-बार सुनी होगी - **बिन पानी सब सून**। बिना पानी जीवन पर संकट तो रहता ही है, व्यक्ति और देश का विकास भी ठप्प पड़ जाता है। भविष्य की इसी चुनौती को देखते हुए आज देश के हर जिले में 75 अमृत सरोवरों का निर्माण किया जा रहा है। हमारे अमृत सरोवर, इसलिए विशेष हैं, क्योंकि, ये आजादी के अमृत काल में बन रहे हैं और इसमें लोगों का अमृत प्रयास लगा है। आपको जानकर अच्छा लगेगा कि अब तक 50 हजार से ज्यादा अमृत सरोवरों का निर्माण भी हो चुका है। ये जल संरक्षण की दिशा में बहुत बड़ा कदम है।

हम हर गर्मी में इसी तरह, पानी से जुड़ी चुनौतियों के बारे में बात करते रहते हैं। इस बार भी हम इस विषय को लेंगे, लेकिन इस बार चर्चा करेंगे जल संरक्षण से जुड़े Start-Ups की। एक Start-Up है -FluxGen। ये Start-Up IOT enabled तकनीक के जरिए water management के विकल्प देता है। ये technology पानी के इस्तेमाल के patterns बताएगा और पानी के प्रभावी इस्तेमाल में मदद करेगा। एक और startup है LivNSense।

स्वाधीनता संग्राम में आदिवासी भाई - बहनों के योगदान को समर्पित 10 नए museum बनाए जा रहे हैं। कोलकाता के Victoria Memorial में बिप्लोबी भारत Gallery हो या फिर जलियावालां बाग memorial का पुनुरुद्धार,देश के सभी पूर्व प्रधानमंत्रियों को समर्पित PM Museum भी आज दिल्ली की शोभा बढ़ा रहा है।

ये artificial intelligence और machine learning पर आधारित platform है। इसकी मदद से water distribution की प्रभावी निगरानी की जा सकेगी। इससे ये भी पता चल सकेगा कि कहाँ कितना पानी बर्बाद हो रहा है। एक और Start-Up है 'कुंभी कागज (KumbhiKagaz)'। ये कुंभी कागज (KumbhiKagaz) एक ऐसा विषय है, मुझे पक्का विश्वास है, आपको भी बहुत पसंद आएगा। 'कुंभी कागज' (KumbhiKagaz) Start-Up उसने एक विशेष काम शुरू किया है। वे जलकुंभी से कागज बनाने का काम कर रहे हैं, यानी, जो जलकुंभी, कभी, जलस्त्रोतों के लिए एक समस्या समझी जाती थी, उसी से अब कागज बनने लगा है।

कई युवा अगर innovation और technology के जरिए काम कर रहे हैं, तो कई युवा ऐसे भी हैं जो समाज को जागरूक करने के mission में भी लगे हुए हैं जैसे कि छत्तीसगढ़ में बालोद जिले के युवा हैं। यहाँ के युवाओं ने पानी बचाने के लिए एक अभियान शुरु किया है। ये घर-घर जाकर लोगों को जल-संरक्षण के लिए जागरूक करते हैं। कहीं शादी-ब्याह जैसा कोई आयोजन होता है, तो, युवाओं का ये group वहाँ जाकर, पानी का दुरूपयोग कैसे रोका जा सकता है, इसकी जानकारी देता है। पानी के सदुपयोग से जुड़ा एक प्रेरक प्रयास झारखंड के खूंटी जिले में भी हो रहा है। खूंटी में लोगों ने पानी के संकट से निपटने के लिए बोरी बाँध का रास्ता निकाला है। बोरी बांध से पानी इकट्ठा होने के कारण यहाँ साग-सब्जियाँ भी पैदा होने लगी हैं। इससे लोगों की आमदनी भी बढ़ रही है, और, इलाके की जरूरतें भी पूरी हो रहीं हैं। जनभागीदारी का कोई भी प्रयास कैसे कई बदलावों को साथ लेकर आता है, खूंटी इसका एक आकर्षक उदाहरण बन गया है। मैं, यहाँ के लोगों को इस प्रयास के लिए बहुत-बहुत बधाई देता हूँ।

1965 के युद्ध के समय, हमारे पूर्व प्रधानमंत्री लाल बहादुर शास्त्री जी ने जय जवान, जय किसान का नारा दिया था। बाद में अटल जी ने इसमें जय विज्ञान भी जोड़ दिया था। कुछ वर्ष पहले, देश के वैज्ञानिकों से बात करते हुए मैंने जय अनुसंधान की बात की थी। 'मन की बात' में आज बात एक ऐसे व्यक्ति की, एक ऐसी संस्था की, जो, जय जवान, जय किसान, जय विज्ञान और जय अनुसंधान, इन चारों का ही प्रतिबिंब है। ये सज्जन हैं, महाराष्ट्र के श्रीमान् शिवाजी शामराव डोले जी। शिवाजी डोले, नासिक जिले के एक छोटे से गाँव के रहने वाले हैं। वो गरीब आदिवासी किसान परिवार से आते हैं, और, एक पूर्व सैनिक भी हैं। फौज में रहते हुए उन्होंने अपना जीवन देश के लिए लगाया। Retire होने के बाद उन्होंने कुछ नया सीखने का फैसला किया और Agriculture में Diploma किया, यानी,वो, जय जवान से, जय किसान की तरफ बढ़ चले। अब हर पल उनकी कोशिश यही रहती है कि कैसे कृषि क्षेत्र में अपना अधिक से अधिक योगदान दें। अपने इस अभियान में शिवाजी डोले जी ने 20 लोगों की एक छोटी-सी Team बनाई और कुछ पूर्व सैनिकों को भी इसमें जोड़ा। इसके बाद उनकी इस Team ने Venkateshwara Co-Operative Power & Agro Processing Limited नाम की एक सहकारी संस्था का प्रबंधन अपने हाथ में ले लिया। ये सहकारी संस्था निष्क्रिय पड़ी थी, जिसे revive करने का बीड़ा उन्होंने उठाया। देखते ही देखते आज Venkateshwara Co-Operative का विस्तार कई जिलों में हो गया है। आज ये team महाराष्ट्र और कर्नाटका में काम कर रही है। इससे करीब 18 हजार लोग जुड़े हैं, जिनमें काफी संख्या में हमारे Ex-Servicemen भी हैं। नासिक के मालेगाँव में इस team के सदस्य 500 एकड़ से ज्यादा जमीन में Agro Farming कर रहे हैं। ये team जल संरक्षण के लिए भी कई तालाब भी बनवाने में जुटी है। खास बात यह है कि इन्होंने Organic Farming और Dairy भी शुरू की है। अब इनके उगाए अंगूरों को यूरोप में भी export किया जा रहा है। इस team की जो दो बड़ी विशेषतायें हैं, जिसने मेरा ध्यान आकर्षित किया है, वो ये है - जय विज्ञान और जय अनुसंधान। इसके सदस्य technology और Modern Agro Practices का अधिक से अधिक उपयोग कर रहे हैं। दूसरी विशेषता ये है कि वे export के लिए जरुरी कई तरह के certifications पर भी focus कर रहे हैं। 'सहकार से समृद्धि' की भावना के साथ काम कर रही इस team की मैं सराहना करता हूँ। इस प्रयास से ना सिर्फ बड़ी संख्या में लोगों का सशक्तिकरण हुआ है, बल्कि, आजीविका के अनेक साधन भी बने हैं। मुझे उम्मीद है कि यह प्रयास 'मन की बात' के हर श्रोता को प्रेरित करेगा।

28 मई, महान स्वतंत्रता सेनानी, वीर सावरकर जी की जयंती है। उनके त्याग, साहस और संकल्प-शक्ति से जुड़ी गाथाएँ आज भी हम सबको प्रेरित करती हैं। मैं, वो दिन भूल नहीं सकता, जब मैं, अंडमान में, उस कोठरी में गया था जहाँ वीर सावरकर ने कालापानी की सजा काटी थी।

वीर सावरकर का व्यक्तित्व दृढ़ता और विशालता से समाहित था। उनके निर्भीक और स्वाभिमानी स्वाभाव को गुलामी की मानसिकता बिल्कुल भी रास नहीं आती थी। स्वतंत्रता आंदोलन ही नहीं, सामाजिक समानता और सामाजिक न्याय के लिए भी वीर सावरकर ने जितना कुछ किया उसे आज भी याद किया जाता है। 4 जून, संत कबीरदास जी की जयंती है। कबीरदास जी ने जो मार्ग हमें दिखाया है, वो आज भी उतना ही प्रासंगिक है। कबीरदास जी कहते थे,

''कबीरा कुआँ एक है, पानी भरे अनेक।
बर्तन में ही भेद है, पानी सब में एक।।''

यानी, कुएं पर भले भिन्न-भिन्न तरह के लोग पानी भरने आए, लेकिन, कुआँ किसी में भेद नहीं करता, पानी तो सभी बर्तनों में एक ही होता है। संत कबीर ने समाज को बांटने वाली हर कुप्रथा का विरोध किया, समाज को जागृत करने का प्रयास किया। आज, जब देश विकसित होने के संकल्प के साथ आगे बढ़ रहा है, तो हमें, संत कबीर से प्रेरणा लेते हुए, समाज को सशक्त करने के अपने प्रयास और बढ़ाने चाहिए।

अब मैं आपसे देश की एक ऐसी महान हस्ती के बारे में चर्चा करने जा रहा हूँ जिन्होंने राजनीति और फिल्म जगत में अपनी अद्भुत प्रतिभा के बल पर अमिट छाप छोड़ी। इस महान हस्ती का नाम है एन.टी. रामाराव, जिन्हें हम सभी, एन.टी. आर. (NTR) के नाम से भी जानते हैं। आज, एन.टी.आर. की 100वीं जयंती है।

अपनी बहुमुखी प्रतिभा के बल पर वो न सिर्फ तेलुगु सिनेमा के महानायक बने, बल्कि उन्होंने, करोड़ो लोगों का दिल भी जीता। क्या आपको मालूम है कि उन्होंने 300 से अधिक फिल्मों में काम किया था? उन्होंने कई ऐतिहासिक पात्रों को अपने अभिनय के दम पर फिर से जीवंत कर दिया था। भगवान कृष्ण, राम और ऐसी कई अन्य भूमिकाओं में एन.टी. आर. की acting को लोगों ने इतना पसंद किया कि लोग उन्हें आज भी याद करते हैं। एन.टी.आर. ने सिनेमा जगत के साथ-साथ राजनीति में भी अपनी अलग पहचान बनाई थी। यहाँ भी उन्हें लोगों का भरपूर प्यार और आशीर्वाद मिला। देश-दुनिया में लाखों लोगों के दिलों पर राज करने वाले एन.टी. रामाराव जी को मैं अपनी विनम्र श्रद्धांजलि अर्पित करता हूँ।

'मन की बात' में इस बार इतना ही। अगली बार कुछ नए विषयों के साथ आपके बीच आऊँगा, तब तक कुछ इलाकों में गर्मी और ज्यादा बढ़ चुकी होगी। कहीं-कहीं पर बारिश भी शुरू हो जाएगी। आपको मौसम की हर परिस्थिति में अपनी सेहत का ध्यान रखना है। 21 जून को हम 'World Yoga Day' भी मनाएंगे। उसकी भी देश-विदेश में तैयारियां चल रही हैं। आप इन तैयारियों के बारे में भी अपने 'मन की बात' मुझे लिखते रहिए। किसी और विषय पर कोई और जानकारी अगर आपको मिले तो वो भी मुझे बताइयेगा। मेरा प्रयास ज्यादा से ज्यादा सुझावों को 'मन की बात' में लेने का रहेगा। ▪

खादी नित नये रिकॉर्ड बना रही है: प्रधानमंत्री

खादी के साथ देशवासियों का जुड़ाव नित नये रिकॉर्ड बना रहा है तथा इसके साथ रोजगार को भी प्रोत्साहन मिल रहा है। खादी ग्रामोद्योग शिल्पकारों के कौशल को बढ़ाकर उनकी आय में वृद्धि करने में महत्वपूर्ण भूमिका निभा रहा है। एक अप्रैल, 2022 से 31 जनवरी, 2023 तक, खादी और ग्रामोद्योग आयोग ने 77887.97 करोड़ रुपये का उत्पादन किया, 108571.84 करोड़ रुपये की बिक्री की और 1.72 करोड़ रोजगार पैदा किये।
"ये उपलब्धियां उत्साहित करती हैं, खादी से देशवासियों का यह जुड़ाव रोजगार को बढ़ावा देने के साथ-साथ नित नए रिकॉर्ड बना रहा है।" ▪

12 करोड़ घरों में नल से जल पहुंचने की उपलब्धि सराहनीय- प्रधानमंत्री

यह अत्यंत खुशी की बात है कि गांवों और गरीबों तक हर जरूरी सुविधा पहुंचाने के हमारे प्रयासों के सुपरिणाम निरंतर सामने आ रहे हैं। ▪

अप्रैल 2023 में अब तक की सर्वाधिक जीएसटी वसूली सराहनीय - प्रधानमंत्री

अप्रैल 2023 के लिए जीएसटी राजस्व की वसूली का अब तक का सर्वाधिक 1.87 लाख करोड़ रुपये होना, "भारतीय अर्थव्यवस्था के लिए एक बड़ी खबर"। "भारतीय अर्थव्यवस्था के लिए अच्छी खबर, कम कर दरों के बावजूद कर की वसूली में वृद्धि होना, उस सफलता को दर्शाता है कि कैसे जीएसटी ने समन्वय और अनुपालन में वृद्धि की है।" ▪

धार मेगा टेक्सटाइल पार्क प्रगति के नए द्वार खोलेगा- प्रधानमंत्री

मध्य प्रदेश के धार जिले में मेगा टेक्सटाइल पार्क से जहां मेक इन इंडिया की हमारी पहल को और मजबूती मिलेगी, वहीं युवाओं के लिए रोजगार के साथ-साथ राज्य में विकास के नए द्वार खुलेंगे। ▪

नमो एप के माध्यम से देशवासियों से निरंतर जुड़े रहना मेरे लिये सौभाग्य की बात है: प्रधानमंत्री

#NaMoApp के माध्यम से करोड़ों देशवासियों से निरंतर जुड़े रहना मेरे लिए सौभाग्य की बात है। ▪

रक्षा उत्पादन में एक लाख करोड़ रुपये का आंकड़ा पार करना सराहनीय - प्रधानमंत्री

यह एक ऐसा कमाल है जो हर भारतीय के चेहरे पर मुस्कान लाएगा। इस क्षेत्र में बेजोड़ उत्साह दिखाने के लिए भारत की जनता को बधाई। हम इस क्षेत्र में और भी अधिक विकास करने के रास्ते पर हैं। ▪

भारत में अंग्रेजी सत्ता के आने के साथ ही गाँव-गाँव में उनके विरुद्ध विद्रोह होने लगा, पर व्यक्तिगत या बहुत छोटे स्तर पर होने के कारण इन संघर्षों को सफलता नहीं मिली। अंग्रेजों के विरुद्ध पहला संगठित संग्राम 1857 में हुआ। इसमें जिन वीरों ने अपने साहस से अंग्रेजी सेनानायकों के दाँत खट्टे किये, उनमें झाँसी की रानी लक्ष्मीबाई का नाम प्रमुख है।

रानी लक्ष्मीबाई

रानी लक्ष्मीबाई मराठा शासित झाँसी राज्य की रानी और 1857 के प्रथम भारतीय स्वतन्त्रता संग्राम की वीरांगना थीं जिन्होंने मात्र 23 वर्ष की आयु में ब्रिटिश साम्राज्य की सेना से संग्राम किया और रणक्षेत्र में वीरगति प्राप्त की किन्तु जीते जी अंग्रेजों को अपनी झाँसी पर कब्जा नहीं करने दिया। भारत में अंग्रेजी सत्ता के आने के साथ ही गाँव-गाँव में उनके विरुद्ध विद्रोह होने लगा, पर व्यक्तिगत या बहुत छोटे स्तर पर होने के कारण इन संघर्षों को सफलता नहीं मिली। अंग्रेजों के विरुद्ध पहला संगठित संग्राम 1857 में हुआ। इसमें जिन वीरों ने अपने साहस से अंग्रेजी सेनानायकों के दाँत खट्टे किये, उनमें झाँसी की रानी लक्ष्मीबाई का नाम प्रमुख है।

19 नवम्बर, 1835 को वाराणसी में जन्मी लक्ष्मीबाई के बचपन का नाम मनु था। प्यार से लोग उसे मणिकर्णिका तथा छबीली भी कहते थे। इनके पिता श्री मोरोपन्त ताँबे तथा माँ श्रीमती भागीरथी बाई थीं। गुड़ियों से खेलने की अवस्था से ही उसे घुड़सवारी, तीरन्दाजी, तलवार चलाना, युद्ध करना जैसे पुरुषोचित कामों में बहुत आनन्द आता था। नाना साहब पेशवा उसके बचपन के साथियों में थे। उन दिनों बाल विवाह का प्रचलन था। अतः सात वर्ष की अवस्था में ही मनु का विवाह झाँसी के महाराजा गंगाधर राव से हो गया। विवाह के बाद वह लक्ष्मीबाई कहलायीं। उनका वैवाहिक जीवन सुखद नहीं रहा।

जब वह 18 वर्ष की ही थीं, तब राजा का देहान्त हो गया। दुःख की बात यह भी थी कि वे तब तक निःसन्तान थे। युवावस्था के सुख देखने से पूर्व ही रानी विधवा हो गयीं। उन दिनों अंग्रेज शासक ऐसी बिना वारिस की जागीरों तथा राज्यों को अपने कब्जे में कर लेते थे। इसी भय से राजा ने मृत्यु से पूर्व ब्रिटिश शासन तथा अपने राज्य के प्रमुख लोगों के सम्मुख दामोदर राव को दत्तक पुत्र स्वीकार कर लिया था, पर उनके परलोक सिधारते ही अंग्रेजों की लार टपकने लगी। उन्होंने दामोदर राव को मान्यता देने से मनाकर झाँसी राज्य को ब्रिटिश शासन में मिलाने की घोषणा कर दी। यह सुनते ही लक्ष्मीबाई सिंहनी के समान गरज उठी। मैं अपनी झाँसी नहीं दूँगी।

अंग्रेजों ने रानी के ही एक सरदार सदाशिव को आगे कर विद्रोह करा दिया। उसने झाँसी से 50 कि.मी दूर स्थित करोरा किले पर अधिकार कर लिया, पर रानी ने उसे परास्त कर दिया। इसी बीच ओरछा का दीवान नत्थे खाँ झाँसी पर चढ़ आया। उसके पास साठ हजार सेना थी, पर रानी ने अपने शौर्य व पराक्रम से उसे भी दिन में तारे दिखा दिये।

इधर देश में जगह-जगह सेना में अंग्रेजों के विरुद्ध विद्रोह शुरू हो गये। झाँसी में सेना में कार्यरत भारतीय सैनिकों ने भी चुन-चुन कर अंग्रेज अधिकारियों को मारना शुरू कर दिया। रानी ने अब राज्य की बागडोर पूरी तरह अपने हाथ में ले ली, पर अंग्रेज उधर नयी गोटियाँ बैठा रहे थे। जनरल ह्यू रोज ने एक बड़ी सेना लेकर झाँसी पर हमला कर दिया. रानी दामोदर राव को पीठ पर बाँधकर 22 मार्च, 1858 को युद्धक्षेत्र में उतर गयी। आठ दिन तक युद्ध चलता रहा, पर अंग्रेज आगे नहीं बढ़ सके। नौवें दिन अपने बीस हजार सैनिकों के साथ तात्यां टोपे रानी की सहायता को आ गये, पर अंग्रेजों ने भी नयी कुमुक मँगा ली। रानी पीछे हटकर कालपी जा पहुँची। कालपी से वह ग्वालियर आयीं। वहाँ 17 जून, 1858 को ब्रिगेडियर स्मिथ के साथ हुए युद्ध में उन्होंने वीरगति पायी। रानी के विश्वासपात्र बाबा गंगादास ने उनका शव अपनी झोंपड़ी में रखकर आग लगा दी। रानी केवल 22 वर्ष और सात महीने ही जीवित रहीं. पर ''खूब लड़ी मरदानी वह तो, झाँसी वाली रानी थी.....'' गाकर उन्हें सदा याद किया जाता है। ▪

रानी दुर्गावती

रानी ने अंत समय निकट जानकर वजीर आधारसिंह से आग्रह किया कि वह अपनी तलवार से उनकी गर्दन काट दे, पर वह इसके लिए तैयार नहीं हुआ। अत:रानी अपनी कटार स्वयं ही अपने सीने में भोंककर आत्म बलिदान के पथ पर बढ़ गयीं।

रानी दुर्गावती भारत की एक वीरांगना थीं जिन्होंने अपने विवाह के चार वर्ष बाद अपने पति दलपत शाह की असमय मृत्यु के बाद अपने पुत्र वीरनारायण को सिंहासन पर बैठाकर उसके संरक्षक के रूप में स्वयं शासन करना प्रारंभ किया। इनके शासन में राज्य की बहुत उन्नति हुई। दुर्गावती को तीर तथा बंदूक चलाने का अच्छा अभ्यास था। चीते के शिकार में इनकी विशेष रुचि थी। उनके राज्य का नाम गढ़मंडला था जिसका केन्द्र जबलपुर था। वे प्रयागराज के मुगल शासक आसफ खान से लोहा लेने के लिये प्रसिद्ध हैं।

महारानी दुर्गावती कालिंजर के राजा कीर्तिसिंह चंदेल की एकमात्र संतान थीं। बांदा जिले के कालिंजर किले में 1524 ईसवी की दुर्गाष्टमी पर जन्म के कारण उनका नाम दुर्गावती रखा गया। नाम के अनुरूप ही तेज, साहस, शौर्य और सुन्दरता के कारण इनकी प्रसिद्धि सब ओर फैल गयी। दुर्गावती के मायके और ससुराल पक्ष की जाति भिन्न थी लेकिन फिर भी दुर्गावती की प्रसिद्धि से प्रभावित होकर गोण्डवाना साम्राज्य के राजा संग्राम शाह मडावी ने अपने पुत्र दलपत शाह मडावी से विवाह करके, उसे अपनी पुत्रवधू बनाया था।

दुर्भाग्यवश विवाह के चार वर्ष बाद ही राजा दलपतशाह का निधन हो गया। उस समय दुर्गावती की गोद में तीन वर्षीय नारायण ही था। अतः रानी ने स्वयं ही गढ़मंडला का शासन संभाल लिया। उन्होंने अनेक मठ, कुएं, बावड़ी तथा धर्मशालाएं बनवाईं। वर्तमान जबलपुर उनके राज्य का केन्द्र था। उन्होंने अपनी दासी के नाम पर चेरीताल, अपने नाम पर रानीताल तथा अपने विश्वस्त दीवान आधारसिंह के नाम पर आधारताल बनवाया।

रानी दुर्गावती के इस सुखी और संपन्न राज्य पर मालवा के मुसलमान शासक बाजबहादुर ने कई बार हमला किया, पर हर बार वह पराजित हुआ। मुगल शासक अकबर भी राज्य को जीतकर रानी को अपने हरम में डालना चाहता था। उसने विवाद प्रारम्भ करने हेतु रानी के प्रिय सफेद हाथी (सरमन) और उनके विश्वस्त वजीर आधारसिंह को भेंट के रूप में अपने पास भेजने को कहा। रानी ने यह मांग ठुकरा दी।

इस पर अकबर ने अपने एक रिश्तेदार आसफ खां के नेतृत्व में गोण्डवाना साम्राज्य पर हमला कर दिया। एक बार तो आसफ खां पराजित हुआ, पर अगली बार उसने दुगनी सेना और तैयारी के साथ हमला बोला। दुर्गावती के पास उस समय बहुत कम सैनिक थे। उन्होंने जबलपुर के पास नरई नाले के किनारे मोर्चा लगाया तथा स्वयं पुरुष वेश में युद्ध का नेतृत्व किया। इस युद्ध में 3,000 मुगल सैनिक मारे गये लेकिन रानी की भी अपार क्षति हुई थी।

अगले दिन 24 जून 1564 को मुगल सेना ने फिर हमला बोला। आज रानी का पक्ष दुर्बल था, अतः रानी ने अपने पुत्र नारायण को सुरक्षित स्थान पर भेज दिया। तभी एक तीर उनकी भुजा में लगा, रानी ने उसे निकाल फेंका। दूसरे तीर ने उनकी आंख को भेद दिया, रानी ने इसे भी निकाला पर उसकी नोक आंख में ही रह गयी। तभी तीसरा तीर उनकी गर्दन में आकर धंस गया। रानी ने अंत समय निकट जानकर वजीर आधारसिंह से आग्रह किया कि वह अपनी तलवार से उनकी गर्दन काट दे, पर वह इसके लिए तैयार नहीं हुआ। अतः रानी अपनी कटार स्वयं ही अपने सीने में भोंककर आत्म बलिदान के पथ पर बढ़ गयीं। महारानी दुर्गावती ने अकबर के सेनापति आसफ खान से लड़कर अपनी जान गंवाने से पहले पंद्रह वर्षों तक शासन किया था। जबलपुर के पास जहां यह ऐतिहासिक युद्ध हुआ था, उस स्थान का नाम बरेला है, जो मंडला रोड पर स्थित है, वहीं रानी की समाधि बनी है, जहां गोण्ड जनजाति के लोग जाकर अपने श्रद्धासुमन अर्पित करते हैं। जबलपुर मे स्थित रानी दुर्गावती विश्वविद्यालय भी इन्ही रानी के नाम पर बनी हुई है। ▪

बिरसा मुंडा
वनवासियों के महानायक

बिरसा मुंडा 19वीं सदी के एक प्रमुख आदिवासी जननायक थे। उनके नेतृत्व में मुंडा आदिवासियों ने 19वीं सदी के आखिरी वर्षों में मुंडाओं के महान आन्दोलन उलगुलान को अंजाम दिया। बिरसा को मुंडा समाज के लोग भगवान के रूप में पूजते हैं।

सुगना मुंडा और करमी हातू के पुत्र बिरसा मुंडा का जन्म 15 नवंबर 1875 को झारखंड प्रदेश में राँची के उलीहातू गाँव में हुआ था। साल्गा गाँव में प्रारंभिक पढ़ाई के बाद वे चाईबासा इंग्लिश मिडिल स्कूल में पढ़ने आये। इनका मन हमेशा अपने समाज की ब्रिटिश शासकों द्वारा की गयी बुरी दशा पर सोचता रहता था। उन्होंने मुंडा लोगों को अंग्रेजों से मुक्ति पाने के लिये अपना नेतृत्व प्रदान किया। 1894 में मानसून के छोटा नागपुर में असफल होने के कारण भयंकर अकाल और महामारी फैली हुई थी। बिरसा ने पूरे मनोयोग से अपने लोगों की सेवा की।

1 अक्टूबर 1894 को नौजवान नेता के रूप में सभी मुंडाओं को एकत्र कर इन्होंने अंग्रेजो से लगान माफी के लिये आन्दोलन किया। 1895 में उन्हें गिरफ्तार कर लिया गया और हजारीबाग केन्द्रीय कारागार में दो साल के कारावास की सजा दी गयी। लेकिन बिरसा और उसके शिष्यों ने क्षेत्र की अकाल पीड़ित जनता की सहायता करने की ठान रखी थी और अपने जीवन काल में ही एक महापुरुष का दर्जा पाया। उन्हें उस इलाके के लोग 'धरती बाबा' के नाम से पुकारते थे। उनके प्रभाव की वृद्धि के बाद पूरे इलाके के मुंडाओं में संगठित होने की चेतना जागी।

1897 से 1900 के बीच मुंडाओं और अंग्रेज सिपाहियों के बीच युद्ध होते रहे और बिरसा और उसके चाहने वाले लोगों ने अंग्रेजों की नाक में दम कर रखा था। अगस्त 1897 में बिरसा और उसके चार सौ सिपाहियों ने तीर कमानों से लैस होकर खूँटी थाने पर धावा बोला। 1898 में तांगा नदी के किनारे मुंडाओं की भिड़ंत अंग्रेज सेनाओं से हुई जिसमें पहले तो अंग्रेजी सेना हार गयी लेकिन बाद में इसके बदले उस इलाके के बहुत से आदिवासी नेताओं की गिरफ्तारियाँ हुईं।

जनवरी 1900 डोमबाड़ी पहाड़ी पर एक और संघर्ष हुआ था जिसमें बहुत से औरतें और बच्चे मारे गये थे। उस जगह बिरसा अपनी जनसभा को संबोधित कर रहे थे। बाद में बिरसा के कुछ शिष्यों की गिरफ्तारियाँ भी हुईं। अन्त में स्वयं बिरसा भी 3 फरवरी 1900 को चक्रधरपुर में गिरफ्तार कर लिये गये।

बिरसा ने अपनी अन्तिम साँसें 9 जून 1900 को राँची कारागार में लीं। आज भी बिहार, उड़ीसा, झारखंड, छत्तीसगढ़ और पश्चिम बंगाल के आदिवासी इलाकों में बिरसा मुण्डा को भगवान की तरह पूजा जाता है। बिरसा मुण्डा की समाधि राँची में कोकर के निकट डिस्टिलरी पुल के पास स्थित है। वहीं उनका स्टेच्यू भी लगा है। उनकी स्मृति में रांची में बिरसा मुण्डा केन्द्रीय कारागार तथा बिरसा मुंडा हवाई अड्डा भी है।

बिरसा मुंडा भारत के एक आदिवासी स्वतंत्रता सेनानी और लोक नायक थे जिनकी ख्याति अंग्रेजो के खिलाफ स्वतंत्रता संग्राम में काफी हुयी थी।

मुंडा रीती रिवाज के अनुसार उनका नाम बृहस्पतिवार के हिसाब से बिरसा रखा गया था। बिरसा के पिता का नाम सुगना मुंडा और माता का नाम करमी हटू था। उनका परिवार रोजगार की तलाश में उनके जन्म के बाद उलिहतु से कुरुमदा आकर बस गया जहां वो खेतों में काम करके अपना जीवन चलाते थे। उसके बाद फिर काम की तलाश में उनका परिवार बबा चला गया।

उन्होंने धर्म परिवर्तन का विरोध किया और अपने आदिवासी लोगो को हिन्दू धर्म के सिद्धांतों को समझाया था। उन्होंने गाय की पूजा करने और गौहत्या का विरोध करने की लोगो को सलाह दी। उन्होंने अंग्रेज सरकार के खिलाफ नारा दिया 'रानी का शासन खत्म करो और हमारा साम्राज्य स्थापित करो।' उनके इस नारे को आज भी भारत के आदिवासी इलाकों में याद किया जाता है। अंग्रेजों ने आदिवासी कृषि प्रणाली में बदलाव किये जिससे आदिवासियों को काफी नुकसान होता था। 1895 में लगान माफी के लिए अंग्रेजों के विरुद्ध मोर्चा खोल दिया था।

बिरसा मुंडा ने सन 1900 में अंग्रेजो के विरुद्ध विद्रोह करने की घोषणा करते हुए कहा 'हम ब्रिटिश शासन तन्त्र के विरुद्ध विद्रोह की घोषणा करते है और कभी अंग्रेज नियमो का पालन नही करेंगे, ओ गोरी चमड़ी वाले अंग्रेजो, तुम्हारा हमारे देश में क्या काम? छोटा नागपुर सदियों से हमारा है और तुम इसे हमसे छीन नहीं सकते हैं इसलिए बेहतर है कि वापस अपने देश लौट जाओ वरना लाशों के ढेर लगा दिए जायेंगे।' इस घोषणा को एक घोषणा पत्र में अंग्रेजो के पास भेजा गया तो अंग्रेजो ने अपनी सेना बिरसा को पकड़ने के लिए रवाना कर दी। अंग्रेज सरकार ने बिरसा की गिरफ्तारी पर 500 रूपये का इनाम रखा था। बिरसा भी तीर कमान और भालों के साथ युद्ध की तैयारियों में लग गये। ▪

समाज और विचारधारा

पं. दीनदयाल उपाध्याय

देश आजाद होने के बाद स्वाभाविक रूप से यह सवाल हम सब लोगों के सामने आना चाहिए था कि अब हमारे देश की दिशा क्या होगी? किन्तु सबसे बड़ा आश्चर्य तो यह है कि देश की स्वतंत्रता के बाद भी जितनी गंभीर रूप से इस प्रश्न पर विचार करना चाहिए था, उतना गंभीर रूप से लोगों ने विचार नहीं किया।

अंग्रेजों के शासनकाल में देश में जितने भी आन्दोलन चले और देश की जितनी भी राजनीति थी, उन सबका एक ही लक्ष्य था कि अंग्रेजों को हटाकर हम स्वराज्य प्राप्त करें। स्वराज्य के बाद हमारा रूप क्या होगा? हम किस दिशा में आगे बढ़ेंगे? इसका बहुत कुछ विचार नहीं हुआ था। बहुत कुछ शब्द का मैंने प्रयोग इसलिए किया है कि बिलकुल विचार नहीं हुआ था यह कहना ठीक न होगा। ऐसे लोग थे कि जिन्होंने उस समय भी बहुत-सी बातों पर विचार किया था। स्वयं गांधी जी ने हिन्द स्वराज्य लिखकर उसमें स्वराज्य आने के बाद भारत का चित्र क्या होगा, इस पर अपने विचार रखे थे। उसके पहले लोकमान्य तिलक ने भी गीता रहस्य लिखकर संपूर्ण आंदोलन के पीछे की तात्विक भूमिका क्या होगी, इसका विवेचन किया था। साथ ही उस समय दुनिया में जो भिन्न-भिन्न विचारसरणियां चल रही थी, उनकी भी तुलनात्मक दृष्टि से आलोचना की थी।

इसके अतिरिक्त समय-समय पर कांग्रेस या दूसरे राजनैतिक दलों ने जो प्रस्ताव स्वीकार किये, उनमें भी ये विचार आये थे। किन्तु उन सबका जितना गंभीर अध्ययन होना चाहिए था, उतना उस समय तक नहीं हुआ था। क्योंकि सबके सामने प्रमुख प्रश्न यही था कि पहले अंग्रेजों को निकालें फिर अपने घर का निर्माण कैसे करेंगे, इसका विचार कर लेंगे। इसलिए यदि विचारों के मतभेद भी कहीं थे तो लोगों ने उनको दबा करके रखा था। यहाँ तक कि समाजवाद के आधार पर आगे का भारत बनना चाहिए, इस तरह का विचार करने वाले जो लोग थे, वे कांग्रेस के अन्दर ही एक सोशलिस्ट पार्टी बनाकर काम करते रहे। उसके बाहर निकलकर उन्होंने अलग से कार्य करने का प्रयत्न नहीं किया। क्रान्तिकारी भी अपने-अपने विचारों के अनुसार स्वराज्य के लिए काम करते थे। इसी प्रकार और भी लोग थे। किन्तु प्रमुखता इसी बात की रही कि पहले देश को आजाद कर लिया जाए।

अतः देश आजाद होने के बाद स्वाभाविक रूप से यह सवाल हम सब लोगों के सामने आना चाहिए था कि अब हमारे देश की दिशा क्या होगी?

किन्तु सबसे बड़ा आश्चर्य तो यह है कि देश की स्वतंत्रता के बाद भी जितनी गंभीर रूप से इस प्रश्न पर विचार करना चाहिए था, उतना गंभीर रूप से लोगों ने विचार नहीं किया और आज भी जब इतने वर्ष देश को स्वतन्त्र हुए हो गए हम यह नहीं कह सकते कि कोई दिशा निश्चित हो गयी है।

भारत किधर जाने वाला है?

समय-समय पर कांग्रेस या दूसरे दल के लोगों ने कल्याणकारी राज्य, समाजवाद, उदारमतवाद, आदि का ध्येय अवश्य घोषित किया है। विविध नारे लगाये गये हैं। परन्तु ये जितने नारे लगाने वाले लोग हैं, उनके सामने उन सब विचार धाराओं का नारे से अधिक कोई महत्व नहीं रहता। यह बात मैं इसलिए कह रहा हूं कि इसका मुझे अनुभव है। एक बार एक सज्जन से बातचीत हो रही थी। वह कह रहे थे कि कांग्रेस के विरूद्ध मिल-जुलकर अपने को एक मोर्चा बनाना चाहिए ताकि अच्छी तरह से लड़ सकें। राजनीतिक दृष्टि से समय-समय पर इस प्रकार की नीतियाँ लेकर दल चलते है और इसलिए उनके इस प्रस्ताव में तो कोई अनुचित बात नहीं थी। परन्तु बात करते-करते मैंने सहज में पूछ लिया कि हम लोग मोर्चा तो शायद बना लेंगे परन्तु कुछ थोड़ा बहुत कार्यक्रम लेकर चलें? कौन सा आर्थिक कार्यक्रम लेकर चलें? कौनसा राजनैतिक कार्यक्रम लेकर चलें? इन प्रश्नों पर भी विचार करना चाहिए।

इस पर उन्होंने सहज भाव से कह दिया कि

इसकी कोई चिन्ता करने की आवश्यकता नहीं है, आपको जो पसन्द हो स्वीकार कर लीजिए। हम तो घोर साम्यवादी कार्यक्रम से लेकर बिल्कुल पूंजीवादी कार्यक्रम तक जो आप चाहें उसमें समर्थन कर देंगे। उनको किसी भी कार्यक्रम में कोई आपत्ति नहीं थी। उद्देश्य केवल इतना ही था कि किसी न किसी तरीके से कांग्रेस को हरा देना चाहिए। आज भी बहुत बार लोग कहते हैं कि कम्युनिस्टों तथा बाकी सब लोगों से मिलकर भी कांग्रेस को हरा दिया जाए।

साँप-नेवला एक साथ

केरल में अभी-अभी चुनाव हुए हैं। उसमें कम्युनिस्ट, मुस्लिम लीग, स्वतंत्र पार्टी, संयुक्त सोशलिस्ट पार्टी, विद्रोही कांग्रेस जो केरल कांग्रेस के नाम से आई, क्रान्तिकारी सोशलिस्ट पार्टी आदि जितनी भी पार्टियां हैं, इनमें आपस में भिन्न-भिन्न प्रकार से गठबंधन हुए। इन गठबन्धनों के कारण यह पता नहीं लग सकता था कि इनके कोई राजनीतिक सिद्धान्त, विचार अथवा आदर्श भी हैं या नहीं। विचारों की दृष्टि से यह स्थिति है। कांग्रेस में भी यही बात दिखाई दे रही है। यद्यपि कांग्रेस ने प्रजातन्त्रीय समाजवाद का सिद्धान्त स्वीकार किया है तथापि कांग्रेस के लोग जो बोलते हैं उनमें यही दिखाई देता है कि वहाँ पर एक निश्चित सिद्धान्त निश्चित कार्यक्रम नहीं। घोर कम्युनिस्ट विचारधारा वाले भी कांग्रेस के अन्दर विद्यमान हैं और उस कम्युनिज्म का डटकर विरोध करते हुए पूँजीवादी विचारधारा वाले भी कांग्रेस के अन्दर मौजूद हैं। अहिनकुल योग के अनुसार नकुल और साँप के सहअस्तित्व का कोई जादू का पिटारा हो सकता है तो वह आज की कांग्रेस है।

हमें आत्माभिमुख होना पड़ेगा

इस स्थिति में हम आगे बढ़ सकेंगे या नहीं, इसका हमें विचार करना चाहिए। देश में आज की अनेक समस्याओं की कारण मीमांसा करें तो पता चलेगा कि अपने गन्तव्य और उसकी दिशा का अज्ञान बहुतांश में आज की अव्यवस्था के लिए जिम्मेदार है। यह तो मैं मानता हूं कि हिन्दुस्थान के सभी 45 करोड़ लोग सब प्रश्नों पर अथवा किसी एक प्रश्न पर भी पूर्णतः एक विचार और एक मत नहीं हो सकते। किसी भी देश में यह संभव नहीं है। फिर भी राष्ट्र की एक सामान्य इच्छा नाम की कोई चीज होती है। उसको आधार बनाकर काम किया जाएं तो सर्वमान्य व्यक्ति को लगता है कि मेरे मन के मुताबिक काम हो रहा है। उसमें से विचारों की अधिकतम एकता भी पैदा होती हैं। अक्टूबर-नवम्बर 1962 में कम्युनिस्ट चीन के आक्रमण के समय जनता की अवस्था इस तथ्य का अच्छा उदाहरण है। इस समय देश में एक उत्साह की लहर पैदा हो गई थी। कर्म तथा त्याग दोनों की शक्ति जाग्रत हो गई थी। जनता और सरकार के बीच भिन्न-भिन्न दलों के बीच तथा नेता और जनता के बीच कोई खाई नहीं दिखाई देती थी। यह सब कैसे हुआ? सरकार ने वह नीति अपनाई जो जनता के मन के अनुसार तथा पुरूषार्थ का आह्वान करने वाली थी। फलतः हम एक होकर खड़े हो गए।

समस्याओं का कारण स्व के प्रति दुर्लक्ष्य

आवश्यकता है कि अपने स्व का विचार किया जाए। बिना उसके स्वराज्य का कोई अर्थ नहीं। स्वतंत्रता हमारे विकास और सुख का साधन नहीं बन सकती। जब तक हमें अपनी असलियत का पता नहीं तब तक हमें अपनी शक्तियों का ज्ञान नहीं हो सकता और न उसका विकास ही संभव है। परतन्त्रता में समाज का स्व दब जाता है। इसीलिए राष्ट्र स्वराज्य की कामना करते हैं जिससे वे अपनी प्रकृति और गुणधर्म के अनुसार प्रयत्न करते हुए सुख की अनुभूति कर सकें। प्रकृति बलवती होती है। उसके प्रतिकूल काम करने से अथवा उसकी ओर दुर्लक्ष्य करने से कष्ट होते हैं। प्रकृति का उन्नयन कर उसे संस्कृति बनाया जा सकता है, पर उसकी अवहेलना नहीं कर सकती। आधुनिक मनोविज्ञान बताता है कि किसी प्रकार मानव प्रकृति एवं भावों की अवहेलना से व्यक्ति के जीवन में अनेक रोग पैदा हो जाते हैं। ऐसा व्यक्ति प्रायः उदासीन एवं अनमना रहता है। उसकी कर्मशक्ति क्षीण हो हो जाती है अथवा विकृत होकर विपथ गामिनी बन जाती है। व्यक्ति के समान राष्ट्र भी प्रकृति के प्रतिकूल चलने पर अनेक व्यथाओं का शिकार बनता है। आज भारत की अनेक समस्याओं का यही कारण है।

राजनीति में अवसरवादिता

राष्ट्र का मार्गदर्शन करने वाले तथा राजनीति के क्षेत्र में काम करने वाले अधिकांश व्यक्ति इस प्रश्न की ओर उदासीन है। फलतः भारत की राजनीति, अवसरवादी एवं सिद्धान्तहीन व्यक्तियों का अखाड़ा बन गई है। राजनीतिज्ञों तथा राजनीतिक दलों के न कोई सिद्धान्त एवं आदर्श है और न कोई आचार संहिता। एक दल छोड़कर दूसरी दल में जाने में व्यक्ति को कोई संकोच नहीं होता। दलों के विघटन अथवा विभिन्न दलों की युक्ति भी होती है तो वह किसी तात्विक मतोद अथवा समानता के आधार पर नहीं अपितु उसके मूल में चुनाव और पद ही प्रमुख रूप से रहते हैं। 1937 में जब हाफिज मुहम्मद इब्राहिम मुस्लिम लीग के टिकट पर चुने जाने के बाद कांग्रेस में सम्मिलित हुए तो उन्होंने स्वस्थ राजनीतिक परंपरा के अनुसार विधानसभा से त्याग पत्र देकर पुनः कांग्रेस के टिकट पर चुनाव लड़ा और जीतकर आए। 1948 में जब कांग्रेस से अलग हटकर सोशलिस्ट पार्टी का निर्माण हुआ तब सभी सोशलिस्टों ने, जो विधानमण्डलों के सदस्य थे, त्यागपत्र देकर अपनेअपने क्षेत्र से पुनः चुनाव लड़े। किन्तु उसके बाद किसी ने इस परंपरा का निर्वाह नहीं किया। अब राजनीतिक क्षेत्र में पूर्ण स्वैच्छाचार है। इसी का परिणाम है कि आज भी सभी के विषय में जनता के मन में समान रूप से अनास्था है। ऐसा एक भी व्यक्ति नहीं कि जिसकी आचरणहीनता के विषय में कुछ कहा जाए तो जनता विश्वास न करे। इस स्थिति को बदलना होगा। बिना उसके समाज में व्यवस्था और एकता स्थापित नहीं की जा सकती।

हम किस ओर चलें?

हम किस ओर चले? राष्ट्र के सामने यह प्रश्न है। कुछ लोग कहते हैं कि राष्ट्र के परतन्त्र होने के पूर्व एक हजार वर्ष पहले जहाँ हमने राष्ट्र जीवन का सूत्र छोड़ दिया था वहीं से हम उसे आगे बढ़ाएँ। पर राष्ट्र कोई वस्त्र या पुस्तक के समान निर्जीव वस्तु तो है नहीं जिसे बुनते या पढ़ते समय जहाँ एक बार छोड़ दिया, वहाँ से फिर किसी विशेष अतिथि के बाद उसे आगे बढ़ाया जा सके। फिर यह कहना भी युक्ति संगत नहीं होगा कि परतन्त्रता के साथ एक हजार वर्ष पूर्व हमारे जीवन का सूत्र एकदम टूट गया है तथा तब से अब तक हम पूर्णतया निष्क्रिय अथवा गतिहीन रहे हैं। बदली हुई परिस्थितियों में अपने जीवन को बनाये रखने तथा स्वतंत्रता के लिए संघर्ष करने में अपने जीवन को अभिव्यक्त किया। हमारे जीवन का प्रवाह अवरूद्ध नहीं अपितु आगे बढ़ता गया। गंगा की धारा की लौटाने का प्रयत्न बुद्धिमानी नहीं होगी। बनारस की गंगा हरिद्वार के समान शीतल एवं स्वच्छ चाहे न हो, परन्तु उतनी ही पवित्र एवं मुक्ति-दायिनी है। उसमें मिलने वाले जिन नदी-नालों को उसने आत्मसात कर लिया है उनकी कलुषा तथा गन्दगी की ओर ध्यान देने की आवश्यकता नहीं। वे गंगा में मिलकर गंगा ही बन गये हैं। अब तो गंगा के प्रवाह को आगे ही बढ़ाना होगा।

यदि संपूर्ण स्थिति इतनी ही होती तब तो कोई कठिनाई नहीं थी। विश्व में हम अकेले ही तो नहीं है। दूसरे राष्ट्र भी है। उन्होंने पिछले एक हजार वर्ष में अभूतपूर्व उन्नति की है। हमारा सपूर्ण ध्यान तो

प्रजातंत्र ने यद्यपि प्रत्येक नागरिक को वोट का अधिकार दिया, किन्तु जिन लोगों ने प्रजातंत्र के संघर्ष का नेतृत्व किया था। शक्ति उन्हीं के हाथों में रही।

अपनी स्वतंत्रता के लिए लड़ने तथा अपनी रक्षा के प्रयत्नों में ही लगा रहा है। विश्व की इस प्रगति में हम सहभागी नहीं हो सके। अब जब हम स्वतंत्र हो गये हैं तो क्या हमारा यह कर्तव्य नहीं हो जाता कि हम अपनी इस कमी को शीघ्राति-शीघ्र पूरा करके विश्व के इन प्रगट देशों के साथ खड़े हो जाएँ? यहाँ तक तो, मैं समझता हूं, मतभेद की कोई गुंजाइश नहीं है।

स्वदेशी की भावना सर्वव्यापी हो

समस्या तब पैदा होती है, जब हम पश्चिम की प्रगति के कारणों तथा परिणामों अथवा वास्तविकता एवं भासवान के संबंध में ठीक-ठीक निर्णय नहीं कर पाते। यह कठिनाई तब तक बढ़ जाती है जब हम यह देखते हैं कि इन प्रगत देशों में से ही एक ने हमारे ऊपर डेढ़ सौ वर्षों तक राज्य किया तथा अपने राज्यकाल में उसने ऐसे अनेक उपाय किये जिससे हमारे अन्दर अपने सबन्ध में तिरस्कार तथा उनके विषय में आदर का भाव पैदा हो जाए। पश्चिम के ज्ञानविज्ञान के साथ ही पश्चिमी देशों रहन सहन, बोल चाल, खान-पान आदि के तरीके भी इस देश में आये। भौतिक विज्ञान ही नहीं अपितु, नीतिशास्त्र, राज्यव्यवस्था, अर्थनीति तथा समाज धारणा के क्षेत्र में भी इन देशों के मानदण्ड हमारे मानक बने गये। आज भारत के शिक्षित वर्ग के जीवन मूल्यों पर पश्चिम का यह प्रभाव स्पष्ट दिखायी देता है। हमें निर्णय करना पड़ेगा कि यह प्रभाव अच्छा है या बुरा। जब तक अंग्रेज थे तब तक तो हम स्वदेशी की भावना से अंग्रेजियत को दूर रखने में ही गौरव समझते थे, किन्तु अब जब अंग्रेज चला गया है तब अंग्रेजियत पश्चिम की प्रगति का द्योतक एवं माध्यम बनकर अनुकरण की वस्तु बन गयी है। यदि सत्य है तो संकुचित के भाव को आड़े लाकर राष्ट्र की प्रगति में बाधा डालना ठीक नहीं होगा। किन्तु इसके विपरीत पाश्चात्य जीवन मूल्यों और विज्ञान की प्रगति को यदि अलग किया जा सकता है तो अंग्रेजियत के मोह का परित्याग करना ही हमारे लिए श्रेयस्कर होगा। पर कुछ लोग ऐसे भी है जो पाश्चात्य राजनीति एवं अर्थनीति की दिशा को ही प्रगति की दिशा समझते हैं और इसलिए भारत पर वहाँ की स्थिति का प्रक्षेपण करना चाहते हैं। अतः भारत की भावी दिशा का निर्णय करने से पूर्व यह उचित होगा कि हम पश्चिम की राजनीति के वैचारिक अधिष्ठान तथा उनकी वर्तमान पहेली का विचार कर लें।

यूरोप में राष्ट्रों का उदय

जिन विचारधाराओं ने यूरोपीय राजनीति एवं जीवन को विशेषतः प्रभावित किया है उनमें राष्ट्रवाद, प्रजातंत्र तथा समाजवाद की प्रमुख रूप से गणना की जा सकती है। इसके साथ ही विश्व एकता तथा शांति का स्वप्न देखने वाले भी वहाँ हुए है और उस दिशा में भी कुछ प्रयत्न किये जा रहे हैं।

इन विचारों में राष्ट्रवाद सबसे पुराना तथा बलशाली है। रोम के साम्राज्य के पतन के बाद तथा रोमन कैथोलिक चर्च के प्रति विद्रोह अथवा उसके प्रभाव के कमी के कारण यूरोप में राष्ट्रों का उदय हुआ। यूरोप का पिछला एक हजार वर्ष का इतिहास इन राष्ट्रों के आविर्भाव तथा पारस्परिक संघर्ष का इतिहास है। इन राष्ट्रों के आविर्भाव तथा पारस्परिक संघर्ष इतिहास है। इन राष्ट्रों ने यूरोप महाद्वीप से बाहर जाकर अपने उपनिवेश बनाये तथा दूसरे स्वतंत्र देशों को गुलाम बनाया। राष्ट्रवाद के उदय के कारण राष्ट्र और राज्य की एकता की प्रवृत्ति भी बढ़ी तथा राष्ट्रीय राज्य का यूरोप में उदय हुआ। साथ ही रोमन कैथोलिक चर्च के केन्द्रीय भाव में कमी होकर या तो राष्ट्रीय चर्च का निर्माण हुआ या मजहब का। मजहबी गुरुओं का राजनीति में कोई विशेष स्थान नहीं रहा। सेक्युलर स्टेट की कल्पना का इस प्रकार जन्म हुआ।

यूरोप में प्रजातंत्र का जन्म

दूसरी क्रांतिकारी कल्पना प्रजातंत्र की है जिसका यूरोप की राजनीति पर महत्वपूर्ण प्रभाव हुआ है। प्रारंभ में तो जितने राष्ट्र बने उनमें राजा ही शासनकर्ता रहा, किन्तु राजा की निरंकुशता के विरूद्ध जनता में भी धीरे धीरे जागरण हुआ। औद्योगिक क्रांति के कारण तथा अन्तर्राष्ट्रीय व्यापार के परिणाम स्वरूप सभी देशों में एक वैश्य वर्ग का प्रादुर्भाव हुआ। स्वभावतः इनका पुराने सामन्तों तथा राजाओं से संघर्ष आया। इस संघर्ष ने प्रजातंत्र की तात्विक भूमिका ग्रहण की। यूनान के नगर गणराज्यों से इस विचार का उद्गम ढूंढा गया। प्रत्येक नागरिक की समानता, बन्धुता और स्वतंत्रता के आदर्श के सहारे जनसाधारण को इस तत्व के प्रति आकृष्ट किया गया। फ्रांस में बड़ी भारी राज्यक्रांति हुई। इंग्लैण्ड में भी समय-समय पर आन्दोलन हुए। प्रजातंत्र की जनपथ पर पकड़ हुई। राजवंश या तो समाप्त कर दिये गये अथवा उनके अधिकार मर्यादित कर वैधानिक राज्यपद्धति की नींव डाली गई। आज प्रजातंत्र यूरोप की मान्य पद्धति है। जिन्होंने प्रजातंत्र की अवहेलना की वे भी प्रजातंत्र के प्रति निष्ठा व्यक्त करने में कमी नहीं करते। हिटलर, मुसोलिनी तथा स्टालिन जैसे तानशाहों ने भी प्रजातंत्र को अमान्य नहीं किया।

व्यक्ति का शोषण होता रहा

प्रजातंत्र ने यद्यपि प्रत्येक नागरिक को वोट का अधिकार दिया, किन्तु जिन लोगों ने प्रजातंत्र के संघर्ष का नेतृत्व किया था। शक्ति उन्हीं के हाथों में रही। औद्योगिक क्रान्ति के परिणाम स्वरूप उत्पादन की नई पद्धति पर विश्वास हो गया था। स्वतंत्र रहकर घर में काम करने वाला मजदूर अब कारखानेदार का नौकर बनकर काम करने लगा था। अपना गाँव छोड़कर वह नगरों में आ बसा था। वहां उसके आवास की व्यवस्था बहुत ही अधूरी थी। कारखाने में जिस ढंग से काम होता था, उसके कोई नियम नहीं थे। मजदूर असंगठित एवं दुर्बल था। वह शोषण, अन्याय और उत्पीड़न का शिकार बन गया था। राज्य की शक्ति जिनके हाथों में थी, वे भी उसी वर्ग में से थे, जो उनका शोषण कर रहे थे। अतः राज्य से कोई भी आशा नहीं थी।

इस अन्यायपूर्ण अवस्था के विरूद्ध विद्रोह तथा स्थिति में सुधार की भावना लेकर कई महापुरूष खड़े हुए। उन्होंने अपने आपको समाजवादी कहा। कार्ल मार्क्स भी इन समाजवादियों में से एक है। उसने विद्यमान अन्याय का विरोध करने के प्रयत्न में अर्थव्यवस्था तथा इतिहास का अध्ययन कर एक विश्लेषण प्रस्तुत किया। कार्ल मार्क्स की विवेचना के बाद समाजवाद एक वैज्ञानिक आधार पर खड़ा हो गया। बाद में समाजवादियों ने मार्क्स को माना हो या ना, किन्तु उनके विचारों पर उसकी छाप अवश्य है। ▪

(पं. दीनदयाल उपाध्याय लिखित एकात्म मानववाद पुस्तक से साभार)

▶ मुख्यमंत्री श्री शिवराज सिंह चौहान जी ने इंदौर में गौरव दिवस का शुभारंभ दीप जलाकर किया।

▶ मुख्यमंत्री श्री शिवराज सिंह चौहान एवं भाजपा अध्यक्ष श्री विष्णुदत्त शर्मा जी ने जानापाव में भगवान परशुराम लोक के भूमि-पूजन कार्यक्रम में दीप प्रज्ज्वलित किया।

▶ प्रदेश संगठन महामंत्री श्री हितानंद जी ने चाँचौड़ा विधानसभा क्षेत्र की भाजपा संचालन समिति की बैठक को संबोधित किया।

▶ भाजपा अध्यक्ष श्री विष्णुदत्त शर्मा जी ने महाजनसंपर्क अभियान के अंतर्गत आयोजित लाभार्थी सम्मेलन को संबोधित किया।

▶ भाजपा सोशल मीडिया एवं आईटी विभाग की प्रदेश स्तरीय बैठक का शुभारंभ दीप प्रज्जवलन कर हुआ।

▶ प्रदेश प्रभारी श्री मुरलीधर राव, अध्यक्ष श्री विष्णुदत्त शर्मा जी ने चुनाव की दृष्टि से विभिन्न टोलियों की बैठक को संबोधित किया।

▶ प्रदेश संगठन महामंत्री श्री हितानंद जी ने विस्तारित जिला पदाधिकारियों की बैठक को सम्बोधित किया।

▶ मुख्यमंत्री श्री शिवराज सिंह चौहान ने सलकनपुर में देवी लोक महोत्सव में शामिल होने से पहले मां विजयासन की पूजा-अर्चना की।